

॥ श्रीजिनायनमः ॥

अथ क्रियाकोष भाषा छंद बंद प्रारम्भः

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

समशरणलक्ष्मी साहज, वर्धमान जिनराय । नमो विबुध वंदित चरण, भविजन को सुखाय ॥ १ ॥

जाके ग्यान प्रकाशमें, लोक अतंत समाव । जिम सुदुर्द्विग गायबुर, यथानीर दरसाव ॥ २ ॥

बुधमनाथ जिन आदिदे, पारशलों तेईस । मन, वच, काया, भाव धर, बंदो कर धर सीस ॥ ३ ॥

नमो सकल परमात्मा, रहित अठारा दोष । ब्रियालीस गुण आदिदे, हैं अनंत गुण कोष ॥ ४ ॥

बसुगुण समकित आदि जुत, अणमों सिद्ध महंत । काल अनंतानंत थिति, लोक शिखर निवसंत ॥ ५ ॥

आचारज, उवभाय, गुरु, साधु त्रिविध निर्ग्रथ । भवि बनवासी जननिको, दरसावैं शिवपंथ ॥ ६ ॥

जिनबाणी दिवध्वनि खिरी, द्वादशांग मय सोय । ता सरस्वतिकों नमंतहूं, मन, वच, क्रम जिन सोय ॥ ७ ॥

देव, सुगुरु, श्रुत कों नमूं, जेपन किरया सार । श्रावक की बरण कळं, संक्षेपहि निरधार ॥ ८ ॥

चौपाई

जंबदीप दीपसिर जान । मेरु सुदरशन ग्रह्य बलान ॥ ताका दक्षिण दिस शुभलसै । भरतचैत्र अति सुवसही वसै ॥ ९ ॥

तामै मगध देश परधान । नगर मंडब द्रोणपुर थान ॥ वन उपवन जुत शोभा लहै । ताको बरणन कवि कोकहै ॥ १० ॥

राजगृही नगरी अति वनी । इंद्रपुरी मानें दिव तनी ॥ जिनवर भवन शोभ अतिलहै । तस उपमा बरणन कोकहै ॥ ११ ॥

श्रावक उत्सव सहित अनेक । जिन पूजैं अति धर सुविवेक ॥ मंदिर पंकाति शोभै भली । गीतादिक पूरवैं मन रली ॥ १२ ॥

धरमी ज्ञान तामें बहु वसै । दान चार दे विजुक्त लसै ॥ बहू फेर तासके कौट । गोपुर जुत अति बनो निघोट ॥ १३ ॥

बाड़ी बगम विराजै हरे । सधन दाल दाम्युं दुमफुरे ॥ और विविधके पादपजिते । फल फुल्लित दीसत है तिते ॥ १४ ॥
 तिह नगरीको भूप महंत । श्रेणिक नाम महा गुणवंत ॥ चायक समकित धारी सोय । तासम भूप अवर नहिं कोय ॥ १५ ॥
 मंडलीक भूपति सिरदार । बहुत तासु सोवै दरवार ॥ परजा पालनको अति दत्त । नीतवान धरमी परतत्त ॥ १६ ॥
 तास चेलना है पटनार । रूपवंत रंभा उनहार ॥ समकित द्रष्टिसुअति गुणवती । पतिव्रती सीता सम सता ॥ १७ ॥
 देव, शास्त्र, गुरुभक्ति धरेय । वसुविध नितसो पूज करेय ॥ विधिसों देय सुपात्रेदान । जिम चहुंविध भापो भगवान ॥ १८ ॥
 हीन दीन जन करुणा करी । पोखै नितप्रति तासुंदरी ॥ भूपति चित मनुहारी सोय । तासम जिया अवर नहिं कोय ॥ १९ ॥
 दंपति सुख नानाविधजिते । पुन्य उदै भोगतहैं तिते ॥ जिम सुरपति इंद्रानी जान । तिम श्रेणिक चेलना बखान ॥ २० ॥
 महा मंडलेवर को राज । आसन चामर कतर समाज ॥ भूप चिहन धरि सभा जुराय । बैठो अग सुनिये जोधाय ॥ २१ ॥
 ढाल चाल ॥

इक दिवस मध्य वन मांही । अमते, वनपालक आंहीं ॥ निज संवंधी परजाय । जिय वैर विरुद्ध जुथाय ॥ २२ ॥
 ते एक क्षेत्रके मांही । ढिग वंटे केल करांही ॥ घोटक महिप इक जागा । बैठे धरि चित्त अनुरागा ॥ २३ ॥
 मूसाको हरष चिलावै । हियमें गहि प्रीत खिलावै ॥ अहि नकुल दुहुं इकठांही । गैत्री पन अधिक करांही ॥ २४ ॥
 इत्यादिक जीव अनेरा । निज वैर छांढि न्है भेरा ॥ बैठे लखिकै वनपाला । अचरज चित्त धरि शाला ॥ २५ ॥
 मनमाहि विचारै एसे । एह अशुभ कीथो खेमे ॥ इम चिंतत अमण करांही । वनपालक वनके मांही ॥ २६ ॥
 विपुलाचल गिरके ऊपर । धरणीश सुरेश महीपर ॥ बहु विधजुत देव अपारा । जयजय वंच करत लचारा ॥ २७ ॥
 दसहंदिश पूरित धाई । अपने चित अति हरपाई ॥ अंतिम तीर्थकर एवा । श्री वर्धमान जिनदेवा ॥ २८ ॥
 समवादि शरणलखि हरपित । धारो विचार इम चिंतित ॥ इह परस्पर जु चिरकाला । परजाय वैर दरहाला ॥ २९ ॥
 सब मिल बैठे इकठामा । देखे में ऐ अभिरामा ॥ इस महा पुरुषकों जानी । माहातम मनमें आनी ॥ ३० ॥

सर्वैया इकतीसा ॥

मृगीस्रुत बुद्धिते खिलावै सिंहवाल कों, वधेरकों सुपुत्र गाय सुत जान परसै ।

इंस सूनकों बिलाव हितधारकै खिलाव मोरनीं सरप परसत मन हरवै ॥

इन सब जंतुनको जन्मजात वैर सदा, भए मद गलित लखारो दोष जरसै

सम भावरूप भए कलुष प्रसमिगए, त्रीण मोह बर्धमान स्वामी सभा दरवै ॥ ३१ ॥

दोहा ।

जयजय रवको कान छुन, बन पालक तत्काल । षटरितुके फल फूलखे, कर धर भेट रसाल ॥ ३२ ॥

चल्यो नृपति दरवारको, मनमें धरत उखाव । जा पहुंचे तिसहीधरा, जहँवैठो नरराव ॥ ३३ ॥

सिंहासन नग जड़ित पर, तिष्ठे श्री भूपाल । महामंडलेश्वर करहि, फलदीन बनपाल ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥

वनपति भाषै छुनिहो देव । तुम शुभ पुन्य उदयते ऐव ॥ विपुलाचल पर सनमति जान । समोशरन आयो भगवान् ॥ ३५ ॥

ऐसै छुन आसनतें राय । उठतहि दिशि सनमुख सो जाय ॥ सप्त पंड अष्टांग नवाय । नमस्कार कीनो हरषाय ॥ ३६ ॥

परम प्रीति पूर्वक मन आन । जिन आगमको उत्सव ठान ॥ भूषण बसन भूपतिहिं जिते । बनपालक को दीने तिते ॥ ३७ ॥

नै खुशाल बनपालक जबै । मन मांही इमंचितवै तवै ॥ इतनेसौं कर रीते जान । कबहु न मिलिये सांची मान ॥ ३८ ॥

देव थान अरु राज दुवार । विद्यागुरु निजभिन्न विचार ॥ निमित्त वैद्य जोतिषी जान । फल दीये फल प्रापति मान ॥ ३९ ॥

आनंद भेरि नगरमें थाय । सुन सुरवासी जन हरषाय ॥ नगर लोक परियन जन सबै । नृपशुणिक लेचाल्यो तवै ॥ ४० ॥

विपुलाचल ऊपर शुभस्थान । समोशरण तिष्ठे भगवान् ॥ पहुंचो भूपति हरष लहाय । जिनपद नभियुति करहि वनाय ॥ ४१ ॥

नयनजुगुल सुफसफल जुययो । चरणकमल तुम देखत भयो ॥ भोतिहुं लोक तिलकममत्राज । प्रतिभास्यो ऐसो महाराज ॥

इह संसार जलधि यो जान । आयुरहो इकचलुक मगान ॥ जैस्वामी त्रिभुवन नाथ । कृपाकरो मोहि जान अनाथ ॥ ४३ ॥

मैं अनादि भटको संसार । अमृत कंचहुं लंभायो पार ॥ चहुंगति माहि लहेदुल जिते ॥ ग्यालं माहि दरशतहै लिते ॥ ४४ ॥
 तातें चरण आइयो सेव । सुभदुखें दूरकरो जगदेव ॥ जैजै रहित अठारा दोप । जैजै भविजन दायक मोष ॥ ४५ ॥
 जैजै छियालीस गुणपूर । जैमिथ्याबम नासन सूर ॥ जैजैकेवल ज्ञान प्रकाश । लोकांलोक करनप्रतिभाश ॥ ४६ ॥
 जै भवि छुदुद विकासन चंद ॥ जैजै सेवितं मुनिवर बृंद ॥ जैजै निरावाध भनवात्र । भगतिवंत दायक शिवथान ॥ ४७ ॥
 जैजै निराभरण जगदीश । जैजै वंदित त्रिभुवन ईश ॥ ज्ञानगम्य गुण लियो अपार । जैजै रत्नत्रय भंडार ॥ ४८ ॥
 जैजै छखससुद्व गंभीर । करम शत्रु नाशन वरवीर ॥ आजहि सीस सफल मोभयो । जव जिन तुमचरणन को नयो ॥ ४९ ॥
 नेत्रयुगल आनंदेजवै । पाद कमल तुमदेखे तवै ॥ आनन सफल भयो सुन धुनी । रसना सफल अवे युतिभनी ॥ ५० ॥
 ध्यान धरतहिरदे धन भयो । करयुगं सफल पूजते थयो ॥ करपयान तुमलों आइयो । पदयुग सफलपनो पाइयो ॥ ५१ ॥
 उत्तम वार आज जानियो । चाखुर धन्य इहै मानियो ॥ जनम धन्य अचही मोभयो । पाप कलंक सवे भगिगयो ॥ ५२ ॥
 भो करुणाकर जिनवर देव । भवभवमें पाऊं तुम सेव ॥ जवलों शिवपाऊं जगनाथ । तवलों पकरो मेरे हाथ ॥ ५३ ॥
 इत्यादिक थुतिविविध प्रकार । गद्यपद्य सतसहस अपार ॥ मुनिगोतम गणधर नमिपाय । अवरसकल मुनिकों सिरनाय ॥
 जिकेअर्जिका सभा भभार । श्रावक जनहि जु बुद्धि विचार ॥ यथायोग्य सवको नृप कही । फुनिनर कोठै वैठो सही ॥ ५५ ॥
 जाके देव भगति उत्तक्रिष्ट । तासों ताके गुरुको इष्ट ॥ जिन भाषी वाणी सरधान । महा विवेकी अति परधान ॥ ५६ ॥
 तास महातपको अधिकार । अरुताके गुणको निरधार ॥ वरणन कोकवि समरथ नाहि । बुधजन जानहु निजचितमाहि ॥
 ता पीछें अत्रसरको पाय । गौतमप्रतिनृप प्रश्न कराय ॥ देशत्रती श्रावककी जान । त्रेपन क्रिया कहूं बखान ॥ ५८ ॥

दोहा ।

शोनहारतिथेश मुन, इम भाषे भगवंत । त्रेपन किरया दुभभलें, कहूं विगेष विरतंत ॥ ५९ ॥
 इह त्रेपन किरया थकी, छुरा भक्तिखल थाय । भविजन मन, वच, कायगुथ, पालहु चित हरपाय ॥ ६० ॥

त्रेपन क्रिया नाम ॥

उक्तं च गथा ॥ गुणवयतवसमपडिमा दानं जल गालं च अणुच्छमिषं ॥ दंशयथायाण चरितं किरियते वयासावया भणिया ॥
 ॥ सर्वथा इकतीसा ॥ मूल गुण आठ अणुब्रत पंचपरकार, शिक्षाब्रत चार तीन गुणब्रत जानिए । तपविधि
 धारह और एक सम्यग्भाव ग्यास, प्रतिमा विशेष चार भेद दान मानिए ॥ एक जल गालण अणुथमियएकविधि, दृगग्यान
 चरण त्रिभेद मन आनिए । सकल क्रिया को जोर त्रेपन जिनेश कहे, अब याको कथनं प्रत्येकतें बखानिए ॥ ६२ ॥

आठ मूलगुण चौपाई ॥

इस त्रेपन किरियामें जान । प्रथम मूलगुण आठ बखान ॥ पीपर, बर, ऊंवर फलतीन । पाकर फलरुकटुंबरहीन ॥ ६३ ॥
 मद्यमांसं मधुतीनमकार । इन आठोंको करपरिहार ॥ अतीचारजुततजअणुचार ! आठमूलगुणधारीसार ॥ ६४ ॥
 त्रसअनेक उपजैइनमाहि । जिनभाष्योकछुसंशयनांहि ॥ अरुजे है वाईस अभ्यक्त । इनको दोषलगैपरतक्त ॥ ६५ ॥

अथवाईस अभक्तदोष वर्णन चौपाई ॥

बोरा नाम गडालख जान । अनछाना जलकोबंधान ॥ घोरवरकौ विदल कहंत । खातां पंचेद्री उपजंत ॥ ६६ ॥
 निशि भोजन खाये जोरात । अरुवासी भषिए परधात ॥ बहुबीजा जामें कण घणा । कहिए प्रगट तिजारा तथा ॥ ६७ ॥
 जिहिं फल बीजनकै घरनाहि । सो फल बहुबीजो कहुबाहि ॥ वैगण महापाप कोमूर । जैखाबैं तेपापी क्रूर ॥ ६८ ॥
 संघार्यो की विधि सुनएह । जिस जिनभारग भाषीजेह ॥ राई लूण आदि बहुदुदर्व । फल फूलादिकमें धरसर्व ॥ ६९ ॥
 नांवे तेलमांहि जैसही । नाम अथाणौ तासौ कही ॥ तामैं उपजे जीव अपार । जिन्हा लंपट स्वायगंबार ॥ ७० ॥
 पाप धर्म नहिजाने भेद । ता बसि नरक लहै बहुभेद ॥ नींबू लूण मांहि साधिये । वाहिरा बही अरु राधिए ॥ ७१ ॥
 लूण वाखि जलमें फलभार । कैराबिक जोखाय संवार ॥ उपजै जीव तासमें घणै । कविं तक्ष पाप कहलौ भणै ॥ ७२ ॥
 भरजादा बीतै पकवान । सो लखि संघार्यो मतिमान ॥ त्याग करत नहिं ढीलकरैहु । मनवचक्रम जिनवचहि फलेहु ॥ ७३ ॥

जो मरजादा की विधिधार । भाष्यो जिन आगम अनुसार ॥ जिहमें जलसरदी नहर है । तिस मरजादा लखि भवि है ॥ ७४ ॥
 सीतकाल माहि दिनतीस । पन्द्रह शीषम विस्वावीस ॥ बरषारित्तु भाषे दिनसात । यें सुखियो जिन बाणी आत ॥ ७५ ॥

उक्त चगाथा ।

हीमंतेतीसदिशा । गियहेपणसरदिशाणिकवणं ॥ वासासुयसत्तदिशा । इयभणियंस्वयजंगेहिं ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥

तल्यीतेल घृतमें फकवान । मीठे मिलियो नै जोरान ॥ अथवा अन्नतयोही होय । जल सरदी तामैकड्डु जोय ॥ ७७ ॥
 आठपहर मरज्याद बखान । पावें संधाया समय जान ॥ भुजिया वड़ाकचौरी युवा । मालयुवा घृततल जुहुवा ॥ ७८ ॥
 जुमक बड़िलूचई जान । सीरो लापसी पुरी बखान ॥ कीएपीछें सांजलो स्वाहिं । रातवसै तिन राखे नाहिं ॥ ७९ ॥
 इनमें उपजे जीवअनेक । तिनही तजो धारविवेक ॥ तरकारी पाटो षी चड़ी । इन मरजाद सुसोला घड़ी ॥ ८० ॥
 रोटी प्रात थकीलों सांज । खइये भवि मरजादा मांज ॥ पीठें सीला वासीबोष । तजो भव्य जे शुभ वृष पोष ॥ ८१ ॥

बंदचाल ॥

कते नर ऐसे भाषें । हम नही अथाणो चापें ॥ कैरी नौबू के माही । नाचा विध वस्तु मिलाही ॥ ८२ ॥
 सरसों कोतेल मंगावें । सब लेकर अगनि चढ़ावें ॥ ल्योजीलस नाम कहई । जीभ्या लंपट अधिकाई ॥ ८३ ॥
 ताको निरदूषण भाषै । निरबुद्धी बहु दिन राखै ॥ ताके अथको नहीं पारा । नुनिये कछुइक निरधार ॥ ८४ ॥
 सबविधि छोड़ी नहीं जाही । खाइये तत्काल कराही ॥ अथवा सबेरलों सांजे । भखिये चहुंपहर हि मांजे ॥ ८५ ॥
 पाखे अथाणा के दोषा । जानो त्रसजीवनि कोपा ॥ अथाणा को जो त्यागी । याकों छोड़ै वडभागी ॥ ८६ ॥

दोहा ।

किसनसिंध विनती करै, सुनो महा भतिमान । याहि तजै सुख परम लहि, भुंजै दुख परधान ॥ ८७ ॥

चौपाई-पंचवदंधरको फल त्याग । करइ पुरुष सोई वडभाग ॥ अरु अजाणफलदोष अपार । मांस दोष खायें अधिकार ८८
 कन्दमूल में जीव अन्त ईसु अत्रभाग लखि संत । माटी माहिं असंखित जीव । भविजन तजिये ताहिसदीव ८९

मुहरोआफू आदिक और । खाएभाए तजै तिहि ठौर ॥ जिहि आहारकर जो मरजाय । सोऊ विषदूषण को थाय ॥
 आमिष महा पापको मूर । जीवघाततें उपजोकर ॥ मन बच काय तजै इह सदा । सुरशिव सुखपावै जिनवदा ६०
 मधुमाखी उच्छिष्ट अपार । जीवअनन्त तासनिरधार ॥ ताको खावैधीवर भील । सोई हीननर पापकुशील ६१
 संतपुरुष नहिं भेटैं वाहि । एक कणतें धरम नसाहिं ॥ लूय्यो दोष महा अधिकार । ताहिभखे नहिं भविषुखकार ६२
 मदिरा पान किए बेहाल । मात भगनि तियसम तिहिकाल ॥ मादिक बस्तु अंगिदेआदि । खातजमारो ताको वादि ६३
 फल अतितुच्छदन्त तलिंदेय । ताको दूषण अधिककरेय ॥ पालो राति जमावेकोय । अरुताको खावैनुधिसोय ६४
 तामें पडै अधिक त्रस जीव । भविजन छाडो ताहि सदीम ॥ केला आंब पालमे देह । नीबू अंगदिक फल गनिलेह ६६
 जाके खाये दोष अपार । बुधजन तजै न लावैवार ॥ ए बावीस अभ्रज जिनदेव । भाषै सो भविजन सुनियेव ६७
 इनहित्यागकर मन बच काय । ज्यूसुर शिवसुख निहवै थाय ॥ फूलोथान अवर सबफूल । त्रसजीवनको जानें मूल ६८
 साकपत्र सब निंद बखान । कुंथादिक करिभरियाजान ॥ मास त्यजनबत राखोचै ॥ तो इनसबको कबहु न गहै ६९

वेदल वर्णन

भोजन विदलतलीं विधि सुनो । जिनवर भाषोनिहचैपुनो ॥ दोयपकार विदलकी रीति । सो भविजन आनो धर भीत १००
 प्रथम आकाष्टलीं विधि एह । श्रावक होष तजै धरनेह ॥ सुनहु आकाष्टलीं विधि जान । मू ग मटर अरहर अरु धान १
 मोठ मसूर उड़द अरु चणा । चौला कुलथ आदि गिन घणा ॥ इतने नाज तणी है दाल । उपजै बेलि यकीसानाल २ ॥
 खरबूजा काकडी तोरई । दींडसी पेठो पलवल लई ॥ सेम करेला खीरा तणा । बीजा विधि फल कीजे घणा ३ ॥
 तिनको दालथकी मिलवाय । दही छाछिं सो विदल कहाय ॥ मुखमे देत लाल मिलजाय । उतरत गलै पंचेद्री थाय ४
 नाज बेलि तो उपजै जोय । सो आकाष्ट गनियो भवि लीय ॥ छाब तणो फल बीजह जान । तिनकी दाल होय सो मान ५
 छाब दही मिल विदलहवन्त । यों निहचै भाष्यो भगवन्त ॥ चारोली पिसता वादाम । बोल्या बीज सांगरी नाम ६
 इत्यादिक तरु फल केमाहिं । बीज दुफारा मीजी थाहि ॥ छाब दही सों मेलिरुलाय । विदल दोप तामें उप जाय ७

गलै उतरता मिलिहै लाल । पंचेद्री उपलै तत्काल ॥ ऐसो दोष जान भविजीव । तजिए भोजन विदल सदीव ८ ॥
 सांगर पिठो रतोरई तणा । मूरख करै राइता घणा ॥ तिहका अघ को पार न कोय । जो खाहै सो पापी होय ९ ॥
 तजिहै विदल दोष परकार । सो निहचै श्रावक निरधार ॥ ककड़ी पेठो अरु खेला । इनको बाछ दही में थरा १० ॥
 राई लूण मेल जिहि माहि । करे रायता मूरख खाहि ॥ राई लूण परै निरधार । उपलै जीव सिताब अपार ११ ॥
 राई लूण मिलो जो द्रव्य । ताहि सरवथा तजिहै भव्य ॥ कपई बांध दही को धरै । मीठो मेल शिखरणी करै १२ ॥
 खारिख दाख घोल दधिमाहि । मीठो मेल रायता खाहि ॥ मीठो जव दधिमाहि मिलाहि । अन्वसु दूरत तस उपजाहि १३ ॥
 यामें मीठा जुत जो दही । अन्तर सुदूर्त्त भाहे सही ॥ खावो भविजन को हित दाय । पीबै सन्मूर्दन उपजाय १४ ॥

॥ उत्तंचयाथा ॥

इरखदुदहीसंजुचं भवतिसमुच्छिमाजीवा । अन्तो सुदूत्तमभ्रमे तह्माभरतिजिणयाहो १५ ॥

॥ दोहा ॥

काजी कर जेवात हैं, जिह्वा लंपट मूढ़ । पाप भेद जाने नहीं, रहित विवेक अगूढ़ ।

अब ताफी विधि कहत हों, सुणी जिनांग जेह । ताहि सुणत भविजन तजो मनका सकल संदेह ॥ १७ ॥

चौपाई

तातो जल अरु बाछ मिलाय । तामें सौले लूण डराय ॥ भुजिया बड़ा नाख तिहि माहिं । खावै बुद्धिहीन सो ताहि १८ ॥
 प्रथम बाछ काजी के जाहि । तातो जल तामाहि पराय ॥ अबर नाज को कारन थाय । उपलै जीव न पार लहाय १९ ॥
 याकी बरयादा अति हीण । तातें दुरत तजो परबीण ॥ ठंडी बाछ तास में जाण । तातें विदलहुं दोष बखाण २० ॥
 प्रथमदी बाछ ऊष्ण अति करै । अरु वैसेही जल कर धरै ॥ अब दोऊ अति सीतल थाय । तब दुहुंउनको देय मिलाय २१ ॥
 अग्नि चढ़ाय गरम फिरि करै । जव बह सीतलताको धरै ॥ भुजियादिक तामें दे डार । तसु मर्यादाको इम पार २२ ॥

चञ्चण्दीविणिक्वह अष्टहतिरिणि भणति दह । चीरिर्दीजीवडा चारह पंच भणति । २३ ॥

छन्दचालकी ढाल ।

ज्वचार महरत मांही । एकंद्री जीव उपजाही । चारा घटिका जब जाये । वे इन्दी तामें थाये २४ ॥
 बीते तवही दुय जामा । तव होवें तेइन्द्री धामा ॥ दुय अर्थपहर गति जान्ती । उपजै चञ्च हन्दी प्राणी २५ ॥
 गमिया दश दाय महरत । पंचद्री जिय करि पूरत ॥ हँहै नहिं ससै आणी । यां भायै जिनवर वाणी २६ ॥
 बुध जन ऐसो लखि दोषा । जिय तवक्षण अथ को कोषा ॥ कोई एँसे कहिवे चाही । खाये विन जन्म गवाही २७ ॥
 मयादि न सधि है मूला । तजिये है ब्रुत अनुकूला । खाय को पाप अपारा । छोड़ो शुभ गति है सारा २८ ॥

सर्वया

मद सुहै इह कुंजिय भेद गहै मनि खेद धरो विकलाई । खात सवाद लहै अहलाद महा उनमादरु लंपटताई ॥
 पातक जार महा दुख चार सहै लखि ऐसिय भय्य तजाई , जे मतिवन्त विवेकी सन्त महा गुणवन्त जिनन्द दुहाइ २९ ॥

इति कांजी निबेध वर्णनम् ॥

अथ गौरस मर्यादा कथन ।

छन्दचाल ।

अव गोरस विधि सुन एवा । भाषो श्री जिनवर देवा । दोहत महिपी जब गाये ॥ कवते मर्याद गहाये ॥ ३० ॥
 इक अन्तर सुहरत ताई जीव न तामें उपजाई ॥ राखे जाको जो खीरा ॥ वैसेही जीव गहीरा ३१ ॥
 उपजे सन्मुखन जासे । कर जतन दया धर तासे ॥ दोहे पीछं ततकाला ॥ धर अगनि उपरि ततकाला ३२ ॥
 फिर तामें जावण दीजे । तब तै बखु पहर गणीजे ॥ जबलां दधि खायो सारा ॥ पीछे तजिये निरथारा ॥ ३३ ॥
 दधि को धरिकै जमथाणी । मथि है जो वरिणता खाणी ॥ मथितैही जल जासाही ॥ डारै फिरि ताहि मथाही ३४ ॥
 वह तक्रपहर नहुंताई । खामे को जोग कशाई ॥ मथिय धीबे जल नाख ॥ बहु हाारु लगे लिधि राखे ॥ ३५ ॥

विन आणों जल, जिमजाणों । तसीही ताहि वखाणों ॥ तातें जे करुखाधारी । खावें दधि तक्र विचारी ३६ ॥
 मरयादाडलंब जु खाहीं । मदिरा दूषण शक नाही ॥ निज उदर भरण को जेहा । वेचें दधि तक्र जु तेहा ॥ ३७ ॥
 वैपाप महा उपजाहीं । यामें कुळ कश्य नाही ॥ तिनको जु तक्र दधि लेई । खावें मतिमंद धरेई ॥ ३८ ॥
 अरकरय रसाई जातें । भाजन मध्यम न्हेतातें ॥ मरयादा हीण जो खावें । दूषणको पार न लावें ॥ ३९ ॥
 इहदही तक्र विधि सारी । सुनिये जो अविव्रत घारी ॥ फिरिया अरुजो व्रत राख । दधितक्र नपरको चाखें ॥ ४० ॥
 अब जावया की विधि सारी । सुनिय भवि चित्त अबधारी ॥ जब दूधदुहाय घर लावे । तवही तिहि अगनि चढ़ावे ॥ ४१ ॥
 अबटाय उत्तार जुलीज । रुपया तव गरम करीज ॥ डारै पयमाहे जेहा । जमिहें दधि नहि संदेहा ॥ ४२ ॥
 वांधै कपडा के माहीं । जब नीरन्वुंद रहाहीं ॥ तिहकी देवडी झुकाई । राख सो जतन कराई ॥ ४३ ॥
 जलमाहीं घोल सो लीज । पयमाहे जांवाण दीज ॥ मरयादा भापी जहा । इहजावया मुं लखिलेहा ॥ ४४ ॥

इति गौरसमरयादा संपूर्णम् ।

अथचर्माश्रित वस्तु दोष वर्णनम् ॥

दोहा ॥

चरम मध्यकी वस्तुको, खात दोष जो होय । ताको संक्षेपहि कथन, कहुं सुनो भविलोय ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

मूयें पणुको चरम जु होय । भीटेनर चंडाल जु कोय ॥ ता चंडालहि परसत जवै । छोटिगिने सगरेनर तवै ॥ ४६ ॥
 घर आयें जल स्नानकरेय । एती संख्या चितहि अरेय ॥ पशू खालके कूपामाहि । धिरत तेल भंडाल कराहि ॥ ४७ ॥
 अथवा सिरपर अरकर ल्याय । वचै सो वाजारीहि जाय ॥ ताहि खरीद लेयघर माहि । खावें सवै शंकरुळु नाहि ॥ ४८ ॥
 तामें उपजें जीव अपार । जिनवाणी भाष्यो निरधार ॥ जैसैं पशू चामके माहि । घृत जल तेल डार हें नाहि ॥ ४९ ॥
 ताही कुलके जीव उपजंत । संख्यातीत कहैं भगवंत ॥ ऐसो दोष जाणिकें संत । चरम वस्तु तुम तजहुं सुरंत ॥ ५० ॥

कोई मिथ्याती कहैएम । जिय उत्तपची भाषी केम ॥ जीव तेल घृतमें कहुं नाहि ॥ चरम धरें करउपजै कांहि ॥ ५१ ॥
 ताके समभाषण की कथा । कही जितेश्वर भाषू यथा ॥ दे दृष्टांत सुदृढता श्री मिथ्यादृष्टी संशयपरी ॥ ५२ ॥
 घृत जल तेल जागते जीव । चरम वस्तुमें धरत अतीव ॥ उपजै जैसे जाको चाम । सो दृष्टांत कहुं अभिराम ॥ ५३ ॥
 सूरज सन्मुख दरपण धरै । रुई ताके आगे करै ॥ रविदरपण को तेज मिलाय । अगन उपज रुई बलिजाय ॥ ५४ ॥
 नहीं अगनि इकली रुमांहि । घृत जल तेल धरै सक नाहि ॥ दुहुयनि की संयोग मिलाय । उपज अगनि न संशै थाय ॥ ५५ ॥
 तेई चामके वासन मांहि । घृत जल तेल धरै सक नाहि ॥ उपजै जीव मिलै दुहुंथकी । इह कथनी जिनमारग वकी ॥ ५६ ॥
 ऐसे लखके भीलचमार । धीवर रैगर आदि बंढार ॥ तिनके घरके भाजन तणो । भोजन भखें दोप तिम तणो ॥ ५७ ॥
 तेसो चरम वस्तुमें दोष । दुरगति दायक दुखको कोष । चरम वस्तु भक्षण करिजेह । मांस भखी सादृशहै तेह ॥ ५८ ॥
 दुरत पशु मूएकी चाय । करिके तास भाथडी ताम ॥ भरै हींग तामें मिलजाय । खातो मांस दोप अधिकाय ॥ ५९ ॥
 जाके मांस त्याग द्रवहोय । हींग भव्य नहिं खावें कोय । हींग परै जहि भाजन मांहि । सो चमार वासण समजाहि ॥ ६० ॥

सवैया ।

चामडे के मध्य वस्तु ताको जो आधार होय, अतिही अशुद्धताहि मिथ्यादृष्टी स्वायहै । दातारके दीए विन जिन इच्छा
 होय एसी, असन लहाय नाम जतीको कहायहै ॥ तिनवहिरातमांसो कहाकहै और सुनो, वखियो सो भोजन क्रियातै
 हीणथायहै । हरित अनेक जुत मारग धरमत्रत, शुद्धता कहाय भष धरै यागहाय है ॥ ६१ ॥
 दोहा ।

जीमत भोजनके विषे, सुबोजनान्वर देख । तजै नहीं वह असनको, पुरजन दुष्ट विशेष ॥ ६२ ॥
 एचाख्यो इकसे कहे, यामें फर नसार । अति लंपट जिन्हा तणो, लोलप चिच अपार ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

हटवा तणो चुन अरुदाल । जतधर इनको खावो ढाल ॥ बीधो अन्न पीसदल ताहि । दया रहित वेचनहै जाहि ॥ ६४ ॥

श्रीव फलेवर धानक सोये । चलतेहु तोमाहे होय ॥ परम विवेकी हे जो मनी । मीसि दोप लल त्यागी सही ॥ ६५ ॥
 नीच लोक घरको छुन दुग्ध । तजहु विंयक जंशिए अगुद्ध ॥ साबिदूध दोहते लेय । ताहो होय तहा सो देय ॥ ६६ ॥
 निच वस्तु तिन उपमा इसी । कशिपु थस वरुवर जिसी । अमिषकी उपमा इहवीर । जैसो साहि तणो हे सीस ॥ ६७ ॥
 यार्से साहि दूधको तजो । मीसि तजन व्रत निहचे भजो ॥ संखे तणो चूनौ भोमत्र । महानिंद भाषो निनसूत्र ॥ ६८ ॥
 कालिंगडा घीया तोरई । कडू वीलक जामीनिई ॥ इत्यादिक फलकाय अनंत । तिनको तज्ये तुरत महसं ॥ ६९ ॥
 फलीय कवारि कली कंधार । फूल छहंजणा आदि अपार ॥ भद्रा निंद जीवनका धाम । तजिये तुरत विवेकीराम ॥ ७० ॥

दोहा ।

अपन किर्याके विषे, प्रथम मूलगुणें आठ । तिन बराने सत्पते, कबो पूर्व ही पाठ ॥ ७१ ॥
 जिनवानी जैसी कही, कथा संस्कृत तेह । भाषा तिह अनुसारते, वंश चौपई एह ॥ ७२ ॥
 अंचउदुंवर फल त्यजन, मकारादि फुनितीन । महा दोप कर जानके, तुरत तकहु परयीन ॥ ७३ ॥

सवैया ।

पीपर और बड़ फल उंवर कटुबहु पाकपरिपांच उदुंवर फल आणिये । मद्य मांस मयं तेल मकरादि अतिहीन सु-
 मंहु परवीन सवै आठए बखानिये ॥ इनही के दोष जते तामें एत दोषते लहेन संतोप तेले नर खात मानिए । इनके
 तजे जोमान वच कूम भय्य जीवि आठ मूलगुणके सधिया मद्य आनिचे ॥ ७४ ॥

ॐ अथ रसाई वा चाकी परिहीडाकी वगैरे चणैने ॥

चौपाई ।

जाघर माहि रसाई दोय । तहां तानिये चंदवो लोय ॥ अंघर परिहिडा ऊपर जोन । उंवल चाकी हे जिहि थान ॥ ७५ ॥
 फटके नाज नवीणै जहां । चून आनिवो थानक तहां ॥ जिस जाग्रह जीपमेनित होय । सयनकरण जागा अयलोय ७६
 सामायक कीजे जिहि धीर । एतय थानक लल वरवीर ॥ ऊपर बंसैने जहां ताणिये । आचक चलए तहां जाणिये ७७ ॥

चाकी ऊखलें के परिमाण । टंकणी कोजै परम सुजाण ॥ खान विलाई चाटै नाथ । कीजे जतन इहीविधि भाय ॥७८॥
 खोट लिये मूसलतें नाज । श्रेय इकान्त धरो विनकाज ॥ छाज चालणा चालणी तीन । चाप्रतणा तजिये परवीण ॥७९॥
 चरम वस्तुको रंगागी होय । इनको कवहुं न भेटे सोय ॥ दिनसें खेटि पीसे नाज । सो खाना किरिया सिरताज ॥८०॥
 नाज नजर तें सोध्यों परै । तातें करुणा अति विस्तारै ॥ बिसिकां जो पीसैं अरु दलै । जातें करुणा कवहुं न पलै ८१ ॥
 चाकी गोलै चून रहाय । चौटी अधिक लगै तसुआय ॥ निसिको पीस्यो नजर न परै । ताके दोष कम ऊचरै ॥ ८२ ॥
 नाजमाहिं ऊपरि तें कोय । माणी आयरहे जो होय ॥ सोई नजर न आवै जीव । यातें दूषण लगै अतीव ॥ ८३ ॥
 एते निशि पीसण के दोष । जान लेहुं भवि अथके कोय ॥ ताते निसि पीस्यो नहिं भलो । त्यागोते किरियाजुत चलो ८४ ॥
 चूनतणी मरयादा कहुं । जिनमरण से जैसे लहुं ॥ सीतकाल दिन सात बखान । पांच दिवस म्रीपम ऋतु जान ८५ ॥
 बरपाकाल माहिं दिन तीन । ए मरयादा गहौं प्रवीन ॥ इन उपरांत जानिये इसो । दोष चलितां स भाष्यो तिसो ८६ ॥
 निसिको नाज भय जो खाय । अंकुरा तिनमें निकसाय ॥ जीव निगोद तणो भंडार । कन्दमूल सब दोष अपार ॥८७॥
 ताते जिते विवेकी जीव । दोष जाणके तजहु सदीव । श्रावक की है घर जो त्रिया । किरिया मांनिपुण तसुहिया ८८ ॥
 ईधन सोध रसोई माहिं । लावे तासों असन करादि ॥ तातें पुन्य लहै उरुकुष्ट । भव भव से सुख सहै गरिष्ट ॥ ८९ ॥

अथ मुरब्बादिक वर्णन ॥ चौपाई ॥

कोऊ भान बड़ाई काजे । अरु जिब्हा लोलपुता साजे ॥ खंडतणी चासणी कराय ॥ दाख छुहारा माहिं डराय ॥९०॥
 नाना भाति अचरभी जान । करइ मुरब्बा नाम बखान । कैरी अग्नि ऊपरि जइवाय । खान्डपातमाहे नखवाय ॥ ९१ ॥
 कहे नाम तसु कैरी पाक । करवावै तसु अशुभ विपाक ॥ तिनकी मरजादा वसु जास ॥ द्रत धर पीबे नहिं काम ॥ ९२ ॥
 जेतो ऊष्ण नीरकी वार । तेती इन सख्या निरधार ॥ रक्षित विवेक नूढता जान । राखे घरने बहु दिन खान ॥ ९३ ॥
 पास दमास खपास न ठीक । बरस अधिक दिनलों तइकीक ॥ काहुं भे तो पेस करेय । मांगे तिनको मांगा देय ९४ ॥
 जातें लखै बड़ाई आप । तिस सभान कबु अचर न पाप ॥ मदिरा दोष लगै सकनाहि । ताते भविजन य हितजाहि ९५ ॥

जो मन में खाने को चाव । खावे जीमत वार कराव ॥ अथवा कीए पाछै तामस । लैनो जोग आठही जाम ॥ ६६ ॥
साँझकार लको अठ्यादि । राखै नरम वासणी ताहि ॥ धागर सटकी भरके राख । ताको बहुदिन पीछ चाख ॥ ६७ ॥
ताहूँ में मदिरा को दोष । महान्त जीविको कोष ॥ अधिको कहा करो आलाप । अहो गति खीळै वहुं पाप ॥ ६८ ॥
याको पटरस नाम जु कहै । पुन्यज्ञान कवहुं न गहै ॥ मन बच तन इनको जे तजै । मदिरा त्याग वरत सो भजै ॥ ६९ ॥

दीहा ।

जे विशुद्ध मर्दिग त्यजन, पालै वरत महन्त । मरजादा ऊपर गए, तुरत त्यागिए सन्त ।

अथ रसोई वा भोजनकी कृयावर्णन ॥ चौथाई ॥

होत रसोई थानक जहां । खिचड़ी रोटी भोजन तहां ॥ चावल अरि विविधि पंकार । नियजै श्रावककै घरसार ॥ १ ॥
जोमण थानक जो परमाण । तहां जीमिए परम सुजान ॥ रांधण के भाजन हैं जेह । चोका वाठिर काढ़ि न तेह ॥ २ ॥
जो कहै तो माहि न लेह । किरियावन्त सो नाछि सनेह ॥ असन रसोई वाहिर जाय । सो वटवोया नाम कहाय ॥ ३ ॥
अन्य जाति जो भीटै कोय । जिह भोजन को जीमे सोय ॥ शूद्रनिभेले जीमे जिने । दोषवखान्यो है वह तिसो ॥ ४ ॥
अन्य जाति के भेले कोई । असन करै निरबुद्धी होई ॥ यतें दू पूण लगै अपार । जिमि परजुठि भलै मतिदार ॥ ५ ॥
निज सुत पिता व भ्राता जान । साचो मित्रादिक जो मान ॥ भलै तित कै जीमण जदा । किरिया मति यरणो नहिं कदा ६
तोपर जात तणी कहा वात । क्रियाकान्ह ग्रन्थन विख्यात ॥ भाजन निज जीमनको जेह । मांग्यो परको कवहुं न देह ७
अरु परको वासण में आप । जीमते अति वाहै पाप ॥ ग्रामान्तर जो गमन कराय । वसिहै ग्राम सरायां जाय ॥ ८ ॥
मांगे वासन खावं वाहि । जो सीधो घरहुं को आहि ॥ खाये दोष लगै अधिकार । मांस वरावर फेर न सार ॥ ९ ॥
गजर मीणा जाट अहीर । भील चमार तुरक बहु कीर ॥ इत्यादिक जे हीण कहात । तिन वासनमें भोजन खात १०
ताके धरको वासण होई । ताते तजौ विवेकी लोय ॥ श्रावक कुल अति लब्यो गरिए । किरियाविना जो जानह भिए ११
जे बुध क्रिया विपै परधीन । अन्य तणो वासण गहि हीण ॥ तामें भोजन कवहुं न करै । अधिको कष्ट आयजो परै १२

जैन धरम जाके नहिं होय । अन्यमती कहियेनर सोय ॥ निपज्यो आसन तास धरमाहिं ॥ जीमणयोग वपाणो नाहिं १३
अह तिनके घरहुको कीयो । खालो जिनमतमें बरजीयो ॥ पाणी छापि न जाणै सोय । सोधणनाज विवेक न होय १४
इंधण देख न वाली लिके । दया रहित नर जाणो तिके ॥ जीव दया पटमत में सार । दया विना करणी सबधार १५
याते जे करुणा प्रतिपाल । असन आन धरि कर तजि चाल ॥ निज ब्रत रत्तकहै नर जेह । यो जिनवर भाष्यो संदेह १६

छन्द चाल

जे आठ मूल गुण पालै । इतने दोषति को टालै ॥ दीजे जिम मन्दिर नीव । गहिगे चौडी अति सीव ॥ १७ ॥
तापर जो काम चढ़ावै । बहु दिन लो डिंगण न पावै ॥ तिम श्रावक ब्रत ग्रह करी । इनि विनिही नीच अनेरी १८ ॥
दरशन जुत एगलि आवै । बृत मन्दिर अडिग रहावै ॥ याते जे भविजन गाणी । निहचै एह मननै आणी ॥ १९ ॥
हग गुण विनु सब बृत धारी । प्रतिमा नहि कारिज कारी ॥ प्रतिमा ग्यारा जो भेद । आगे कहिहो तजि खेद ॥ २० ॥

अडिल्ल छन्द ।

क्रिसनसिंह यह अरज करे भविजन सुनो । पालो वसु गणमूल निजातम को गुणों ।
दरशन जुत ब्रत त्रिविधि सह्य मनलाई हो । सुरग सम्पदा भुंजि मोच सुख पायहो ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ राजस्वला स्त्रीकी क्रिया लिख्यते ॥

चौपाई ।

अवर कथन इक कहनो जोग । सो सुनलीज्यो जे भविलोग ॥ अर्वाकिया प्रगटी बहु हीण ॥ याते भाषुं लखहु प्रवीन ॥ २२ ॥
ग्रंथविचर्याचार जु माहि । बरणन कीयो है अधिकाहि ॥ मतलब सो तामें इक जान ॥ मैसंसेप कहूं सुखदान ॥ २३ ॥
रितुंती वनितां जव थाय । चरण महा विपरीत चलाय ॥ प्रथम दिवस तेही ग्रह काम । वेश बृहारी सिगरे धाम ॥ २४ ॥
अवर हाथ मांही लो छाज । फटके सोधै वीणो नाज ॥ ब्रालक कपडा पहिरा हाय । वाहिं छिंलावै सगरे होय ॥ २५ ॥
आपसमें तिय हूजे सबै । नकरे शंका भीदत जबै ॥ मांजै सब हंडवाई सही । जीमण की थाली हूगही ॥ २६ ॥

जिह थाली में सिंगरे खाँहि । ताहींमें वा असन कराहि ॥ जलपीवे को कलस्यो एक । सचही पीवै रहिह निवेक ॥ २७ ॥
 क्रियाकोष ग्रन्थन में कही । रितुवंती जो भाजन लही ॥ ग्रह चंडार तखोको जिसो । वोहू भाजन जायो तिसो ॥ २८ ॥
 और कदा कहियै अधिकाय । वह वासए माहे जो लाय ॥ ताके दोष तखो नहिं पार । क्रिया हीण बहुजाणि निवार ॥ २९ ॥
 निसिकों पति सोवंतहै जहां । वाह सयन करतहै तहां ॥ दुहुं आपसमें परसत देह । यामें मति जायो सदेह ॥ ३० ॥
 कोऊ विकल महा कुम तिया । दुय तेजे दिन सैवै तिया ॥ महापाप उपजावै जोर । यासम अंघर न क्रिया अघोर ॥ ३१ ॥
 महा म्लानि उपजै तिहिवार । चमारणिहू ते अधिकार । जाको फल वेतरत लहाय । जो कहुं उस दिन गरभ राहाय ॥ ३२ ॥
 भाग्य हीण सुत बंदी होय । पर तिय नर सबे बुद्धि लाय ॥ क्रोधित नहै कह अति बच दीक । जदवा तदवा कहै अलीक ॥ ३३ ॥
 रितु वंती तिय किरिया जिसी । भायो भवि सुखि करिए तिसी ॥ वनितां धर्म होत अथ बाल । सकल कामतजिके तत्काल ॥ ३४ ॥
 ठाम एकांत वैठिहै जाय । भूमि तृणा संधारी कराय ॥ निसि दिन तिह पर धिरता धरै । निद्रा आयै सयन जुकरै ॥ ३५ ॥
 इह विधि निवस बासर तीन । तबलो एती क्रिया पचीन ॥ प्रथमही असन गरिष्टनकरै । पातल अथवा करमें धरै ॥ ३६ ॥
 माटी वासए जलका साज । फिरिबै है आवै नहिं काज ॥ इह भाजन जल पीवन रीति । अवर क्रिया इतिये धर मीति ॥ ३७ ॥

बंदचाल ।

दिनमें नहि सयन कराहीं । हासिन के कुहल थाहीं ॥ तनि तेल फुलेल नलावे । काजल नयना नअजावे । ३८ ॥
 नषको नहिं दूर करावे । गीतादिक कवहु नगावे ॥ तिलक नदें रोली केशर । कर पयं सप दे चपहावर । ३९ ॥
 एक दिवस तीनलो भोग । रितुवंती नकरीयो जोग ॥ पुरुषन को नजर न धारे । निज पतिहुं को ननिहारे ॥ ४० ॥
 वनितावहै धरम जु निसिकों । दिन गिए लीजे नहिं तिसकों ॥ सुरजनजरी जो आवे । वह दिन गिएतीमें लावे ॥ ४१ ॥
 दूजे दिन स्नान कराही । धोवी कपड़ा लेजाही ॥ संकोच थकी नखवाहै । औसन की नजर न आई ॥ ४२ ॥
 तीजे दिन जलतं न्हावे । तनु बसन ऊजले लावे ॥ चउथे दिन स्नान करंती । मनमें आनंद धरंती ॥ ४३ ॥
 तन बसन ऊजले धारे । प्रथमहि पतितयन निहारे ॥ निसि धरे गरभ जोयाम । पति सुरत खो अभिराम ॥ ४४ ॥

निपजावे-उत्तम बालक । बड़भाग जन्म प्रतिपालक ॥ ताते इह निहचै जानी । वीधे दिन स्नान जु ठानी ॥ ४५ ॥
 पतिव्रत क्रिया जो पारे । निज पति को नयन निहारे ॥ नर अवर नजर जो आवे । तस सूरत सम सुत आवे ॥ ४६ ॥
 शीलहि कलंक को लावे । अपजस लग पडह बजावे ॥ याते सुभ बनिता जेहें । किरिया जुत चाले ते हैं ॥ ४७ ॥
 निजपति वित्त अवर न देखे । साम्म ने नाहिं मुख पेखे ॥ ताके घर मांही जाणो । लक्ष्मी को बाल बजाणो ॥ ४८ ॥
 अति सुजस होय जगमाहीं । तासम बनिता बहु नाहीं ॥ इह कथन लखो बुध ठीका । भापों नहिं कळू अलीका ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

चत्री ब्राह्मण वैश्यकी, क्रिया विशेष बखान । ग्रन्थ वित्तरणचार सं, देख लेहु मति मान ॥ ५० ॥

इतिरजस्वला स्त्री क्रिया वर्णनम् ॥

● अशुद्धादश व्रत कथन लिख्यते ●

दोहा ॥

क्रियो मूलगुण आठको, वर्णन बुधि अनुसार । अब द्वादश व्रतको कथन, सुनहु भविक व्रतधार ॥ २१ ॥
 बाराव्रत माहीं प्रथम, पाँच अणुव्रत सार । तीन गुणव्रत वार फुनि, शिवा व्रत सुखकार ॥ ५२ ॥

बन्दचाल ।

इह व्रत पातै फल ताको । भापों प्रत्येक सुजाको ॥ जे अब्रत दोष अपारा । कहिहें तिनको निरधार ॥ ५३ ॥
 समकित जुत व्रत फल दाई । तिहकी उपमान न कराई । विनु दरशन जे व्रत धारी । तुष खंडन सम फलकारी ॥ ५४ ॥

अद्विज्ञ ।

जो नर व्रतको धरें सहित समकित सही । सुर नर और फण्डिद्र संपदा को लही ।
 केवल विभव प्रकाश समवश्रुत सहि सदा । सिद्धि वधू कुचकुंभ पाय क्रीहित सदा ॥ ५५ ॥

भाग्य हीन ज्यों चहत गुण, धन धानादिक नाहि । भीत मूर्ति नितही दुखी, बरत रहित नर थाहि ॥ ५६ ॥

दोहा ।
गीता छन्द ।

जो शुद्ध समकित धार अतिही नरभव सुलकर कौन है । संसार में जे सार सारहि भोग सो नूनि व्रत गहै ॥
सो मुक्ति वनिताके पयोधर हार सम जे रति करै । तहै जनम मरण न लहै कवही सुख अंगता अनुसरै ॥ ५७ ॥

दोहा

कुञ्चि भव संसार में, भ्रमत चतुर गति थान । जिन आगम तत्त्वार्थ को, विकल होय सरधान ॥ ५८ ॥

अथ अहिंसा अनुव्रत लिख्यते ॥

चौपाई ।

त्रसकी घात कवहुं नहिं जाण । जो कदाचि बूढे निज प्राण ॥ थावर दीप लागै तिह थकी । प्रथम अणुव्रत जिनवरवकी ५९ ॥
थावर हिंसा इतनी तजे । त्रस के घात दीप को भजे ॥ सोधरमी सोपरम सुजान । जीव दया पालक प्रतिजान ॥ ६० ॥

छन्दनाराच ।

करोति जीवकी दया नरोचमो मही सही । सुवैर बर्ग बर्जितो निरापयो तंच लही ॥
तिलोक ईर्ष्य मध्यरत्न दीप सो बखानिए । बरे विमोक्ष लक्ष्मी मसिद्ध शिवको जानिए ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

साथ असाद्य न भेद कहु, हिंसा करत न ठील । महा पाप को मूल नर, ज्यों चंडाल अरुभील ॥ ६३ ॥

अहिंसा छन्द ।

जीव वद करपाप उपजित पाक तें । घोर भवोदधि मांहि परै निज आपते ॥
नरक तखा दुख सबै बहुत विधितें सहे । फिर दुर्गति गांहि सदा फिरते रहे ॥ ६३ ॥

दोहा ।

करुणा अरु हिंसा तणो, प्रगट कही फल भेद । वह उपजावे सुख महा, अद्या ते व्है खेद ॥ ६४ ॥
ऐसे लख भविजन सदा, धरो दया चित राग । सुपने हूं अद्या करत, भाव तजहु बड़भांग ॥ ६५ ॥

सवैया ॥

पूरवही मुनिराय दया पालो षट्काय महा सुखदाय शिव धानक लहायो हे । मतिमा धरैया के उपसमकादि केतेह
करुणा सहाय जाय देवलोक पायो हे । अजहूँ नीचनि की रत्ताके करैया भनि सुरशिव लहे जिनराज सौं बतायो हे ।
यातें हिंसा टार क्रिया पार चित्तधार जिन आगम प्रमाण कृष्णसिंह ऐसे गायो हे ॥ ६६ ॥

ॐ अथ हिंसा अतिचार ॥ चाल ॥

बांधेनर पशुयन केई । रज्जुबंधन हृददेई ॥ लंकुटादिक तेँ अतिभारै । पाहन मूठी अधिकारै ॥
नासा करुणादिक छेई । परवेदन को नहिं भेदे ॥ पशुवन को भाड़ो करिहे । इतनो हम बोज जु धरि है ॥ ६७ ॥
पीबै लादे बहु धार । जाके अघको नहिं पार ॥ खर बैल ऊंट अरु गाड़ो । मर्याद जितो करि भाड़ो ॥ ६८ ॥
हासिलकी भय कर जानी । बोजि मरन अधिक धरानी ॥ घोटकर रथ व्है असवारै । चालौनिस सांज सवारै ॥ ६९ ॥
तसु भूखा विना नहिं छूजे । ताको परदुखनहिं सूजे ॥ काहू नर केशिर दाम । जाकों रोकै निजधाम ॥ ७० ॥
तिहिं खानपान नहिं देई । क्रोधादिक अधिक करेई ॥ ए अतोचार भनि पांच । अदया को कारण सांच ॥ ७१ ॥
करुणा व्रत पालक जेह । टालै मनने धरनेह ॥ विन अतिचार फलसारा । सुखदायक हो अधिकारा ॥ ७२ ॥
वे धन्य पुरुष जग माहीं । ते करुणा भात्र धरार्हीं ॥ करुणा सब विधि सुखदायक । पदवीपावै सुर नायक ॥ ७३ ॥
अथवा चली धरणेश देव नृपहुं ही श्रेष्ठिक लेश ॥ इनपदवी कहा वड़ाई । संसार तणा सुखदाई ॥ ७४ ॥
यातें तीर्थकर होई । संदेह न आणो कोई ॥ तातें सुनिये भविजीव । करुणा चित्तधार सदीव ॥ ७५ ॥

ॐ अथ सत्य अणुव्रत कथन ॥ चौपाई ॐ

जुट थूत बाहुन सुल ऊहे । संकट पड़े मौन कों गहे ॥ त्यों अस्त्य सर्वथा नहीं । यतें लघुखिर है मुखि कहीं ॥ ७६ ॥
जीवदथा पालिहे जदा । भूट बचन बोले है तदा ॥ वैहै सत्य सांचही जाण । जहां जीवके बचिहै प्राण ॥ ७७ ॥
छन्द नाराच ॥

सदीव सत्य भावतें अलंघ्यवै न तासको । पएवाच सिद्धि चार नाद होय जासको ॥

सस्यहि रिद्धि दृष्टि तीन लोककी लहे इकों । त्रिया जुमोच गेह भाडु तिष्टहै सुजायकों ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

बचन नजाको ठोक कछु, अति लवारें मति क्रूर । ताते फल अतिकटुक सुन, महा पाप को मूर ॥ ७९ ॥

अच्छिन्न छन्द ।

नष्टजीभ बच परतें निदित मानिए । गर्दभ उंट विलाव काक सुर जानिए ।

जह विवेक ते रहित मूर्कता को धरै । भूट बचगते मनुज ईते दुख अनुसरै ॥ ८० ॥

दोहा ।

सांच भूट फल है निसो, तिसां कूँधो भगवान । सत्य कहे भूठहि तजो, इहे सीख मनआन ॥ ८१ ॥

इति सत्यअनव्रत

ॐ अथ सत्यवचन अतीचार ॐ

छन्दःत्राल ।

निज भूट बचन नहिं भापे । अवरनि उपदेश नु आपे ॥ परगुप्तवात जो थाहो । ताकों ते भगद कराहीं ॥ ८२ ॥
पत्री भूटी नित मांड़े । केलवणींहिय नहीं बांड़े ॥ लेखी फुनि मोढे भूठी । खतहू लिखहै जु अपूठो ८३

तासों शुभ कर्म जुळुवै । अथ अधिक महा करि तूठो ॥ को धरिहैं धरो कहि आई । जासों जो मुकरि सुजाई ॥ ८४ ॥
 साजो दस पांच बुलावै । तस भूठो करि ठहरावै ॥ इस पाप तणो नहीं पारा । कहिए कहु लो निरधारा ॥ ८५ ॥
 दुहु पुरुष जुदे वतलावै । तिन मिलती हिए अणावै ॥ दुहु मुख आकार लखाई । परसों सो भगट कराई ॥ ८६ ॥
 दुपे उनके परिणाम । अथ दायक है इह काम ॥ लख अतिचार दुइ तीन । व्रत सत्य तणा परवीन ॥ ८७ ॥
 इनको त्यागै जे जीव । शुभ गति सुख लहै अतीव ॥ ए अतिचार पण भाखे । व्रत सत्य जेम जिन आखे ॥ ८८ ॥
 शिव भूति भयो द्विज एक । पापी धर मन अविवेक । नग पांच सेउ सुत धरिके । पाखे सो गयो मुकर कै ॥ ८९ ॥
 सत्य घोष भगट तसु नाम । नृप तिय भूठा लखि ताम ॥ बुवाराम करे चतुराई । तसु तियपै रत्न मंगाई ॥ ९० ॥
 तिह सेक परिचा कारी । जिह लिये निज नग दारी ॥ द्विज मरिके पन्तग थायो । तत्तण असत्य फल पायो ॥ ९१ ॥

● अदत्तत्याग अणुव्रत कथन ॥ चौपाई ॥

धरा परोचो अर तीसरो । लेखा मैं भोलो जो करो ॥ यही परो नहिं लहै सोय । जो अदत्त त्यागी नर होय ॥ ९२ ॥
 चोरी भगट अदत्ता सर्व । अणुव्रतधारी तथिहै भव्य ॥ लखे व्योपारादिक नें दोष । एक देश पलिहै शुभ कोष ॥ ९३ ॥

बन्द नाराच ।

लजेहि द्रव्य पारको सुसन्निधि निरंतर । भवन्ति भूमिनाथ भोग भूमि पाय हे परं ॥
 लहे विसर्ब बोध सिद्ध कांतया सुनेन को ॥ अतीव मूर्ति तासकी सहाय चैन दैनको ॥ ९४ ॥

दोहा ।

जाकी कीरति जगत में, फैले अति विस्तार । उज्ज्वल शशि किरणां जिसी, जो अदत्त व्रत धार ॥ ९५ ॥
 सदा हरे परद्रव्य को, गहा पाप मति जोर । पढ्यो रखो भोलेधक्यो, गहै सुनिहचै चोर ॥ ९६ ॥

अहिल्ल छन्द ।

सदा दरिद्री शोक रोग भयजुत रहै । पाप मूति अति लुधा त्रिषा वेदन सहै ॥
पुत्र कलत्ररु भित्र नहीं कोउ जा सके । चोरी अर्जित पाप उदै भो तासके ॥ ९७ ॥

दोहा ।

त्यजन अदत्त सुवस्त को, अरु चोरी फल ताहि । सुन निगहौ बृत्तको सुधी, चोरी भाव लजाहि ॥ ९८ ॥

इति अदत्त अष्टाष्टक ।

ॐ अथ अदत्तादानका अतीचार वर्णन ॥ छंद ॐ

चोरी करने की बात सिखवावै और निघण्ट ॥ जावो परधन के काज । लावो इस बुधि बलि सज ॥ ९९ ॥
कोऊ चोरी कर ल्यावै । बहु मोली वस्तु दिखावै ॥ ताको तुच्छ मोल जुदेई । बहु धनकी वस्तु सुलेई ॥ १०० ॥
कपड़ो मीठो अरु धान । लावै वेचै ले आन ॥ किनको हासिल नहि देई । नृप आज्ञा एम है नेई ॥ १ ॥
जो कहुं नरपति सुन पावै । तिहि बांध वेग मंगवावै ॥ घर लूटलई सब ताको । फल इह आज्ञा हणि वाको ॥ २ ॥
गज हाथ पंखेरी वाट । जाणो इह मान निराट ॥ चौपाई पाई देवाणी ॥ सोई माणी परमाणी ॥ ३ ॥
इनको बखिये लनमान । तुलिहै मपिहै बहु वान ॥ वोछो दे अधिको लेई । अपनो शुभ ताको देई ॥ ४ ॥
उपजानै बहुते पाप । दुरगति में लहै संताप ॥ केसर कस्तूरी कपूर । नाना विधि अवर जकूर ॥ ५ ॥
धृत हींग गुण बहु गाज । तंदुल गुल खांड समाज ॥ इन मांहीं भेल कराहीं । हियरे अति लोभधराहीं ॥ ६ ॥
कपड़ो बहु मोला लावै । कोऊ कहे आण गहावै ॥ ताके बदले धरि बैसो । अगिला रंग होवै लिसो ॥ ७ ॥
बृत्त दान अदत्ता कीजै । पण अतिचार एलीजै ॥ ताते सुनिये भवि माणी । दुरगति दुखदायक जाणी ॥ ८ ॥
तजिये इयको अच वेग । भवि जीवनि को इह नेग ॥ त्यागे सुधरै इहलोक । परभव सुख पावै थोक ॥ ९ ॥

अथ ब्रह्मचर्य अष्टोत्तरत कथन ॥ चौपाई ॥

नारि पराई को सर्वथा । त्याग करै मन बच क्रम यथा । निज बयतें लघु देखे ताहि । पुत्रो सम सो गिनि ए जाहि १०
 आप बराबर जीवन धरे । निज भगिनी सम लाख परिहरे । आप थकी वय अशुकी होय । ताहि मातसम जायाहि जोय ११
 इम परतियको गनिहै भय्य । सो सुख सुरनरके लहि सर्व । निज बनिता माहि संतोष । करिये इसविध सुणि शुभकोष १२
 आप ब्रती तियको ब्रत जबै । दोऊ दिन सील गहि दुध तवै । आठे चौदस परबी पांच । शील ब्रतपालै मन सांच १३
 भादों मास अठाई पर्व । महा पज्य दिन लखिये सर्व । ब्रह्मचर्य पाले इन माहि । सुर सुख लहियत संसय जाहि १४ ॥

अथ शीलकी नव वाडि प्रारम्भः ॥ चौपाई ॥

फुनि ब्रत धर इतनी विधि धरे । ताहि शीलब्रतत्रिविध सुपरे । जेहि बनिताको ब्रत महत्त । तहां मास नहि करिये संत १५
 खचि धर प्रेम न निरखे त्रिया । ताकी सफल जनम अरु निया । पढ़दाके अन्दर तिय ताहि । मधुर वचन भाषे नहि जाहि १६
 पूरव भोग केलिकी जीत । तिनहि न याद करे शुभ मीत । लेई नही आहार गरिष्ट । तुरत शीलको करिये जुभिष्ट १७ ॥
 कर शुचितन शृंगार बनाय । किये शीलको दोष लगाय । जिह पलंग में सोवै भार । सो सज्या तज बुध ब्रतधार १८
 मद्यअथ कथा होय जिहि धान । तहक्षण ररे नहीं भतियान । निज मुखते कबहुं नहि कहे । ब्रह्मचर्यब्रतको जो गहै १९
 उदर भरो भोजन नहि करे । ताते इन्द्री नहुंवल धरे । ए नख वाडिपालिये जवै । शील शुद्ध ब्रत पलहै तवै ॥२० ॥

इति नववाडि संपूर्णम् ।

शीलचरित्र कथन सवैया ॥

बांस्त्री सुन्दरनि आदि देखे सोला सती भई शील परभाव लिंगबंद सोतेई भई । तिन माहें कंठ नृप सोई शिवध्यान
 लखो केक मोंच लैहैं भूप होय तहां ते चई अनन्तमती तुंकारी ने आदि कैती कहुं महा कष्ट पाय शील दिहता भई
 ठई । शीलते अनन्त सुख लहै कछु सन्से नाहि शील भंग अभै नरक महा पई ॥ २१ ॥

दोहा ।

संघ सुदर्शन आदि दे, शीलतलै परभाव । लहै अनन्ते मोक्ष सुख, कहाँलौं कसों बढ़ाव ॥ २२ ॥

नाराच छन्द

सुनो विसन्त ब्रह्मचर्यं पाल बाधका इसौ । अतीव रूपवान् थाय कामदेवको जिसौ । मनोह खोजता लहाग पत्र पौत्र सोभितो । अनेक भूषणादि द्रव्य और सैं नही इतो ॥ २३ ॥ गहै विदीक्षया लहै विज्ञान को प्रफारही । अनन्त सुख बोध दर्शनादि वीर्य भासही ॥ सुनोच सिद्ध थायकाल वीच है अपार सो । सुसिद्ध खोजता गुलाव लोकने नगरसो २४

दोहा ।

लंपट विषई पुरुष के, निजपर ठीक न होइ । दुरगति दुख फल सो लहै, भूमि है भव दधि सोइ ॥ २५ ॥

अडिज्जल छन्द ॥

वहै कुरूप दुर्गंध निदि निरधन महा । वेद नपुंसक दुर्ग व्याधि कुष्टहिगहा ॥

अङ्ग विकल अति होय ग्रथल जीम भासही । परतिय सन्न विपाक लही रहे इम सही ॥ २६ ॥

दोहा ॥

ब्रत परवन्तिता त्यजनको, कथन कसो सुखकार । अरु लंपट विषई तयो भाष्यो सहु निरधार ॥ २७ ॥

शील थकी सुर नर विमल, सुखलहि शिवपुर जाहि । दुरगतिदुख भव भ्रमणको, विषई लंपट पाहि ॥ २८ ॥

अथ ब्रह्मचर्यं अनुव्रत अतीचार छन्द चाल ०

परकी जो करै सगाई । वतलावे गोगं मिलाई ॥ अरु व्याह उपाव वतावे । निज ब्रतको दोष लगावे ॥ २९ ॥

विधिचारणी लेहे नारी । परिग्रहीत नाम उवाची । जिनको वैश्यादिक कहीवे । तिन सङ्ग नही गहीछे ॥ ३० ॥

हास्यादि कोतूहल कीजे । शीलें तव मलिन करीजे ॥ अपरिग्रहीत सुनि नाम । पति परणी छे जो बाखू ॥ ३१ ॥

तम् महा कुशीला जाणी । जन्म संगति करे जु प्राणी ॥ हास्यादिक वचन सुभाषै । सो शील मलिन अति राखै ॥ ३२ ॥
जे लंपट विपई करे । ते पावै भव दुख पूर ॥ अतीचार तीसरो एह । सुखिये अब चौथो जेह ॥ ३३ ॥
क्रीडाअंतंग विधि एह । हस्त दुपरसत तिय देह ॥ विकल्प मन मैही आन । परतत्त ते शीलहि भाने ॥ ३४ ॥
इह अतीचार चौथोंही । बुध करै तकवहू योंहो ॥ पंचम मनिये अतीचार । सुपने में मदन विकार ॥ ३५ ॥
सुपजै तिय सेवन काम । विकल्पता अति दुख धाम ॥ ओषध के पाक बनावे । बहु विध रस धात मिलावे ॥ ३६ ॥
अति विकल होय निज तियको । सेवे हरपावै जियको ॥ वध जन इहरीति न जोग । पण अतीचार इस भाग ॥ ३७ ॥

दहा ।

इनहीं टालु अतशीलको, पालो मन वच काय । इह भवतै सुर पद लहै, फिरि मृपवहै शिवजाय ॥ ३८ ॥

* अथ परिग्रह प्रमाण अणुव्रत कथनम् ॥ चौपाई *

चेन्न वास्तु आदिक दस जाण । परिग्रह तणों करै परिमाण ॥ इनको दोष लगाने नहीं । वहै देशव्रत पंचम कही ॥ ३९ ॥
वृद्धनाराच ।

करोति मूढ़नां प्रमाथ कर्षं सेतनां विषै । त्रिलोक वेदग्यान पाय श्रीजिनेशयौअपै ॥

भवति सख्य सागरो अनंत शक्ति कीं गहै । त्रिलोक वल्लभो सदा भवतरे सिवंलहै ॥ ४० ॥

दोहरा बन्द ।

मन विकल्प सरै अधिक, विभव परिग्रह मांहि । लहै नहीं अघके उदे, फल वरकादि लहांदि ॥ ४१ ॥
अडिल्ल ।

जनय जरा फुनि भरण सदा दुखकों सहे । बहु दूषणको धान रोग अतिही लहे ।

अभै जगतके मांहि कुंगति दुख में परे । विषय निमूर्च्छा मांहि नखंवर जे करे ॥ ४२ ॥

दोहा "

व्रत परिग्रह प्रमाण नर, कीये लहै फल सार । मन शुक्लवाँठी ठीक तजि, दुख भुगतै नहिं पार ॥ ४३ ॥
याते जतधरि भव्यजे, मन विकल्प विस्तार । ताहि तजै सुख भोगवे, यमै फेर न सार ॥ ४४ ॥
जे संतोष न आदरै, ते भव भ्रमै सदीव । दुख करि याकों जानिहै, त्यागै उत्तम जीव ॥ ४५ ॥
दोष लगै या समझकै, अतीचार पणि जाणि । तिन की वरणन भेद कहु, आगै कहों वखाणि ॥ ४६ ॥

● अथ परिग्रह प्रमाणका अतीचार वर्णन ॥ चौपाई ●

नेत्र कहावें धरती महि । हल खेडन की जो विधि आहि ॥ वास्तु कहावे रखातणा । मंदिर द्वाट नोहो रातणा ॥ ४७ ॥
हिरण्य रूपा को परमाण । करे जितो राखे बुधिभाण ॥ छवरण सोनोही जाणिये । ताकी मरज्यादा ठाणिये ॥ ४८ ॥
धन महिषी घोटक अरु गाय । हस्ती बेल ऊंट जं थाय ॥ इत्यादिक चौपद जं सही । तिन सिंगरेकी संख्या कही ॥ ४९ ॥
सालि मंग गोधूम अरु चिया । नाज वित्रियके जेहै धरणा ॥ इन सबकी मरज्यादा गही । बहुत जतनतें राखै सही ॥ ५० ॥
खरच जितो धरमाहीं होय । तितनो नाज खरीदैं सोय ॥ विराज निमिच जेतो परमाय । जीव पढ़ैं नही तैसे जाणि ॥ ५१ ॥
बहुउपाय करिके राखिहै । ऐजे जिनवाणी थापि है ॥ वरस एक में बीकै नहीं । दूजो वरस आद है सही ॥ ५२ ॥
मरयादा माफिक थोजितो । अधिक लेय नहिं राखै तितो ॥ दुपद परिग्रह जे एक है । वनिता दासी दासहू लहै ५३ ॥
कुप्य परिग्रह भें ये जाण । चाया चन्दन अतर बलाण ॥ रसम सूत ऊन का जिला । कपडा होय कहाहै तिता ॥ ५४ ॥
तिनहू की मरज्यादा गहै । चों नायक श्रीजिनवर कहै ॥ रूपया भूषण रतन भंडार ॥ यहुरि सोतपिया अरु दीनार ५५
इनकी मरयादा करि लेहु । हंडवाई वासण फुनि एहु ॥ बहुविधि तया किराया थली । अवर खांडगुड मिश्री तली ५६
मरयादांलं सो निरवहै । भंगनीये दूषणको लहै ॥ गन वच काया पाले जेह । भव भव सुख पावे नर तेह ॥ ५७ ॥

सवैया ३२ ।

वरत करैया ग्यारा प्रतिगा धरे या जेजे दंग के टरेया मनमाहीं ऐके अनिके । जेसः है जिह यान जोंग तैसो भोगउपभोग

चरन्ति जोग मां हि कबहो है बलानिकै ॥ आदरति तोही तेह बाकी सबै खोडिदेह ग्रंथसंख्याअतएह आवकको जानिकै ।
तदभव उरथाय राज ऋद्धिको लहाय पावै शिवथान दुषदानि भव मानिकै ॥ ५८ ॥
मरहटा कन्द ॥ जो परिग्रह राखै दोष न भाखै चित अभिलाषहीन । विकल्प सुकुलावै विषय बढवि आहन पावै दीन ॥
बहु पाप उपावै जो मन आवै आवै वात कहीन । मूर्च्छा को धारीहीणाचारी नरक तहै सुखधीन ॥ ५९ ॥

छन्दःशृङ्गप्रयात ।

कबो मूर्च्छना दोष भारी अवपा ॥ लहै बुभुंसेन जानै लगारी ॥

तजे सर्वथा मोक्ष सौख्यं लहंती । यहै जागभयानयको गहन्ती ॥ ६० ॥

इति परिग्रह परिगाण पंचम अणुअसम्पूर्णम् ।

अथ दिग्गुणव्रत प्रथमकथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

चारद्विशा विदिशा फुनिचार । ऊर्ध्व अत्रो दुहुं भिलि दस धार ॥ दिग व्रत पालन नर परवीन । मरयादा लघे न कदीन ६१
जिते कोसलों फिरियो बहै । दिसा विदिशाकी संख्या गहै ॥ अधिक लोभको कारिज वणै । व्रत धर मरयादा नहि हखौ ६२
जिम मरयादा की आखडी । तहैंलं जाय काम वसि पडी ॥ धरिवैटा निति धारै ठीक । पाले कबहुन चले अलीक ६३ ॥

दोहा ।

दिग्ब्रतको पाले थकी, उपजै पुन्य अपार ॥ सुरगादिक कलभोगवै, यामे फेर न सार ।

मरयादा लीये बिना, फल उतकष्ट न होय ॥ हम्मे पले नहि इम कहे, बहै विकल मति जोय ॥ ६४ ॥

अत्र दिग्गुणव्रतके अतीचार पांचलिख्यते ॥

छन्दः चाल ।

मन्दिर निज परकी आइ । चडियो फुनि कोई पहाइ ॥ ऊरथ संख्या सो कहियो । टाले ते दोषहि गहियो ॥ ६५ ॥

तेहँखाना कूप रचाय । गिरि मुफा भाहि जो जाय ॥ इह अथो भूमि मरयाद ॥ टालै दूषण परमाद ॥ ६६ ॥
 दिसि विदिशि सोह जे लीन्नी । तिरका चलावै मति दीनी ॥ सां तिरजिग गवन कहाई । अतीचार हतीष इहथायी ६७
 निज खेत भूमि जो थाय । सीमाते वधिक वधाय ॥ सो खेत बुद्धि हुम जाणो । चौथो अतीचार बलाखो ॥ ६८ ॥
 जिह वस्तु तखो परमाण । प्रथमहीं कीयो थो जाण ॥ विहिकौ बीसरि सो जाई । स्थतिजु अतीचार कहाई ॥ ६९ ॥

इति दिगगुणव्रत सम्पूर्णम् ।

अथ देशव्रतकथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

दिशि विदिशा के जे जे देश । जिहपुरलौ जो करय प्रवेश ॥ हरे नहीं मरयादा कोई । तिनको पलै देशव्रत सोई ॥ ७० ॥
 मन सैन्यवारण के हेत । मन वच कर मरयादा लेत ॥ आप जहां दिसि कचहुं न जाय । तहातसोवहतो नहीं खाय ७१

दोहा ।

सो लहिये विन वस्तको, नेम न मूल कहाय । याते गहिये आखड़ी, ड्यो फल विस्तर थाय ॥ ७२ ॥

अथ देशव्रत अतीचार पांचलिख्यते ॥ छन्द चाल ॥

कीयो जे देश प्रमाण । तिह पारथ की संस जाण ॥ कोई नहीं वस्तु भंगवै । कचहुं ना लोभ बढवै ॥ ७३ ॥
 जहलौ मरयादा ठानी । भंजि नहीं उत्तम प्राणी ॥ भंजै मरयादा जास । अतीचार कहावै तास ॥ ७४ ॥
 मरयादा वारै कोई । नरकों न बुलावै जोई ॥ अरु आप नहीं बतलावै । बतलाए दोष लगवै । ७५ ॥
 निजरूपहि सौं हसिवाई । काहु जो देइ दिखाई ॥ इह अतीचार चौथोही । जिन देव बलानो योधी ॥ ७६ ॥
 मरयाद जिन्दी जिहि धारी । तिह वारे करतें डारी ॥ कंकरी कपड़ोकछु और ॥ पाहण लकड़ी तिहि डौर ॥ ७७ ॥
 इरयादिक वस्तु बहु नाम । वरनन कहां लों ताम ॥ ऐसी मति समजो कोई । दंसंतर ठीक दुहोई ॥ ७८ ॥
 चैत्यालय वाचर मांहीं । अथ वादे सांतर तांही ॥ धरिहे जिम जो मरयाद । पालै ताम तजि मरयाद ॥ ७९ ॥

इह देशं वरतं तुम जासौ । दूजी गुणव्रतं परमाणो ॥ अत्र अनर्थ दंड जतीजो । बहु विधि तसु कथन सुणीजो ॥ ८० ॥

इतिदुतीयगुणव्रत ।

अथ अनर्थदंड तूतीयगुणव्रत कथनं ॥ चौपाई ॥

अनर्थ दंड पंच परकार । मथम पाप उपदेश असार ॥ हिंसा दान दूसरो जाण । तीजो खोटो पाप वंसाण ॥ ८१ ॥
तुरिय कुशाख कहै मन लाय । पंचम प्रसादं चर्यां थाय । निज घर कारज विनुते और । तिनके पाप तणी जे ठौर ८२ ॥
पद्म विणज करवावै जाय । अरु तिह वीच दलाली खाय ॥ हिंसा को अरंभ जु होई । ताके उपदवै जु कोय ॥ ८३ ॥
मीठो लूण तेल घृत नाज । मादिकवस्तु मगम विनु काज ॥ धोलि आह भ्याहरे लेख । आलकभूभा को अभिलाख ८४
नील हींग आफू मोहरो । भांग तमालू सावण खरो ॥ तिल दाखसिय लोह असार । इन उपदेश देहि अदिचार ८५
कूत्रा तलात्र हवेली वाय । घाही बाग कराय उपाय ॥ कपड़ा बंगि भवावेहु मीत । निज ग्रह कारज राखहु चीत ॥ ८६ ॥
परधन हरण वणी जे वात । सिखवावै बहुतेरी घात ॥ इतने पापतणै उपदेश । कीये होय दुरगति परदेश ॥ ८७ ॥
चाकी ऊखल मूसल जिते । कुसी कदाल फाहुडीतिते ॥ तवो कड़ाही अरु दातलो । इमांगा देयो नदी भलो ॥ ८८ ॥
धणहीक बाण तीर तरवार । जम घर खरी कुहाब्बा टर ॥ मिल लोढो दांतख घोवणो । बाण जेड़ा वडीगणो ८९
रथ गऱ्हा वाहण अधिकार । अगनि उपलादिक निरधार ॥ इत्यादिक फारण ज पाप । मांगदो ए वहे संताप ॥ ९० ॥
याते व्रतधारी जे जीव । मांग्या कवहुन देय सदीव ॥ इध भाव करि वैर खवाय । वध नन्धण मारण चितथाय ९१
पर तिय देखि रूप अधिकार । ऐसो चितवन अतिदुख कार ॥ खोटि शाख वखाणे तदा । इयातदोष रागी न्हैजदा ९२
हिंसा अरु अरंभ बढ़ाय । मिथ्या भाव उपरिचित थाय ॥ जामें एते कहै दखाण । सो कुशास्त्र अयकारण जाण ९३ ॥
विनही कारण गमन कराय । जल क्रीड़ा औरिनि लेजाय ॥ वाले अगनि काम विनु सोय । बंदे तर अति उद्धत होय ९४ ॥
मेलदेखण चलिपे यार । असवारी यह खड़ी तयार ॥ गोठि करै निज खरचे दाम । ऐ सव जाणि पाप के काम ९५ ॥

बहुजगलणो मगलानि भलो . होला हँहणी खावें चलो ॥ सिरा बाजरा अर जवारि । फलही भाजी सबनिपचारि ॥ ६६ ॥
 चलो माथी लैजेहें खेत । बस्त खवावनको मन हेत ॥ अनरथ दंड न जायें भद । पाप उपाय लहै बहु खद ॥ ६७ ॥
 खनी क्रत्रुतर मेना जाण । तूतो बुलबुल अचकी खाण ॥ पंखियां और जनावर पालि । रासै बन्दि पीजरै घालि ६८ ॥
 इनि पाले को पाप महत । अनरथ दंड जाखिये संत ॥ ककर वांदर हिरण विलाव । मीढादिक रखिये धरि चाव ६९ ॥
 पालि खिलावें हरखि धरेय । अनरथ दंड पाप फल लेय ॥ मन हुलसे विधाम कराय । त्रस जीवन छुरत बंडमाय ७० ॥
 हस्ती घ टक पीडुक मोर । हिरण चौपद पंखी और ॥ कपड़ा लकड़ी माटी तला । पाखाणादिक करिहै बला ॥ १ ॥
 जोब थिगई करि आकार । करै विविधि केहीण गवार ॥ तिरिणकों मोल लेइ जण घणा । वाटे धरवरं मे लाहला ॥ २ ॥
 इहं मयादचर्या विधि कही । अनरथ दण्ड पापकी मही ॥ जो न लगवै इनको दोष । सो धरभी अघ करिहै सौप ॥ ३ ॥

दोहा ।

जो इस व्रतकां पालि है, मन बच काय बुजाण । सो निहचै छुर पद लहै, यामें फेर न जाण ॥ ४ ॥
 धिनु कारजही सचनिको, दोष लगावें कोय । जाके अघ के कथन को, कवि समरय नहिं होय ॥ ५ ॥
 अघसे नरकादिक लहै, इह जानो तहकीक । अतीचार यावरत को ॥ कुनों पांच यह ठीक ॥ ६ ॥

अथ अतीचार अनरथ दण्डका लिख्यते ॥ छन्द चाला ॥

अतीहास कोतूहल कार । मन माहीं सोच विचार ॥ इह अतीचार एक जानी । जिनआगम कलो ब्रह्मानी ॥ ७ ॥
 क्रीड़ा उप गायन काम । बहु कला करै दुख धाम ॥ नृत्यादिक दंखला चाव । वादीगर लखि येह दाव ॥ ८ ॥
 मुखते बहुमाली देई । वन ज्यों त्योही भाखई ॥ इह अतीचार भणि तीजो । दधि त्यागहु डील न कीजो ॥ ९ ॥
 मन में चितै को काम । इतनो करस्यों अधिराम ॥ ताते अधिकोज करारै । दूरण इह न त्यो थारै ॥ १० ॥
 जेती सावत्री भोग । अथवा उपभोग नियोग ॥ परं नर जो मोल अथिको मोल चढारै ॥ ११ ॥

लोलपता अतिही ठाने । हठ करिस्थीं अपनी ओने ॥ इह पंचमदोष छठीक । यौं कछु नहिं अलीक ॥ १२ ॥
भणिया ए पण अतीचार । बुधजन मन धरि डविचार ॥ नितिही इनको जो टाले । मन वच क्रम व्रत सो पाले ॥ १३ ॥
इह कथन सबेही भाष्यो । जिन वाली भाफिक आख्यो ॥ जो परम विवेकी जनिब । इनको करि जतन सदीव ॥ १४ ॥
जे अनरथ दण्ड लगवे । ते अयको पार न पावे ॥ अथ महा जगतको दाई । भव भांवरि अन्त न आई ॥ १५ ॥
वच भाषे लागो पाप । ऐशेहु न करेहु अलाप ॥ मन वच तन व्रत जे पाले । ते दुरगादिक सुख भाले १६ ।
अनुक्रमि शियथानक पावे । कबहुं नहिं भव में आवे ॥ सुख सिद्ध राया जु अनन्त । भुगते जो परम सहन्त ॥ १७ ॥
दोहा ।

गुणव्रत लखि इह तीसरो, अनरथ दण्ड सुजाणि । कथन कछो संक्षेपतैं, कितन चिंह मनि आशि ॥ १८ ॥
इतिगुणव्रत कथन संपूर्णम् ।

अथप्रथम शिखाव्रतसामायिकलिख्यते चौपाई ॥

सबजीवनिमें समता भाव । संयम मे शुभ भावन चाव ॥ आरतिरुद्र ध्यान तिहुं त्याग । सायाधिक ब्रत जत अनुराग ॥ १९ ॥
प्राणी सकल धकी मुज चांति । वेउत्तम मुक्त परिकरि सांति ॥ मेरु वैर नहीं उन परीबैमुक्तैं कछु दोष न करी ॥ २० ॥
इत्यादिक वच करि विउवा । जो नर सामायक को धार ॥ परबिकासन गाढो तथा । सक्तिमभाण थापि है तथा ॥ २१ ॥
पूत्रीनिष्क मध्यानिष्क चाल । अपरानिष्क एतीनों काल ॥ मरयादा ज ती उच्चरै । तेती वार पाठ सो करै ॥ २२ ॥
दुहुं आपसन के दोषज जिते । सामायक जुतदजि है तिते ॥ जोविशेष अणि वाको चाव । ग्रंथ श्रावका चार लखाव ॥ २३ ॥
हैं एकाकी अवर न कोई । शुद्ध बुद्ध अविचल मय जोय ॥ करयातैं वैढ्यो न उजाणि । कै न्यारा तिहुं कालवपाणि ॥ २४ ॥
इस संसारै मुक्तकं नाहिं । मैंनकिसी को इह जगमांहि ॥ वंध्यो अनादि करयते सही । निहंके वंधन मेरे नहीं ॥ २५ ॥
राग दाप करि मेजा जदा । तिन दुहुइ नत मिलन न रुदा ॥ देह वतंती रहत सरीर । चेतन शक्ति सदा मुक्ततीर ॥ २६ ॥

चिन्ताआठौं मद आरंभ । चित्तवन मदन कपायखंडंभ ॥ इनि कौजिस विरियां परिहार । करथी सुदुध समारकधर २७॥
सीतवसन वरषां फुनिवात । दंसादिक उपजत उतपात ॥ जिनवर वचन विपै अति धीर । सहिहै जिके महा वरबीर ॥२८॥
पूर्वाचारिज के अनुसार । जैसुविचनन करई किचार ॥ तीनसुहरत दोइक जाण । उत्तम प्रथम जवन्य वखाण ॥२९॥
जैसी शक्ति होय जिहिं पास । करिएवहै भव भ्रमणविभास ॥ भव्यबीव इहि विधि जे करै । तिनकी बहिमा कवि को करै ॥३०॥

दोहा ॥

इइ व्रत पाले जे छरन, मनवच क्रम अरिठीक । छरनर के छस भुंजकर, शिव पावै तहतीक ॥३१॥
जकुमती जिन नाम को, लैन करं परपाद । सोदुरगति जैहै सही, लहिहै दुखविपवाद ॥३२॥

अथसमाइक अती चार लिख्यते ॥ अंतर्चाल ॥

मनवचनक्रम किए जोग । परभादी होय प्रयोग ॥ परिणाम दुष्टता भारी । राखे नहीं डीक लभारी ॥३२॥
सामायिक पाठ करल । व्रतलावै परसोभत ॥ बोलै फुनि चारचार । जानों य दूजो अती चार ॥३३॥
सामायिक करत अनादर । मतमैन उच्छाह अरं पर ॥ विनुलगन भागहू पीध । किनि लिए पस दीजिय मोट ॥३४॥
आसण का कर चलाचल । तन छुंजहलावै पल पल ॥ फेरै मुख चहुं दिसि भारी । तिजहु अती चार विचारी ॥
सामायिक पाठ करंतो । चितपाहेप धरंतो ॥ मंडह पाठ पढयो अकनान्दी । फुनि फुनि इम वीसनि जांही ॥३५॥
ए अतीचार पल भावै । जिन वाणीमें जिम आवै ॥ वै भवि सामायिक थारी । प्रथमही हं दोपनिवारी ॥३६॥
तहु कालकरे सामायिक । सचजीवनि को छलदायक ॥ सामायिक करत मंजी । उपचार मुनी समजानी ॥३७॥
सामायिक दगडूत करि है । उतकृष्ट देव पद धरि है ॥ अनुक्रम पावै निरवाण ॥ यों कलु फेरनजाय ॥३८॥
मुनिद्रव्यलिंग को थारी । सामायिक चल अनुसारी ॥ कहांलो करिये जु वडाई । नवशोकलग सो जाई ॥३९॥
चाते भवि जत लिहुं काल । धरिय सामाक चाल ॥ जातें फल पावै मोदो । न्यासिजाय करम अति खोदो ॥४०॥

अथ द्वितीय शिवाव्रत प्रोषधोपवास लिख्यते ॥ चौपाई ॥

सामायक अत कलौ बखानि । अब प्रोषध व्रतकी छति वानि ॥ एक मासमें परब जु चार । दुइआठे दुह चौदसभार ४१
 इनमें प्रोषध विध धिस्तरे । ते बहुकर्म निर्भरा करे ॥ वै जिन धर्मविष अति लीन । व श्रावक आचार प्रवीन ॥ ४२ ॥
 अथ प्राप्य की विधि सुनि होह । भाष्यो जिन आगममें जह ॥ साते तेरसिके दिन जानि । जिन श्रुत गुरु पूजाको वानि ॥ ४३ ॥
 पूजा विधि करि श्रावक सोइ । भोजन बला मुनि श्रवलोइ ॥ जिनमन्दिरे ते तव निज गह । एकठाय अणपीती लेह ॥ ४४ ॥
 मध्यान्हक सस्ये को धार । करे प्रतिज्ञा सुांविधि विचार ॥ पोइस पहर लोह मरयाद । लौविहार बांड मरयाइ ॥ ४५ ॥
 खादि स्वाद होह अरु पय । श्रुतीचार त सबहि तजह ॥ द्रुपटी धोवत त्रिधवत लेह । और वस्त्र तनमों तज देह ४६
 स्नानादि भूषण परिहरै । झंजन तिलक हुती नाहं करै ॥ जिन सान्दर उपबन् बज ठाहि । अथवा भूमिसानुहि जाहि ४७
 पोइस जाम ध्यान जो धरै । धरम कथाजुत तह अनुसरै ॥ पंच पाप मन बच कस तजै । श्रीजिन आज्ञा हिरदे धरि ४९ ॥
 धरम कथा गुरु सुखत सुन । आप कहै निज आतम मुने ॥ निद्रा अल्प पाबिली रात । बै नौमी पून्यो परभात ४८ ॥
 मरयादा पूरव गुण धार । जिन मन्दिर आवे निज द्वार ॥ द्वारा वेषण परिचित धार । खडोरहै निज घरके वार ॥ ४९ ॥
 पात्रदोन दे अति हरयाइ । एकाभुक्त करै सु खदाह ॥ पारण दिन पिबिली बा जाम । ज्यारु अहार तजै अभिराम ॥ ५० ॥
 इह उत्तुष्ट कलौ उपवास । करे कर्मगण के अति नाश ॥ सुर सुख लहि अनुक्रम सिव लहै ॥ सत्यवाइक इह जिनवर कहै ५१
 कहै मध्यम उपवास विचार । षट्कर्मपदेश अनुसार ॥ प्रथम दिवस एकांत करेय । धरी दोग दिनतं जललेय ॥ ५२ ॥
 जिन मन्दिर अथवा निज गह । प्रोषह द्वादश पहर धरेय ॥ धर्म ध्यान में वाराजाम । गमिहै घरके तजि सब काम ५३ ॥
 जाविधि दिवस धारणौ जानि । सोही दिन पारजै ब्रह्मान ॥ तीन दिवसलौं पालै शील । सोसुरके सुखगवे लील ५४ ॥
 जयन्त्रयास भवि विधिसें करी । प्रथम दिवस इह संख्या धरी ॥ पबिलो दिवस घड़ीदो रहै । तापीळे पाणी नहिं गहै ५५ ॥
 निशिकी शालाव्रत पालिये । प्रात समय पोसीही धारिये ॥ आठ पहर ताकी मरयाद । धरमध्यान जुत तजि परम द ५६

दियस पारखे निशि जल तजै । वासर तीन शील ब्रत भजै ॥ प्रोषथतो उच्छृष्टहि जानि । मध्यमजघन उपवास यखानि ॥५६॥
त्रिविधि वासकों जो निरवहै । सो भाखी सुरके सुख लहै ॥ अब याको जो है अतीचार । कहूँ जिनागम जे निरधार ५७

॥ अथ प्रोषथोपवास अतीचार ॥ छन्दचाल ॥

पोसी धरिहै जिहि भूपरि । देखै नहिं ताहि नजर भरि ॥ इह अतीचार इक जानी । दूजेको सुनो बखानी ॥ ५८ ॥
जेती पोसहकी ठाम । प्रतिलेखे नांही ताम ॥ दूपण लागै है जाको । सुनि अतीधारती जाको ॥ ५९ ॥
पोसो धरणकी चार । मोचै न मल मूत्र विकार ॥ मरजादा बिन सौं डारै । संथारो जो विसतरि ॥ ६० ॥
बठ उठै तजि ठामे । तीज दूपण को पायें ॥ पोसो धरता मन माहीं । उच्छ्वकौं धारै नाहीं ॥ ६१ ॥
विनु आदरही सौं ठानै । मरजादा मनमें आतै ॥ चौथो इह है अतीचार । अत्र पंचम सुनि निरधार ॥ ६२ ॥
पठि है जो पाठ प्रयाण । ठीक न ताको कछु जाण ॥ इह पाठ पढयो इक चाहीं । अब पढिहो एम कहांही ॥ ६३ ॥
ए अतीचार भणि पंच । भाषै जिन आगम संच ॥ पोसो जो भविजन धरिहै । इनको टालो सो करिहै ॥ ६४ ॥
फल लहै यथारत सोई । यायें कबु फेर न जोई ॥ प्रोषथ ब्रतकी यह लीक । मार्फक जिन आगम ठीक ॥ ६५ ॥
अरु सकल क्रीति कृत सार । ग्रन्थहू श्रावक आचार ॥ तामाहै भाष्यौ ऐशे । सुनियै ज्ञाता विधि जैसे ॥ ६६ ॥
उपवास दिवस तजि वीर । ब्रान्यो सचित्त जो नीर ॥ लेतें दूपण बहुथाई ॥ उपवास हया सो जाई ॥ ६७ ॥
पीवै सो प्रासुक करिकै । दुक्तियोजुह्वय मधि धरिकै ॥ वैहू विरथा उपवास । लेनो नहिं भविजन तस ॥ ६८ ॥
अरु सकतिहीन जो थाई । जलतें तन हू थिरताई ॥ ती अधिक उसन इम वीर । बिन हुकम किये जो नीर ॥ ६९ ॥
अन्नादिक भाजन करे । दूपण नहीं लागै अनरो ॥ ऐसो आवै जे पाणी । ताकी विधि एम बखाणी ॥ ७० ॥
उपवास आठमों वांटो । वहिहै इम जाणि निराटो ॥ इनमें आबी विधि जाणी । करिये सो भविजन प्राणी ॥ ७१ ॥
बंशो मन इहै न कीजै । प्रोषथ में कबहुं न लीजै ॥ पोसह बिन जो उपवासे । तामें ऐसी विधि भासे ॥ ७२ ॥

उत्तम फलकी जे चाहे । ते इहविधि नेम निबाहे ॥ उपवास दिवस नै नीर । सङ्कटह में तजि थीर ॥ ७३ ॥
 अब सुनहु कथन इक नीको । अति सुख करि ब्रत धरि जीको ॥ एकांत दिवसकी सांभ । धरिहु तिय दरव जलमांभ ७४
 प्रासुक करि पीवै नीर । तामै अति दीघ गहीर ॥ एकासण जब सुकराहि । जल असन लेई इक ठांहि ॥ ७४ ॥
 जिन आगम की इह रीत । उपरांत चलण विपरीत ॥ जल लेन सात्त ठहरायो । सबही मन योही भायो ॥ ७५ ॥
 तो दूजो दरव भिलाई । लैरो नहि योग्य कहांही ॥ ताको दूषण इह जानो । भोजन दूजा जिम खानो ॥ ७६ ॥
 भोजन जिहि धिरियां कीजै । पानी तव उसन धरीजै ॥ वैप्रासुक पानी लीजै । नहीं शक्ति जानि तजि दीजै ॥
 कुमती हुंढ्यादिक पापी । जिन मतते उलटी थापी ॥ हांडी को धोवण लेई । चावल धीवै जल लेई ॥ ७७ ॥
 तिन की प्रासुक जल भाखै । ले जाय सांभ की राखै ॥ एक तो जल का चीजानी । अन्नादिक मिलि तसु आनी ॥ ७८ ॥
 तामै घटि का दीय मांही । प्राणी निगोदियाथाही ॥ ताक अघ को नहि पार । भिथ्या मत भाव विकार ॥ ७९ ॥
 गाथाउक्तंच ॥ अन्नजलं किंचि ठिई । पञ्चखाणं भुंजणभिखल ॥ घड़ीदीय अंतरिया । णिगोइया हुंति बहुजीवा ॥ ८० ॥
 दोहा ॥ जोरोसह विधि आदरै । ते सुख पावै थीर ॥ प्रमाद सेवै ते सुगध । किम लहिहै भवतीर ॥ ८१ ॥

इति प्रोषधोपवास त्रिविध वा सामान्य वर्णनं संपूर्णं ॥

अथ भोगोपभोग तृतीय शिष्या व्रत कथन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

ब्रत भोगोप भोग जे धर । दीय प्रकार आपडी करै ॥ जिमरथाद मरण परयंत । नियम सकति माफिक धरिसंत ॥ ८२ ॥
 अन्नपान आदिक तंबोल । अंजन तिलक कुंकुमारोल । अंतर अरगजा तेल फुलेल । तेसहु वस्तु भोग के खेल ॥ ८३ ॥
 एक वारही आवै काम । बहुरिन दीखै ताको नाम ॥ ते सब भोग वस्तु जानिये । ग्रंथ कथन लखि इम मानिये ॥ ८४ ॥
 वस्त्र सकल पहिरनके जिते । निज वरपै आमूपण तिते ॥ रथ वाहन डोली सुखपाल । दृपभकूभ हयगय सुविसाल ॥ ८५ ॥
 वनिता अरु सन्ध्या को साज । भोजन आदिक वस्तु समाज ॥ वार वार उपभोग विजेह । सो उप भोग नहीं संदेह ॥ ८६ ॥

तिन दोन्युं में सकति प्रमाण । जपवानियम करै जो जान ॥ जनिम पर्यन्त त्याग धर्म जानि । वरसिमास प्रखिनियम वखानि ॥८७॥
दिनको पांच घड़ी मर्याद । करै सदैव तजै परमाद ॥ किये प्रमाण महा फल सार । तिन संख्या फल नहीं लगार ॥८८॥
दीहा ॥ इनहु भोग उपभोग के । अतीचार प्रणतेह ॥ इनहि टालि ब्रत पालि है । बरती आवक जैह ॥ ८९ ॥

भौलैषु संचित जो आंही । भोगन की बरहु जु मोंही ॥ उपभोग बसेन भषणें के । कुमादिग है दूषण मै ॥ ९० ॥
एह अतीचार मणिएक । दूजे सनि थरि सुविचिक ॥ भोजन पातरि परि आवि । अरु सचित थकी ठकि हंथावै ॥९१॥
अथवा बलादिक जानी ॥ थरि ठकि अर आणै प्राणी ॥ वंह दूजे दोष गणीजै । तीजो अर्व भवि सुकि लीजे ॥९२॥
जे सचित अचित बहु वंरहु । भलें मिलि जाल समस्त ॥ जाको लेकै भो गीजै । इह अंती चार गणि लीजे ॥९३॥
मर्याद भोग उप भोग । कीनी जो वस्तु नियोग ॥ तिहै जो लेय सिवाय । चौथो यह दूषण धाय ॥ ९४ ॥
कहुं कोरो कहुं यक सीजे । अथवा अस्यां गह लीजे ॥ लघु भलें लेंई अधिकाई । अति दुपकारी असन पत्राई ॥ ९५ ॥
दुहुं पंक अहार बु जानी । पंचम अती चार बैखानी ॥ भोगोप भोग ब्रत पारी । टाली इन कौ हित थारी ॥ ९६ ॥
दीहा ॥

कथन भोग उपभोग की । कीयो थयान्त सार ॥ आणै अतिथि विभागकी ॥ सुनिचो भवि निरधार ॥ ९७ ॥
इति भोगोप भोग शिक्षा ब्रत ॥

अथ चतुर्थ शिवा ब्रत अतिथि संविभाग कथन ॥ ॥ चौपाई ॥

प्रथम आहार दान जानिये । दुतीय दान उपद मानिय । तीजो शास्त्रदान है सही । अभय दान फुमि चीथो कही ॥ ९८ ॥
लहै अहार थकी बहु भोग । औपथ तें तनु होय निरोग ॥ अभय थकी निर भय पद पाय । शास्त्र वानतें ग्यानीथाय ॥ ९९ ॥
अथपातर कौ इनहु विचार । जैसे जिन आगम विस्तार ॥ पात्र रूपान्न अपात्र हुआण । दीजैजिम तिम करहु क्वाण ॥ १०० ॥

पात्र प्रकारं तीन जौनिये । उत्तम मध्यम जधन्ये मानिये ॥ मीनिवर आवेक दरशने धारं । कहै सुपात्र तीन विधिसारि
तीन तीन लिडुं भेद प्रमान । सुनहु विवेकी तास बखान ॥ उत्तम में उत्तम तीरेश । उत्तम में मध्यम है गणेश ॥ १ ॥
मुनि सामान्य अवर है जिते । उत्तम मध्यम जधन्य है तिते ॥ मध्यम पात्र तीनपरकारं । तिहमाहे उत्तम मुनिसारे ॥ २ ॥
पुल्लिक अचलि दुहुं ब्रह्मचार । अरुद समी प्रतिमा व्रत धार ॥ मध्यम साहि उत्तम जानि । मध्यम साहि मध्यम कहूवलानि ॥ ३ ॥
सात आठ नव प्रतिमा धार । मध्यम में मध्यम पातर सार ॥ पहिली से षष्ठी पर्यंत । मध्यम में पात्र जधन्य भणि सन्त ४
दरसन धारी जधन्य मभार । उत्तम कायक समकित धार ॥ जयोपशमी मध्यम गनि लेहु । जधन्य उपशमी जानी एहु ५
॥ दीश ॥

उत्तमपात्र सुतीनविधि, तिनही भेद नव नाम ॥ फुनि कुपात्र तिहुं भेद को, वरणन कहौं बखान ॥ ६ ॥

॥ छन्द चाल ॥

गुन मूल अठाइस धार । चारित तरह परकार ॥ मुनिवर परको प्रतिपाल । तप करे कठिन दरहंल ॥ ७ ॥
समकित सिब बीजन जाको । मिथ्यात उदे है ताको ॥ ऐसो कुपात्र तिक माहीं । उतकष्ट कुपात्र कह हीं ॥ ८ ॥
व्रत धर आवकहै केह । मध्यम कुपात्र भनि तेह ॥ गुरु देव शास्त्र भनि आनै । आपापरं कर्षण न जालै ॥ ९ ॥
चाहिज कहै मेरे ठीक । अंतर गति सदा अलीक ॥ तेजघन कुपात्र जानों । सरधानी मन में आनो ॥ १० ॥
दीश ॥

कहौ कुपात्र विशेषइह । जिनवायक परमान ॥ अवं अपात्रं के भेद तिडुं । सोधुनि लेहु सुजान ॥ ११ ॥

॥ छन्द चाल ॥

अंतर सम कित नहिं जाके । बाहिर मुनि क्रिया नहिं ताके ॥ विपरीत रूप नहिं धारी । जिहादिक लंपट भारी ॥ १२ ॥
उतकष्ट अपात्र जैलच्छिन । परखै अति परम विचच्छिन ॥ ऐसेही मध्यम जानो । समकित विनुव्रत मन आनो ॥ १३ ॥

तनु स्वैत बसन के धारी । मानै हम हैं ब्रह्मचारी ॥ दूजौ अपात्र लखि गीहीं । बुनि जयन्य अपातर जोहीं ॥ १४ ॥
 ग्रहपति सम बसन धराहीं । मिथ्या मारग चलवाहीं ॥ नर नारिकों निज पाय । पाड़ै अति नवन कराय ॥ १५ ॥
 वचन आय चिरंजी भाखै । मननै निज गुरु पद राखै ॥ मिथ्यात महाघट व्यापी । ए जयन्य अपात्र जे पापी ॥ १६ ॥
 बाहिज अभ्यन्तर खोटे । नित पाप उमावै मोटे ॥ श्रुत देव विनौ नहिं जानै । नव रसयुत ग्रन्थ वखानै ॥ १७ ॥
 रहलि है भवसागर माहीं । यामें कछु संशय नाहीं ॥ इनके वन्दक के जीव । दुरगतिमहि भ्रमहिं सदीव ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पात्र कुपात्र अपात्र के, भेद मने सब पांच । तिनकी साखा पंच दस, विहन कहे सब संच ॥ १९ ॥
 अब इनको आहारजू, श्रावक जिहि विधि दय । सो वखन संक्षेप तें, भवि चित धरि मुनि लेय ॥ २० ॥
 दोष द्वियालिस दालिकै, श्रावक कं घर माहिं । वरती जनिपजै असन, सुखकारी सक नाहिं ॥ २१ ॥

खन्द चाल ।

दिनपति की घटिकासात । चढ़िया श्रावक हरपात ॥ द्वारे वेषण की वार । फासू जल निजकर धार ॥ २२ ॥
 मुनिवर आयो पड़िगाहै । अति भक्तिवन्त उरमाहि ॥ दातारतने गुणसात । तामाहे है विख्यात ॥ २३ ॥
 फुनि नवथा भक्ति करेहि । अति पुन्य महा सञ्चैइ ॥ निज जनम सफल करि जानै ॥ बहुविधि मुनि स्तुति वखानै २४
 मुनिवर वन गमन कराई । पीछे आतिही सुखदाई ॥ भोजनशाला में जाई । जीमें श्रावक सुचिपाई २५ ॥
 जो द्वारापेपण माहीं ॥ मुनिवर नाहिं जोग मिलाई ॥ तो निज अलाभ करि जानै । चिन्ता मनमें अति आनै २६ ॥
 हिय में ऐसी ठहराय । हम अशुभ उदै अधिकाय ॥ करिहे श्रावक श्रवसास । अथवा रसत्याग प्रकास २७ ॥

सोरग ।

दान थकी फलहोय, जो उतकृष्ट सुपात्रकों सो बुनियो भवि लोय अति सुखकारी है सदा २८ ॥

सर्वथा ३१

तीर्थद्वुरदेवन को प्रथम आहार देय वह दान पति तदभव मोक्ष जाय है । पीछे दान देनहार द्वा को धरया सार
श्रावक सुव्रतधार ऐसो नर थाय है ॥ जो पै मोक्ष जाय तो तो मने न कहाया कहूं निरचयहूं नाहिं देवलोकको सिधाय है ॥
पायके अनेक रिद्धि नर सुआकी स्पृष्ट निकट सुभव्य निर्वाण पद प्राय है २६ ॥

उतकिष्टपात्रनिमें उतकिष्टतीर्थद्वुर तिनिदानको तो फल प्रथम वस्त्रानियो । अब उतकिष्टत्रिकमांही रहै मध्य कृनि
जयन्ति सुनीस दान फल ऐसो जानियो ॥ दानो द्वाव्रत धारी तिनही असन दिये कल्प वखेया सुरहेहै सही मानियो ॥
अवर विशेष कछु कहनो जरूर रह तेऊबुनो भव्य सुखदाई मनि आनियो ३० ॥

प्रथम मिथ्यात भाव मध्य बंध मानवके परथो पीछे द्वा पायव्रत धारी लयो है ॥ फनि मनिराजनिको त्रिविध
सुविधिजत दोष अन्तराय टालि असन सुदीयोहै ॥ तांह बंधसेती उतकिष्ट भोग भूमिजाय जगल्या मनुजथाय पुण्य उदे
कीयो है । तहां आय पूरी कर देवपद पाय अहो सुनिनको दान देलि ताको धनि जीयो है ३१ ॥

छल उतकिष्ट भोग भूमी क कछुकुओजों कहुं तीन पन्ल तहां आयु परमानिये ॥ कोमल सरल चित्त पाइये कल्प
निति दस परकार नानाविधि भोगविधि दानियं जुगल जनम थाय मातपिता खरजाय छीक औजमहीं पाय ऐसी विधि
मानिये ॥ निज अंगूठा को सुधारस पान करि दिनक ईस मांभक तनु पूनता ठानिये ३२ ॥
दोहा ॥

तीनदिवस वीते पछै, लघ बदरी परिमाण । लेय अहार सुखी महा अरु निहार नहिं जाण ॥ ३३ ॥
उत्तम पात्र आहारको दाता फल अति सार । पावे अचरज कछु नहीं, अब सुनियो निरधार ३४ ॥
कृत कारित अनुमोदना तीनहुं सम मुखदन । कही भली ताकी कथा कहौ यथा जिनवैन ॥ ३५ ॥

कृष्णय छन्द ॥

वज्रजंघ श्रीमती सर्प सरवरकैजपरि । चारण जुगल मुनिहि भक्तजुत दियो असनि परि ॥
तहां बिह अरु शूर नकुल बानर चहु' जीवहि । करि अनुमोदन वंश लिको सुख युगल अतीवहि ।
खरहोइ भुगति नर सुर मुखह पुत्र वृषभतीर्थशके । इई धरि उग्र तपकौ भए सिवतिय पति नववंसके ३६ ॥
वज्रजंघ नृप आप अवर श्रीमति त्रिया भनि । भोग भूमि है जुगल भुगति सुरखुलहि विविधिनी ॥
फुनि दिववासी देव नपति रिधि भुगति सुखदायक ॥ दशमै भव नृपजीव तीर्थङ्कर वृषभ सुखदायक ॥
श्रीमतीजीव शंयांसहु ऋषभनाथकौ दानदिय । दुहुपात्र दान पतित पवि शल करि होयसिद्ध सुख अर्पित लिय ३७

दोहा ।

कृतकारित अनुमोदि की कही सुनी बित धारि ॥ अति विशेष इच्छा सुनन महा पुराण मकारि ॥ ३६ ॥
इहां प्रसन कोऊ करै । मिथ्यादृष्टी कोय ॥ बाहिन आवक पद क्रिया ॥ कहीयभावत होय ॥ ३६ ॥
भाव लिंग मुनि तासयरि । जुगत आहारक नाहि ॥ सो मुककूं समभाय कहु । जिम रुंशय भिटि जाहि ॥ ३७ ॥
अथवा आवक दृग सहित किरिया पाव सार ॥ द्रव्य लिंग मुनि राज कौं ॥ देयक तर्ही आहार ॥ ३९ ॥

॥ छंद चाल ॥

ताके नेद त संदेह । अवमुनिये कथन सु एह ॥ जैसे मुनियो जिन बानी । तेसे में कहूं नखानी ॥ ४२ ॥
आवक की किरिया सार । मिथ्यात न छाढी लार ॥ चरया किरिसां मुनि राई । आई जो लेद घटाई ॥ ४३ ॥
मुनि ग्यानवान जो थोम । निर द्रोप आहार गहोय ॥ द्रव्य आवक कां जानि । ताकीतहि दूषत मान ॥ ४४ ॥
मुनिअसन नियम नहि एह । दृगव्रत धारिहि के लेह ॥ किरिया सुध जाको होई । तहलेई आहार संक खोई ॥ ४५ ॥
दरसन जुत आवक होई । द्रव्य मुनि आवे कोई ॥ जानै विनु देय अहार । ताकीं नही द्रोप लगार ॥ ४६ ॥

श्रावक जानें जो तेह । मिथ्या दृष्टी सुनि एह ॥ जाकों मूलन पहि गही । समकित गुण तामैं नही ॥ ४७ ॥
 निज दरशन को भवि प्राणी । दूषण न लगवि जाणी ॥ जिन कें नित इह व्यापार । चालै निज बुद्धि विचार ४८ ॥
 कोऊ बूझै फिर ऐसे । विनु ग्यान सरावग कैहे ॥ सुनि जेम परिचा जानी । यम हिरदै यान समानी ॥ ४९ ॥
 ऊतर सुनि अब अति ठीक । यामैं कछु नाहि अलीक ॥ प्रथमहि श्रावक गुण पालै । पातर लखि ले ततकालै ५० ॥
 अथवा ग्यानी सुनि पास । छति है तिन को परकास ॥ श्रावक श्रावक निज माहीं । लखि पात्र कुपात्र बताहीं ॥ ५१ ॥

। छपयः ।

अणगार उतकृष्ट पात्रकी जो विधिसारी । कही यथास्थताहि धार चित्त में अति प्यारी ॥
 सुन भवि अब धारि करहु अनुमोदन जाको । निरचय तसु अद्धान क्रिये सुप्रद है ताको ॥
 अब मध्य जघन्य दुहुपात्रको, कहे दान अर फल यथा । जिन आगम मध्य कही तिसीसुनो भवि इह कथा ॥ ५२ ॥

। श्रीपाई ॥

मध्यमपात्र सरावग ज्ञान । ज्योरो पूर्व कही वखान । इनमें भेद कहे हैं तीन ॥ उत्तम मध्यम जघन्य प्रचीन ॥ ५३ ॥
 श्रावक मध्यम पात्र मभार । भेद एकादश सुनहु विचार ॥ जाहियथा विधियोग अहार । त्यों श्रावक देहै सुखकार
 इनकी दान तयो फल जान । मध्यम भोग भूमि सुखान ॥ जलमत मात पिता मरिजाय । जुगल्यार्थीक जभाही पाय ५४
 तनु निज अमृत अंगुठा थकी । तीस पांच दिन पूरण्यकी ॥ उचित कोस दुदिन जाय । कहे आहार निहार न थाय ५६
 कल्पवृक्ष दशविधि के जास । नाना विधि दे भोग विलास ॥ दुयपल ज्ञायु भंजि सुर होच । मध्यपात्र फल जानो लोय ५७
 अर इह कथन महा सुखकार । ग्यारा प्रतिभा में निरधार ॥ आर्ग कहिये प्रथम सुजान । पुनरुक्तको दोष वखान ५८ ॥

दीक्षा ।

मध्यपात्र आहार फल, कही यथावत सार । अब जगन्य की पात्रविधि, सुनहु दान फल कार ॥ ५८ ॥
 चायक चाय उपशम तृप्ति, उपशम तीन प्रकार । इनही गृही आरदे, यथा योग्य सुखकार ॥ ५९ ॥

चीपाई ।

जघन्य पात्रके दाता जान । जघन्य युगलाया होत प्रमाख ॥ श्रोक जंभाई ते पितु माय । मरै आपपूरख तनु पाय ६० ॥
दिन गुणचासे कीस प्रमाण । आयु पल्य इक भुगतै जाण ॥ एक दिवस बीतै आहार । लेई बहेडा समन निहार ॥
कल्पवृक्ष दसविधि सुखकार । नाना विधि दे भोग अपार ॥ पूरण आयुकर विसुरथाय ॥ नाना सुख भुगतै अधिकाय ६१ ॥

दोहा ।

जघन्य दुपात्र आहार फल, कछो जेम जिन बानि । अरुँ कुपात्र आहार फल, सुनलो भवि निज कान ॥ ६२ ॥

चीपाई ।

द्रव्य मुनी आवकहू एह । विनु समकित किरियाहू तजेह ॥ वाहर समकित कीसी रीत । दरशन विनु सथा विपरीत ॥
इन तीन्हू कुपात्रको दान । देहि तास फल सुनहु सुजान । जाय कुभोग भूमिके माहिं । उपजै मनुष्यहीन अधिकहिं ६४
अवर सकलमानव की देह ! सुख तिरयंच समान है जेह । हथी घोड़ा बेल वराह । कपि गर्दभ कृकर मृग आह ६५ ॥
लंघकरण अरु इकटंगीया । उपबै युगल धरावर भिया । एक पल्य आयुर्वल पूर । माटी मीठा तूण अंकूर ॥ ६६ ॥
तिनहि खाहि निज उदर भरेय । रहै नगनही मन्दिर केह । मरि विन्तर भावन जो यसी । होभुगतै सुख सुखविधि जिसी

दोहा ।

अव अपात्र के दानते, जैसो फल लहवाय । तैसो कछु वरनन करुं, सुनहु चतुर मनलाय ॥ ६८ ॥
जो अपात्र को चिन्ह हैं, पूरव कछो वनाय ॥ दोष लगी पुनरुक्तको, यातै अवन कहाय ॥ ६९ ॥
सोरठा ।

जो अपात्रको दान, मूढ़ भक्तिकर देत हैं । सो अतीव अघ धान, भव अमिहैं संसार में ॥ ७० ॥

कन्दवाल ॥

जैसे ऊपर में नाज । बाहै विन उपजन काज ॥ मिहनत सब जावै यैहीं । कण नाजन उपजै क्यौहीं ॥ ११ ॥
 तिम भूमि अपातर खोटी । पावै विपदादिक मोटी । दुरगति सुखकारण जाणी । तिन दानन कबहु ठानी १२ ॥
 धेनुने तृण चरवावै । तावै तो दूधहि पावै ॥ अति मिष्ट पुष्ट कर भारी । बहुते जिय की सुखकारी ॥ १३ ॥
 तिम पात्रहि दान जो दीजे । ताको फल मोटो लीजे ॥ सुर गति में संसय नाही । अनुक्रम शिवथान लहाहीं ॥ १४ ॥
 सरपहि जो दूध पियावे । तापें तो विषको खावै ॥ सो इरे प्राण ततकाल । परगट जानी इह चाल ॥ १५ ॥
 जिम दान अपात्रह देई । वह भवते नरक लहेहि ॥ फिरि भवमें पंच प्रकार । ग्राह्येन करे अपार ॥ १६ ॥
 लखि एक जाति गुण न्यारे । तावो दूध भाति करारे । इकते गोलो बनवावै ॥ दूजं पातर घडवावै ॥ १७ ॥
 गोलो डालै जल माहीं । ततकाल रसातल जाहीं ॥ पातर जलतर है पारे । औरन को पार उतारे ॥ १८ ॥
 तिम भोजन तो इकसाहीं । निपजै गृहस्थ घर माहीं ॥ दीजे अपात्र को जेह । ताते नरकादि पड़ेह ॥ १९ ॥
 वह उत्तम पात्रह दीजे । सरथा रचि भक्ति करीजे ॥ इह भवते हूँ दिव वासी । अनुक्रमें शिवगति पासी ॥ २० ॥
 इक वाय नीर चलवाई । नीकर सांठा सिंचवाई ॥ सो नीव कटुकता थाई ॥ सांठा रस मधुर गहाई ॥ २१ ॥
 तिम दान अपात्र जो करो । दुखदाई नरक बबरो । भोजन उत्तम पातरको ॥ दीपक सुर शिवगति घरको २२ ॥
 इह पात्र अपात्रह दान । भाष्यो दुहवन को मान ॥ सुखदायक ताहि गहीजे । बुध जन अब ठील न कीजे ॥ २३ ॥
 दुखदायक जाण अपार । ततखिए तजिए निरधार ॥ फलपात्र अपात्र ठीक । इनमें कछु नाहिं अलीक ॥ २४ ॥
 जो धन घर में बहुतेरो । खरचनको मन है तेरो ॥ तो अंध कूप के माहीं । नाखै नहिं दोष लहाहीं ॥ २५ ॥
 दीयो अपात्र को सोई । भव भव दुखदायक होई । सरपहि पकड़ै नरकीई । काटे ताको अहि वीई ॥ २६ ॥
 इक वार तजै बहि प्राण । वाको दुख फेर न जाण ॥ अरु भक्ति अपातर केरी ॥ ताते फिर है भवकेरी ॥ २७ ॥
 यत अहि गहिवो नीको । खोटे गुलतें दुख जीको ॥ तातें पीटो परहरिये । नित सुगुर भक्ति उर धरिये ॥ २८ ॥

अद्विल्लं खन्द ॥

जो पात्तर के ताँई दाने दे मानते । अरु अपात्र को कवहु न दे निज जानते ॥ पात्र दाने फल सुरग क्रमाहि शिवपद लहे । भोजन दिए अपात्र नरक दुख अति सहे ॥ ८६ ॥ दया जाने मन आन दुखित जन देखिके । रोग ग्रसित तन जानि सकति न विशेष कै । मन में करुणा भाव विशेष अनाइके । यथा योग जिह काहे मुदेह बनाइके ॥ ८६ ॥

फलवर्णन चौपाई ॥

लहै संपदा भूपति तनी । नाना भोग कहां लों भणो ॥ उत्तम जाति लहे कुलसार ॥ इह फल पांतर दान अहार ८७ ॥ अतिमीरोग होय तनजास । हर और को व्याधि प्रकास ॥ अति सरुता औपय जान । दियो पात्रको तस फल जानल्य ॥ दीरघ आयु लहै सो सदा । जगत मान तिहकी शुभ मदा ॥ सुर नर दुखकी क्रितियकत्रात । अथय थकी तदभव शिवपात ८८ ॥ शास्त्र दान देवार्ते सही । भक्ति अनुक्रमते केवल लही । संपवर्षण विभवो अविचार । पाबे तीर्थकर पद सार ८९ ॥ दया दानते कीरति लहै । सगरे भले र यों कहे ॥ निज भांग माफिक गति थाय । दान दियो अहलो नहि जाय ९० ॥ दोहा ।

पात्र कुपात्र अपात्र को, पूरे भयो विशेष । अडे अन्य मत दान दस, कहे कथन अवशेष ॥ ९५ ॥

सवैया ३१

गऊ हेम गज गेह वाजि भूमि तिल जेह, क्रिया दासी रथ इह दस दान थाय है । इनको कथन करे गौहि सठ जानिलेह, दान को दियाय नरकादिक लहाय है ॥ हिंसादिक कारण अनेक पापरूप जाणि, अवर लिवैया दुरगति को सिथाय है । अतिही कलंक निन्द्याम पुन्यको न लेस मति मान लेन देन दुहकी तजाय है ॥ ९६ ॥

दोहा ।

दसौ दान अन्नमति तणा, जैनी जन जो देह । अन्न हिंसादि वहायके । कुगति तंका फल लेह ॥ ९७ ॥
इतिचतुर्थ शिष्यात्रत अतिथि संविभाग कथन संपूर्णम् ।

अथ आहार दानके दोष का व्योरा ।

खण्ड चालः ।

निपश्यौ ग्रह मध्य आहारः । तिह लय सचित परिहार ॥ अथवा सचित मिले जाई ॥ इह अतीचार कहवाई ॥ १८ ॥
 माशुक धियो जो दुर्व । ठांके सचितसौ सर्व ॥ दूजो गनिये अतीचार । याह कू बुधजन दार ॥ १९ ॥
 आपण महि देय अहार । औरन को कहै एम विचार । ऐही आहार दो भाई ॥ तीजो दूषण इह थाई ॥ २० ॥
 मुनिको कीइ देई आहार । चित में ईर्षा इह धार ॥ हम ऊपर है क्यों देई । चौथी इह दोष गनेई ॥ १ ॥
 द्वारावेण के कालै । गृह काज करत तहां हलै ॥ लंघिगण गेह में आवै । पंचम अतीचार कहबि ॥ २ ॥
 दोहा ।

इह अतिथि विभाग के, अतीचार भनि पांच । इनहि दाल भविजन सदा, जिन बच भाषे सांच ॥ ३ ॥
 व्रत द्वादश पूरण भये, पांच अणुव्रत सार । तीन गुणव्रत सार फनि, शिक्षाव्रत निरधार ॥ ४ ॥
 जैसी मति अवकास मुफ, कियो ग्रन्थ अनुसार । किसन सिंह कहि अत्र सुनी, कथन विधि परकार ॥ ५ ॥
 इति अतिथि संविभाग संपूर्णम् ।

अथ सतरानेमोंका व्योरा ।

दोहा ।

जे आवक आचारजुत, नित प्रति पाले नेम । मरयादा दस सात तसु, मन बच क्रम धर प्रेम ॥ ६ ॥

रत्नोक ।

भोजनेपट्टरसेपाने कुंजुमादिविलेपने । पुष्पताम्बूलगीतपु नृत्यादीवरुचर्यके ॥ ७ ॥ स्नानभूषणवस्त्रादी बाहने
 शयनासने । सचित वस्तु संख्यादौ प्रमाणं भज प्रत्यह ॥ ८ ॥

चौपाई

भोजन की मरयादा गहै । राखै जेती बारह लहै ॥ परके घरको जीभण जोहै । अत समय में राख्यौ होइ ॥ ९ ॥
 अन्नअवर नीठादिक वस्तु । भोजन माहे जान समस्त ॥ असन चवीनी अर पकवान । गिनती माफिक ख. य सुजान ॥ १० ॥
 षटरसमें जो राखै तजै । तिहि अनुसार सु निति प्रति सजै ॥ पानी सरवत दूधरू मही । दरव जते पीव के सही ॥ ११ ॥
 ता मधि बुध राखै जे दर्ब । तावितु सकल त्यागिए भव्व ॥ चोवा बंदन कुं कुम तेल । सुखधोबीरु अरगजा मेल ॥ १२ ॥
 औषध आदि लेप है जेह । संख्या राख भोगिएतेह ॥ पुष्प गंध सू धियै तेह । जाप समैं के राखे जेह ॥ १३ ॥
 कर मुकती जो फल हतनी । सचित्त मध्य तेऊ राखनी ॥ संचित्त मांहि राखी नहिं जाय । त्रिह दिन मूलन करहिं गहाय १५।
 पान छपारी डोडा गही । लोंगादिक मुख सोध जूकहो ॥ दालचीनी जावत्री जान । जातीफल तंबोल बखान ॥ १५ ॥
 पानआदि सचित्त नु थाय । सचित्त मांहि राखे तोखाय ॥ सचित्तमांहि राखत बी सरै । तोवह दिन खांती नहिं परै ॥ १६ ॥
 गीत नद कोतहल जहां । जेवो राख्यौ जैहै तहां ॥ मरयादा न उल्लेखै कदा । जो उप संग आयव्है जदा ॥ १७ ॥
 एक भेद यामे है ओर । आप आपनी वैठै ठोर ॥ गावत गीत तिया नीकलीं । इनकर हरष्यौ चित धरली १८।
 तामें दोष लगै अधिकाय । मध्यस्थभावरहै तिहिं ठाय ॥ पातर नृत्य अपारे मांहि । नटवानट जिहिं नृत्यकराहि ॥ १९ ॥
 वादोगर विद्या जे वीर ॥ मुकती राखै जावै धीर ॥ पर वनिताको तो परिहार । निज नियमे जिम कर निरधार २० ॥
 पांचों परबी में तोसाह । अवर दिवस जैसी चित गोह ॥ तजै सरवथा तोपर हरै । राखै अंगी कार सु करै ॥ २१ ॥
 सेवत विपै जीव की घात । उपने पाप महा उतपात ॥ जिह जागे राखै मरयाद । सो निरवाहै तजि परमाद ॥ २२ ॥
 स्नान कान राखै तो करै । सो हथकी कवहू नहिं टरै ॥ आभूषण पहिरै है जिते । घरमें और धरे है तिते ॥ २३ ॥
 पहरन की इच्छा जे होई । सो पहरे सिवाय नहिं कोई ॥ भूषण अन्य तनें की रीत । राखै मान्य पहर कर प्रीति २४ ॥
 कपडे अगले पहरे होइ । वेही मुखते राखे सोइ ॥ अथवा नये ऊजरे होइ । राखे सोपहरे मन दोइ ॥ २५ ॥

सुसुरोदिक मित्रन के लिए । नृपआदिक जे वकसीस किए ॥ मुकते राखे व्हे सो गहै । निज मरयादा की निरवहै ॥ २६॥
 पहरण पांवतणी पाहणी । तेल मस्तु निमहे गणी ॥ नई पुराणी निज परतणी । राखे सो पहरै इम भणी ॥ २७ ॥
 इत्यादिक बाहन जे ईइ । जो असवारी मुकती जोई ॥ काम बढै चढ़िहै तिह परी । और न काम नेम जो धरी २८ ॥
 सोबे कोपालिक जो जान । सोडतुलाई तक्रियो मान ॥ जेतो सयन करनको साज । अत धर खंब्या धर सिरताजन्त
 खाट पराई इक दुय चार । काम पढ़े छैठे छुर्विचार ॥ विनु राखै बैठे सो मन्ही । यद्द जिन आगम सांची कभी ॥ ३० ॥
 गादी गाऊ तक्रियो जाण । चौको चौकी माटी आण ॥ सिंहासण आदिक हँ जिते । अ.सन माहिं कहवै तिते ॥३१॥
 गिलम दुलीचा सतरंजणी । जानम सादी रूई तणी ॥ इन्हि आदि बिबोणा होय । आसनने गिनलीजे सोय ॥३२॥
 निज घरके अघवारे ठाम । मुकतै राखे जे जे धाम ॥ तिनपर बैठे वाकी त्याग । जाको व्रत ऊपर अनुराग ॥३३॥
 सचित वस्तुकी संख्या जान । धान वीज खल फूल बखान ॥ पाणी पात्र आदि लाख जेह । मिरच सोपारी डोढ़ाएह ३४॥
 सारे फल सगरे हँ जिते । सचित माहिं भाखे हँ तिते ॥ मरजादा मुकती जे माहिं । वाकी सबको भेटै नाहिं ॥ ३५ ॥
 संख्या बसत तणी जे धरे । सकल दरवकी गिणतीकरै ॥ खिचड़ी लाडू खाओ खीर । औषध रस चूरण गिन थीर ३६
 बहुत दरव मिल जो निपजह । गिणती माहिं एक गणिलेह ॥ राखै दरव जिते उनमान । सांभलग गिणिले बुधिमान ३७
 सांभ करै सामायक जबै । सतरह नेम संभारै तबै ॥ अतीचार लागै जो कोय । सक्ति प्रमाण दंडले सोय ॥ ३८ ॥
 बहुरि आखडी जे निशिजोग । धार निवाह करै भवि लोग ॥ इहविधि नित्यनियम मरयाद । पालैधरि भविचित्त अहलाद ३९
 महा पुन्यको कारण सही । इह भवते शुभ छुरगति लही । अनुकमते हँ है निरवाण ॥ बुध जन मन संसय नहिं आण ४०

दोहा ।

नित्य नेम सत्रह तणो, कथन कियो सुखदाय । अंतराय श्रावक तथा, अबभवि बुनि मन लाय ॥ ४१ ॥

। इतिसत्रह नेम संपूर्णम् ॥

अथसातअंतरायका कथन ॥ चौपई ॥

जिन मत अंतराय जे सात । आवक का भापा विख्यात ॥ रुंधर देखिवो नाम बुनेह । तबबुधजन आहार तजेइ ४२ । मांस नजर देखे छन नाम । भोजन तजै विवकी राम ॥ नैनन देखे आलो चमं । आसन तजे उपजै बहु धर्म ॥ ४३ ॥ हाड राघ अरु मूर्खजीव । नजर निहार अरण्य सुनलीव ॥ ततपिण्य अब खांदि सो देइ । अंतराय पालक जनजेइ ॥ ४४ ॥

दोहा ।

सोह करे जिह वस्तुकों, प्रथम हसों फिर कोइ । सोले थालो में धरे, अंतराय जो होय ॥ ४५ ॥
श्लोक एक में सातए, कलौ सबन को भंव । तिह सिवाय धाये अवर, सोख्योरो बुनिलेव ॥ ४६ ॥
चंडालादिक नर जित, हीन करम करतार । तिनहि लिखित वचनहि छनत, अंतराय निरधार ॥ ४७ ॥
मल देखत फुनि नाम बुनि, असन तुरत तजि देह । सोब्रत धारी आवक सही, अन्य दुष्टतागेह ॥ ४८ ॥
जिन प्रतिमा अरु गुरुनकों, कष्ट उपद्रवथार्थ । सुनि आवक जन आसन तज, उपवासदि कराय ॥ ४९ ॥
पुस्तादिक जल अगनि को, उपसंगंहूवो जान । भोजन तज फुनि करय भवि, उपवासदि वखांन ॥ ५० ॥
नित प्रति आवक को कहै, अंतराय तहकीक । पालें वे शुभगति लखै, यह जिन मारगठीक ॥ ५१ ॥
इति अंतराय समाप्तम् ॥

अथ सात परकार मौन ॥ दोहा

मौन जिनगम में कहौ, सात प्रकार वखान । तिनको वरनन भुजिक जन, सुन मन वच क्रम ठान ॥ ५२ ॥
चौपई

प्रथम मौन जल स्नान करत । दूजी पूजा श्री अररहत ॥ भोजन करता बोले नहीं । चौथी सतवन पढते कही ५३ ॥
सेवत काम मौन को गहै । यही वचन जिन आगम कहै ॥ मल मूत्रदि तपै जिहियार । एलखि सात मौन निरधार ॥ ५४ ॥

अदिवल ।

ढादशांग मयअंक सकल जानो सदा । असन स्थान मलमूत्र अवर तिय संग सदा ॥
वरण उचार करणन भाष्यो जैन सै ॥ यातें गहिये मौन सपत विरियां सभै ॥ ५३ ॥

॥ चौपाई ॥

मौन बरत के धारक जीव । चष्टा इतनी न करि सदीव ॥ भौह बड़ाइ जेव टिमकारि । करै जु सैन्याकाम विचारि ॥ ५६ ॥
सीस इलाय करै हुंकार । खांसै संखारै आधिकार ॥ कर अंगुल ते सैनवताय । अथवाअकों में लालिवाय ॥ ५७ ॥
इतनी किरिया करिहै सोय ॥ मौन बरत तसु मेलो होय ॥ अर जो सैन समस्याकरी । मतलब सम जैनहिं लिहिं धरी ॥ ५८ ॥
मनमै अशुलायर है क्रोध । क्रोध थकीनासै छुभ बोध ॥ यातें जे भविजन मति मान । मौन धरी आगम परवान ॥ ५९ ॥
अरु तिह समय करै सुभाब । तातें कहै पुन्य बड़ाव ॥ पुन्य थकी लहि है छरप्रान । यापैं कहु संके नहीं आत ॥ ६० ॥

अंतराय संपूर्णम् ॥

अथसंन्यासमरणकी विधि ॥

सवैया । ३१

दुग्धधारी आबक व्रत पालै पीछेही संन्यास सहित अतकालतजे निज प्राणही । संन्यास प्रकार दोइ ए कहे कपाय
नाम दतिय आहार त्याग प्रागट वखानही ॥ आराधना ब्यारि भावेदरसन पथमदूजी शान तीजी चरण पिण्डपतुप जानही
जैसी विधि कपाय संन्यास को बिचारै जैसे कहूं भव्य सुनि मनमाहि डीक जानही ॥ ६१ ॥

दोहा ।

सकल स्वजन पर जननिते । मन वच काय त्रिगुण्ड ॥ सत्य त्यागि क्षिप्त है तिया । करि परिणाम विमुक्त ॥ ६२ ॥
अति नजीक निजमरन लखि । अनुक्रम तज्य अहार ॥ पाळें अनसन होय कै । तियम असन बहुकार ॥ ६३ ॥

चार आराधन को तबै । आराधै भवि सार ॥ दर्शनज्ञान चरित्र फुनि । तप द्वादश विधि सार ॥ ६४ ॥
देव शास्त्रि गुरु ठीकता । तत्वारथ सरधान ॥ निस्संकादि गुरु जो सहित । लखि दर्शन मति मान ॥ ६५ ॥

सर्वथा । ३१

धरम में संका नांहि निस्संकिंत नाम ताहि वांछति रहित निकान्त गुण जानिये । ग्लान त्याग निरविचिकित्स देव
गुरु श्रुत मूढ, तात बैवासौ अमोढ्यज्ञान मानिये । परदोष ढाँकै उपगूहन धरैया सोई अष्टकों स्थापै स्थिति करण
बलानिये । मुनिगृही धर्म को जु कष्ट दारै वात्सल्य है मारग प्रभावना प्रभावत प्रवानिये ॥ ६६ ॥

सन्धास पर ग संपूर्णम् ।

॥ अथ अष्टप्रकार ज्ञानको आराधना ॥

दीहा ।

आठप्रकार सुज्ञानको, आराधै मति मान । तस वरणन संज्ञेपते, कहे ग्रन्थ परमान ॥ ६७ ॥
प्रगट वरण लघु दीवं जूत, करि विगुद्ध उपचार । पाठ करे सिद्धांत को, व्यंजन ऊर्जित सार ॥ ६८ ॥
आगम अथ मुजाणि कै, सुद्ध उचार करेहि । अथ समस्व संदेह विनु, जो सिद्धांत पढ़ेहि ॥ ६९ ॥
अर्थ समग्र बुनाम तसु, ज्ञानि लेहु निरधार । सब दारथो भय पूरण को, आगे मुनहु विचार ॥ ७० ॥
व्याकरणादि अर्थको, लखि विनाम अभिधान । अंग पूर्व श्रुत सकल को: करे पाठ जे जान ॥ ७१ ॥
पूर्वान्हिक मध्यान्ह फुनि, अपरान्हिक तिहु काल । विनु आगम पढ़िये नहीं, कालाध्ययन विसाल ॥ ७२ ॥
सरस गरिष्ट अक्षरको, तज करि आगम पाठ । गुण उपधान सम्यद्धि इह महा पुन्यको पाठ ॥ ७३ ॥
प्रथम पूज्य श्रुत भक्ति युत, पढ़ि है आगम सार । सुखकर जानो नाम तसु, प्रगट विनयआचार ॥ ७४ ॥
गुरु पाठक श्रुत भक्ति युत, पठत विना संदेह । गुर्वंधत पन्धव प्रगट ॥ सत्यनाम सुसंदेह ॥ ७५ ॥

पूजा आसन मान बहुत, चित धरि भक्ति प्रसिद्ध । श्रुत अभ्यास इकीलिये; सो बहु मान समृद्ध ॥ १६ ॥

इति अष्टप्रकार-ज्ञानको आराधन संपूर्णम् ।

अथ पंचमहाव्रत तीनगुप्त पांच सुमति ये तेरह विध चारित्रिका वरणन ॥

अद्विष्टल ॥

धरत अद्विष्टा अनृत अचौर्ये तीसरो । ब्रह्मचर्ये व्रत पंचम आकिंचन खरो । मन वचन तिष्ठ गुपति पंचसुमति
जु सही । ए साधन आराधन तेरा विधि कही । १७ ॥ अन्नसन आमोदर्य वस्तु संख्या गनी । रस परत्यागी रुचिवकत
सध्यासन भनी । काय क्लेश मिलि वह तप वाहिज के भये । षट् प्रकार अभ्यन्तर आगम वरणये ॥ १८ ॥ प्रायश्चित
अरु विनय वैयावृत जानिये । स्वाध्यायक व्युत्सर्ग ध्यान परमाणिये । मिलि वाहिज अभ्यन्तर बारा विधि लिखी ।
तप आराधन एह जिनागम में अस्ती । १९ ॥

दोहा ।

दरसन ज्ञान चारित्र तप, आराधन व्यवहार । अति समय भवि व्रती, सुरसुख शिव दातार ॥ २० ॥

इति तप १२ चारित्र १३ संपूर्णम् ॥ व्यवहार आराधना संपूर्णम् ॥

निश्चै आराधना लिख्यते ॥

दोहा ।

अब निश्चै आराधना, वरणो चार प्रकार । आराधक शिव पद लहै, धामि केर न सार ॥ २१ ॥

सवैया ॥ ३१ ॥

आत्म के ज्ञान करि अष्ट महागुण धर, दरसन ज्ञान सुख बीरज अनन्त है । निश्चै न येन आठ करमनि सो
विमुक्त ऐसो आत्मा को जानि कहिये महंत है ॥ ताहि सुधी चेतन उपरि प्रदः रुचि परतीतचित अचल करत जे वे

सन्त हैं ॥ निश्चय आराधना कही है दर्शन याहि भावे अन्त समय इकेवल लहेत है ॥ ८२ ॥ पुनः ॥ निज भेद ज्ञान करि बुधां तम तत्त्वनिर्को चेतनं अचतनं स्वकीय परमाणी है ॥ सप्त तत्व नव पदारथ पट् द्रव्य पचासति काय उत्तर प्रकृति मूल जानी है ॥ इनको विचार वारंवार चित्त अवधार ज्ञानवानं सुधचतना को उरि आन्ति है ॥ संन्यास समये अन्तकाल ऐसे भाई ऐलो निश्चय आराधना बुबोध यों वखान है ॥ ८३ ॥ पुनः ॥ प्रथमहि अठहिस मूल गुण धार पंचप्रकार निरग्रंथ गुण हिय धारिये । सत्ताइसपंचइन्द्रिनके विषयोंको त्याग बाहिज अभ्यन्तर परिग्रहको ठारिये । सङ्कल्प विकल्प मनते सकल तजि आत्मीक ध्यानते बुधात्मार्यों धारिये । परकरमादि सेती जुदो यासोंकमंजुदो निश्चय चारित्र यों आराधना विचारिये ॥ ८४ ॥

अडिल्ल ।

जो कोऊ नर मन में इच्छा धरतु है । फिरि परिणाम सङ्कोच निरोधहि करतु है ॥
सो आराधन निश्चय नय परमानिये ॥ तप इच्छादि निरोध यही मन आनिये । ८५ ॥

दोहा ।

निश्चै चहुं आराधना, ग्रन्थ प्रमाण वखान । किसनसिंह धरिहै सुधी, सो शिव लहे निदान ॥ ८६ ॥
ए चहुंविधि आराधना धरे कौन पसताच । सो भविजन सुनिलीजिये, मन बच कुथ करि भाव ॥ ८७ ॥

अडिल्ल बंध ॥

जो कोऊ उपसर्ग मरण सम आय है । कै दुःखतपई कबू कारण पाय है । जरा अधिक बल जर जर संक न सहे तबै ॥ कै तत् रोग अपार मृत्यु सम दुख जबै ॥ ८८ ॥ इतने जोग मिलाय उपाय न कछु बहे ॥ मरण निकट निज ज्ञानि विचारे मन तहे ॥ ध्याय आराधन धर्मनिमत तिनकों तजै ॥ सोनर परम सुजान स्वर्ग शिवसुख भजे ॥ ८९ ॥

आराधना के अतीचार ॥

बंदचाल ॥

संलेषण की जो चार । जीवनकी आसा धार ॥ लोगनि के मुख अधिकाई । निज महिमां लखि हरषाई ॥ ९७ ॥
 निजको लखि दुख अरलोक । करिहैं न प्रतिष्ठा थोक ॥ महिमा कछु छुनय न कांनि । मरवो जवही मनआंनि ॥ ९९ ॥
 मित्रनि सो करि अति नेह । पूरव क्रीडा की जेह ॥ करियादिगित्र जुत रागै । अतिचार तृतीय सुलागै ॥ ९२ ॥
 भुगत्या सुख इह भवमाहीं । निज मन ही यादु कराही ॥ चौथो अतीचार छजानी । पंचम छुनिये भवि प्रार्थि ॥ ९३ ॥
 संलेषण धारि जान । मन में इन करय निदान ॥ हूँइद्रतणो पद पाऊं । मस्तक किनही नविनाऊं ॥ ९४ ॥
 चक्रवर्ती संपदा जेती । त्रिय सुत जुत न्है मुक्त तेती ॥ ऐसो जो करय निदान । तप बुरतरु देहौं दान ॥
 संलेषण पण अतिचार । भाष्यो इन को निरधार ॥ ए टालि संलेषण कीजै । ताकी फल बुर सिव लीजै ॥ ९५ ॥

सवेया ॥ ३१

अन सन तप नाम उपवास कीजै जाको आभोदर्य तप लघुभोजन लहीजिए । वस्तु परिसंख्या जे तें द्रव्यनकी संख्या
 की जे रस परत्याग तैरस छांडिदीजिए । विवक्त संख्यासन तत धारि भवि मुनि कायकेश उग्रतप भ्रम कों गहीजिए ॥
 ए ईपटतप कहे वाहिज के आगम में सुर सिव सुखदाई भवि वेग कीजिए ॥ १६ ॥ प्रायश्चित्तवहै दोष गुरु प
 खमाय तव विनैतप गुण बृद्धि को जोविनो कीजिये ॥ बैय्यावृत्त तप गण धारी बैय्या वृत्तकीजै स्वाध्याय जिनागमत्रिकाल
 में पहीजिये ॥ व्युत्सर्ग खड़ाहोय ध्यान थरिबे कों नाम ध्याननिज आतमीकगुण निरस्त्रीजियै ॥ वाहिज अभ्यं-
 तर के तप भेद जानि पालि अनुक्रम भि याँतै गुण थानक चढ़ीजियै ॥ ९७ ॥

दोहा ।

द्वादश वप वरनन कियो । जिनवर भाष्यो जेम म कछु वियोग सम भावको । कह्यथा मति तेम ॥ १८ ॥
 इति द्वादश तपः ।

अथ सम भाव कथन ॥

सवैया ॥

अनंतानु बंधी क्रोध पाषाणकी रेखा सम मान थम पाहन समान दुखदाय है । बंस विहावत माया लोभ लाख रंग जानि इनके उदैते जीव नरक लहाय है ॥ जब लग अनंतानुबंधी चौकड़ी कों धरे जनम प्रयंत जाको रंग न तजाय है । याके जोरसेती जीव दर्शन सुधताकी लहै नाही ऐसे जिनराज जी वताय है ॥ ९६ ॥ क्रोध जो अप्रत्याख्यान हल रेखावत जानि मान अस्थि थम मानि दुष्टता गहाय है माया अजा भृंगजानि लोभ है मजीठ अङ्ग इनके उदैते जीव तिरयच थाय है जबहीअप्रत्याख्यान चौकड़ी को उदै होय जाकै एक वरष लों धिरता रहाय है ॥ तोलों याको बल जौलोंआवक के व्रत निकों धरसकै नाहि जिनराज जी वताय है ॥ ७०० ॥ प्रत्या ख्यान क्रोध धूलि रेखा परमान कही मान काठ थम माया गोनूत्र समान है ॥ लोभकछु भाको रग ए ई चारथी प्रत्याख्यान इनके उदैते पावै नरक पद थान है ॥ प्रत्याख्यान कपाय प्रगट उदै होत अति च्यारि मास पर अंत रहै जानी जान है ॥ याही को विपाक सोन सकति प्रकट होत मुनि राज व्रत धरि सकैन प्रमान है ॥ १ ॥ संबलन क्रोध जल रेखावत कही जिन मान बेतलता कीसी नवनि प्रधान है ॥ माया है चमर जैसी लोभ हरदीको रंग इनके उदैते पावै सुरग विमान है ॥ चौथीहु कषाय चौकरी को उदै पाय ताके च्यार पक्ष तांज जाकै प्रबल महान है । यथाख्यात चारित्र कों धरिसकै नाहि मुनि तीर्थकर गोत्रहू जो बांधे यों बखान है ॥ २ ॥

चौपाई ।

सोबह कपाय चौकरी च्यार । नीकषाय नव नाम विचार ॥ हासि अरति रति सोक बखान । भय जुगुप्सुसा ए पटुजान ॥ ३ ॥ वनितां पुरुष नपुंसक वेद । ए नव मिले पचीस जु भेद ॥ इनको उपसम करिहै जद्वै । समाकत द्वियै सुभ करिया तवै ४ ॥ इति समभाव संपूर्णम् ।

अथ एकादश प्रतिमा वर्णन लिख्यते ॥

चौपाई ॥

अत्र एकादश प्रतिमा सार । जुदी जुदो तिनको निरधार ॥ सो प्राण्यो आगम परवान । सुनि चित्तधारी मरमसुजान ॥ १ ॥
 दर्शन व्रत सामाधिक कही । पौसह सचिन्त्याग विध गही ॥ रयनि असन स्यागी ब्रह्मचार । ब्रह्मआरभको परिहार ॥
 नवमी परिग्रहको परिमान । दशमी आद्य उपदेशन दान ॥ एकादशमी दीय परकार । जुल्लक दुतिय अन्नलि व्रत धार ॥
 श्रैणिक पूरै गौतम तणी । दरसन प्रतिमा की विधिभणी । गौतम भाष्यो श्रैणिक भूप । दरशन प्रतिमा आदिसरूप ७
 एकादशकी जो विध सार । जुदी जुदी कहिहो मिरधार ॥ याहे सुनि करि धरिहै जेय । श्रावकव्रत धारीहै सोय ८ ॥
 प्रथमहि दरशन प्रतिमा सुनो । त्यों निज आतम सहजै मुनो ॥ दरशन मोक्ष वीजहै सही । इहविधि जिन आगममें कही ९
 दरशन सहित मूल गुण धरे । सात दिवस यन वचन न हरे । दरशन प्रतिमाको छविचार । कछु एक कहौ सुनो सुखकार १०
 देव न मानै विनु अरहन्त । दसविधि धर्म दयाजुत सन्त । तपधर मानै गुरु निग्रन्थ । प्रथम सुध यह दरशन पंथ ११ ॥
 संवेगादिक गुण जत सोय । ताकी महिमा कहीहै कोय ॥ धरम धरमके फलको लखै । सो संवेग जिनागम अखै ॥ १२ ॥
 जो वैराग भाव निरवेद । गरहा निन्दाके दुइ भेद ॥ निज चित निंदै निंदा सोय । गरहा गुरुद्विगजा आलोय ॥ १३ ॥
 उपसम जे समता परिणाम । भक्ति पंच गुरु करिए नाम ॥ धरम धरमो सो अतिनिह । सोवाखल महागुण गेह ॥ १४ ॥
 अतुंकपा नितिही चित रहै । एव सुगुण जो समकित रहै । दरशन दोपलगे पणवीस । सुनियो जो कथितागणईश १५
 तीन मूढता मदवञ्जान । अर अनायतन पट विधि ठान ॥ आठ दोप गंकादिक कही । दोप इते तजि दरशन गही १६
 भो श्रैणिक छन इस संसार । जीव अनन्त अतंती वार ॥ सीसमुडाय कुतप बहुकीयो । कंस लोंच अर मुनिपद लीयो १७
 कीये अनन्तकाल बहु खेद । आतम तत्व न जानेंउ भेद ॥ जवलों दरसन प्रतिमा तणी । प्रापतिभई न जिनवर भणी १८
 तातै फिरयो चबुंगति माहि । फुनिभवंदधि भ्रमिहै सकनाहि । प्रवर्तेन कीये बहु वार । फिरिहै जिसके नहि पार १९ ॥

आठ बूलगुण प्रथमही सार । बरनन कीयो विविधि परकार ॥ तातैं कथन कियो अब नाहि । कहै दोष पुनरुक्त लगहि ॥२०॥
 कुविसन सांत कहीं विसार । लंबा मांसभला बो आविचार ॥ उरापान चोरी आखंड । अरु बेश्यासों करिये भेट ॥२१॥
 इनमें भगन होइ करि पाप । फले भुगते लही अति सन्ताप ॥ तिनके नाम सुनो प्रतिमान । कहिहैं यथाग्रन्थ परिमाण ॥२२॥
 पांडु पुत्रजे खेले जुवा । पांचुराज्य अष्ट ते जुवा ॥ बारह वरष फिरे वनमाहि । असन वसन दुख भुगतं ताहि ॥२३॥
 मास बुवधराजा बक भयो । राजअष्टकै नरकहि गयो ॥ तहां लोहे दल पंच प्रकार । कविचन कहिसकै विसतार ॥२४॥
 प्रगट दोष मदिराते जान । नाश भयो यदुबंश बखान ॥ तपधर अरु हरि बलिनीकले । वाकी अंगान द्वारिका जले ॥२५॥
 वश्या लगन करि हित लाय । चारुदत्त श्रेष्ठी अधिकाय ॥ कोडि बत्तीस खोई दीनार । द्रव्यहीन दुखसहै अपार ॥२६॥
 षट्पंडी छभूमि मतिहीन । विसन अहेडा में अति लोन ॥ पाप उपाय नरक सो गयो । दुख नानाविधि सहतो भयो ॥२७॥
 पर वनिताकी चोरी करी । रावण प्रति हरि निज मति हरी ॥ रामरुहरिसों करि संग्राम । मरि करि लहों नरक दुखधाम ॥२८॥
 पर युवतीको दोष महन्त । दुपदसुता सों हास्य करन्त ॥ कीचक्र फल पायो ततकाल । रावणनेहु गनिये इहचाल ॥२९॥
 आठ मूल गुरु पाले तेह । विसन सातको त्यागी जेह ॥ अरु सम्यक बुद्धता धरै । पहिली प्रतिमा तासों परै ॥३०॥

दोहा ।

प्रथम प्रतिज्ञाइह कही, आवक के मुख जान । अब दूजी प्रतिमा कथन कछु इक कहों बखानि ॥ ३१ ॥

छन्दबाल ।

तह पांच अणुव्रत जानो । गुणव्रत फुनि तीन बखानो ॥ शिष्याव्रत मिलिकै च्यारी । दूजी प्रतिमाको धारी ॥३२॥
 वाराव्रत बरनन आगे । कीनो चित धरि अमुरागे ॥ पुनरुक्त दोष तैं जानी । दूजा नहि कथन कथानी ॥ ३३ ॥
 तीजी प्रतिमा सोभायक । भविजनको सुर शिवदायक ॥ आगे वारा व्रत माहीं । बरननकीनो सक नाहीं ॥ ३४ ॥
 चौथी प्रतिमा तिहि जानो । प्रोपथ तंस नाम बखानो ॥ द्वादशव्रत मधि दरसाव ॥३५॥

पंचम प्रतिमा बड़भाग । मुनि सचितकुरी परित्याग ॥ काकी जल कोरो नाज । फल हरित सकल नहीं काज ॥३६॥
 सब पत्रशाक तरुपान । नागर बेलि अघथान ॥ सडुकंदमूल हैं जेते । सुके फल सारे तेते ॥ ३७ ॥
 ऊरु वीज जानिये सारे । माटी झरु लूण विचारे ॥ करित्याग सल्लित ब्रत धारी । पंचम प्रतिमा तिहिंपारी ॥३७॥
 दिन चढे बड़ी द्रोय सार । पछिलो दिन ब्राकी धार ॥ इतने मधि भोजन करिहे । बड़ी प्रतिमा सो धरिहे ॥३८॥
 मर्यादा धरवि आहार । चारबौ को करि परिहार ॥ तियको सेवे दिन तार्ही ॥ बढी प्रतिमा सो धरंही ॥३९॥
 प्रतिमा बहलौ जो जीव ॥ समकित जत धरै सदाहि ॥ तिह श्रावक जघप्यु छजाणि । भवै इम जितवर वाणि ॥४०॥
 श्रेणिक नूप प्रसन कराहीं । श्री गीतम गणधर पाहीं ॥ ब्रह्मचर्य नाम प्रतिमाको । कहिये प्रभु कथन सु ताको ॥४१॥
 छनिये अब श्रेणिक भूप । सप्तम प्रतिमा जो सरूप ॥ मन् क्रम वच धारि त्रिमुख । तर्वाविधि जो शील विबुद्ध ॥४२॥
 निज पर वृनिता सब जानी । आजन्म परंजुतजानी ॥ अब नत्र विधि शील सुनीने । जितही तनु हृदय गणीजे ४३॥
 मानपणी सुहृत्तिय जाणी । तिरयचणी त्रितय वखाणी ॥ ये तीनों जेतन नाम । मन क्रम वच तजि दुखधाम ॥४४॥
 प्रापाण काठ चित्राम । तजिये मन वच परिणाम ॥ नव विधि ब्रह्मचर्य धरीज । सप्तम प्रतिमा आचरीज ॥४५॥
 निज घर आरम्भत जई । परकीं उपदेश न देई ॥ भोजन निज पर घर माहीं । उपदेश्यो कबहुंन खाहीं ॥ ४६ ॥
 व्यापार सकल तजि देई । सो स्वर्गादिक छल लेई ॥ प्रतिमा इह अष्टम नाम । आरम्भ त्याग अभिराम ॥ ४७ ॥
 नवमी प्रतिमा मुनि जान । नाम जु परिग्रह परिमान ॥ निज जनत वसन धराहीं । पठने को पुस्तक ठाहीं ॥ ४८ ॥
 इन दिन सब परिग्रह त्याग । मध्यम आचक बड भाग ॥ दिवलातत्र अरुकापिष्ठ । तह लौ सुख लहै गरिष्ठ ॥४९॥
 प्रतिमा अनुमति तस नाम । दशमी दायक बुखधाम ॥ उपदेश निज घरि परिग्रह । लेजाय असम को जेह ॥५०॥
 तिवकं सो भोजन लेई । उपदेश्यो कबहु न खैंहै ॥ निज परिधुन परजन सारे । उपदेशन पाप उचारे ॥ ५१ ॥
 ताकी परिग्रह मुनि लेई । पीबी कपडल सु धरई ॥ कोपीन कणगती जाके । बह हाथ वसनफुनि ताके ॥५२॥

एती परिग्रह मरजाद । गहि है न अवर परमाद ॥ एकादशप्रतिमा धरै । भाखै जिन दुय परकारै ॥ ५३ ॥
 प्रथमहि तुल्लक ब्रह्मचार । उतकिष्ठ अबल निरधार ॥ तुल्लक संख्या परमाण । कपडो षट हाथ उजाण ॥ ५४ ॥
 इकपटो न सीयो जाकै । कोपीन कण्णतीलाकै ॥ कोमल पीछी कर धारै । प्रवि लेखिर भूमि निहारै ॥ ५५ ॥
 सोचादि निसिच कै काजै । कर्महल ताकै दिग वाजै ॥ आहार निमित्त तसुजांनी । भ्रुकतेघर पंच वस्त्रानी ॥ ५६ ॥
 उतकिष्ठ अल्प ब्रतधारी । जिनकी विधि भाज्यो सारी ॥ मठ मंडप वन के माहीं । निस दिन धिरता उहराहीं ॥ ५७ ॥
 कोपीन कण्णगती जाके । पीछी कर्महल है ताके ॥ परिगह एतोही राखे । इय कथन जिनागम भाखे ॥ ५८ ॥
 भोजन सो करय उदंड । घर पंच तणी थिती मंड ॥ चित धरम ध्यान में राखे । आतम चितवन रस चाखे ॥ ५९ ॥
 सुनिये अणिक भूपाल । दर्शन प्रतिमान विसाल ॥ तिहविनु दस प्रतिमा जानी । निरफल भाषी जिन वाणी ॥ ६० ॥
 वासन की वोलि करीजै । ऊपराउपरीज घरीजै ॥ नीचै हुई जर जर वासन । उपर ले भाजनकी आसन ॥ ६१ ॥
 सब फूटि जाय छिन माही । समरथ विनु कवन रखांही ॥ प्रथमहि दर्शन दिद्व कीजै । पीछै ब्रत और धरीजै ॥ ६२ ॥
 एकादश प्रतिमासारी ॥ ताकी गति छनि छलकारी ॥ जाये षोडशमें स्वर्गं । भवदुइ तिहुं लहि अपवर्गं ॥ ६३ ॥
 दशमी प्रतिमा को धारी । तुल्लक अरु अवल विचारी ॥ उतकिष्ठ सरावक गृह ॥ भाषे जिन मारग तेह ॥ ६४ ॥

दोहा ।

प्रतिमा ग्याराको कथन, जिन आगम परमाण । परिपूर्णकीनों सवै, किसनसिघ हित जाण ॥ ६५ ॥

इतिप्रतिमा ग्याराको कथन ।

अथदोनोनाधिकार लिख्यते ॥

दोहा ।

आहार औपथ अभय फुनि, शास्त्र दान ए चार ॥ आत्रक जन नित दीजिए, पात्र कुपात्र विचार ॥ ६६ ॥

आगै अतिथि विभाग में, बरनन कीनो सार ॥ इहां विशेष कीनो नहीं, दूषण लगै दुवार ॥ ६७ ॥
जो इब्बा चित अनकी, पूरब कहौ हतंत ॥ देखि लेहि अनुराग धरि, तातैं मन हरवंत ॥ ६८ ॥
इति दानाधिकारः ॥

अथ जलगालन कथन ॥

दीहा ।

अथजल गालण विधि प्रगट । कही जिनागम जेम ॥ भाषौ भविजन सांभलौ । घारी चित घरि पेम ॥ ६९ ॥
दोय घडो के आंतरे । जो जल पीवै खान ॥ परमविवकी जुत दया । उत्तम सरावग जान ॥ ७० ॥

बंद चाल ॥

नीतन वस्तरकै मांही । खानी जल जतन कराहीं ॥ गालन जलजन जिहिंयारै । एक दूंद मही नहिं डारै ॥ ७१ ॥
कोहूमतिहीन पुराने । वस्तर माहे जल खाने ॥ अर वून्द भूमि पर नापे । उपजै अघ जिनवर भापे ॥ ७२ ॥
तिन माहीं जीव अपार । मरि है संसै नहिं धार ॥ जाके करुणा न विचार । आवक नहीं जानि गंवार ॥ ७३ ॥
धीवर सम गनिण ताहि । जलको न जतन जिहि पाहि ॥ दय दूय घटिका में नीर । छाशिया मतिवंत गहीर ॥ ७४ ॥
अथवा शगुक जल करि के, राखं भाजन में धरि के ॥ ग्रहकाज रसोई माहे । माशुक जलही वरता है ॥ ७५ ॥
अण्खाएयो वरतै नीर । ताकौ सुनिपाय गहीर ॥ एक वरप लगै जो पाप । धीवर करिहै सो आप ॥ ७६ ॥
अर भील महा अविचक । दां अगनि देय दस एक ॥ दोबनिको अघइक वार । कीये है जो विसतार ॥ ७७ ॥
अण्खाएयो वरते पानी । इस सम जो पाप वखानी ॥ ऐसो डर धरि मन धीर । विनु गालि वरतिन नीर ॥ ७८ ॥
॥ श्लोक ॥

संवत्सरणमे कर्त्वं कर्त्तव्यकस्यहिसकः । एकादशदशवाहेत अपूत जलसंग्रही ॥७९ ॥

सूतास्यनंतुगलितेयेविधीसंतिजंतवः । सूत्नाभ्रमरधानापिनैवमानिंत्रिविष्टपे ॥ ८० ॥

अद्विष्टाब्द ।

भकडो का मुख थकी तलनिकसे जिसो । तिह समान जल बिंदतणी सुनि एकसो ॥
तामें जोव असख उहे व्हे अपरही । जम्बू दीपं न माय जिनेश्वर इम कही ॥ ८१ ॥

तथार्थोक्त ।

धृत्रिशदंगुलं वखं चतुर्विंशतिविस्तृत । तद्वल्लङ्घिगुणी कृत्य तौर्यते नतंगालयेत् ॥ ८२ ॥

तस्मिन्मध्य स्थितांजीवांजलमध्येतुस्थायते । एवंकृत्वापिबेसोर्यस्यतिपरयांगति ॥ ८३ ॥

अद्विल्ल ॥

वस्तर लंबी अंगुलबलीस सलीजिये । चीड़ीई चोईस प्रमाण गहीजिये ॥ गहीविना अतिगाढो दौवड कीजिये ।
इहे नातणे बांण सदा जल पीजिये ॥ ८४ ॥ तामें है जे जीव जतनकरि केसही । बांणां जलते अपर नीरमें खेपही ॥
करणापर चितनीर एम पीवे जिके । सुरपद संशय नाहिं लहै शिवगति तिके ॥ ८५ ॥

चौपाई ।

ऐसी विधिजल छाएयांतणी । मरयादा थटिका दुइभणी ॥ प्रासुकं कीर्यो पहर दुयं जाणि ॥ अधिक उसनवहु जांमदंखांणिं ८६
भिरच इलायची लौंग कपूर । दरव्य कपाय कवेलो चूरं ॥ इनते प्रासुक जलं कराया । तांको भाजन जुदो रहाय ८७
इतनो प्रासुक कीजे नील । जांमं दोयं मध्य होइ व्यतीत ॥ मरयादां ऊपर जो रहाय । तामें सम्बुर्जन उमशायं ॥ ८८ ॥
अरु वे फिरि आंन्यो नहिं धरे । वांके जीव कहांवां धरे ॥ प्रासुक जलंके भाजनं मांहिं । जो कहुं नीर अंगालित आहिं ८९
ताके जीव धरे सब सही । उनको पाप कीई न इच्छही ॥ ताते बहुत जतन मनं आनि । प्रासुक करि वरंतो सुखदांनि ९०
बाएयो जल थटिका दुय माहिं । सम्बुर्जन उपजे सकनाहिं ॥ आज उसनकी विधि सब ठौर । व्यापिरही अति अघकी दोर ९१
व्याजु निमतिं असनकरि धरे । तपीछि खीरम ऊवरे ॥ तिनमें जलं तातो कराया । निसिं सवारलो सो निरवाहि ९२

मर्यादा माफिक नहीं सोय । ताको बरती मत भवि लोय ॥ कीजे उसने इसो विधि नीर । जो जिन आँझा पालनवीर ॥६३॥
 भात बोरिये जिह जल माहिं । वैसो जल जो उसन कराहिं ॥ आठ पहर मर्यादा तास । सम्मूखन पीबे है जास ६४॥
 जो आवक द्रतको प्रतिपाल । तिहको निसिजलकी इह चाल ॥ काणको प्रामुकता तौ नीर ॥ मर्यादाके बरती नीर ६५॥

छन्दवाल ॥

बीखे कपड़े जो नीर । छाने आवक नहीं कीर ॥ मर्याद जित्ती कपड़की । तासो विधि जल छणवाकी ॥६६॥
 याते सुनिये भवि प्राणी । जलकी विधि मनमें आली ॥ बहुधर विवेक जल गाले । मन बच तन करुणा पाले ॥६७॥
 पंचन में सो अति लाजे । अर जिन आँझा सो त्याजे ॥ सो पाप उपावे भरी । जाणौ तसु हीणाचारी । ६८ ॥
 याते ल्यो बसन सुफेद । छानौ जल फिरियावेद ॥ औरन उपदेश जुदीजे । विनु काणो कवई न पीजे ॥६९॥
 आवक बनिता घरमाहीं । फिरियाजत सदा स्थाहीं ॥ बहु जलन थकी जल छाने । ताको जसे सकले स्वाने ॥७०॥
 लघु त्रिया म्याद प्रवीण । जलकी फिरियामें हीन ॥ तावे न छणवे पाणी । बनितास्यो जाण्यो स्वामी ॥७१॥
 तजि आलस अरु परमाद । गाले जलधरि अहलाद ॥ औरनि सों नहिं बतलावे । जलकखानहिं पडिवापव ॥७२॥
 नल बुन्दज तनुमें परिहै । अपनी निन्दो बडु करिहै ॥ ले दंठ सकति परमाण्य । फले हिरके जिन आण्य ॥७३॥

दोहा ।

जिह निवाणको नीर भरि, घर में आवे ताहि । छानि जी वाणी भेजियो; चाहि निवाण जमाहि ॥४॥
 इह जल गालण विधि कही, जिन आगम अनुसार । कहिहो कथा अणयमी, इतियो भवि वितधार ॥ ५ ॥

इति जलगालण विधिः ॥

अथ अणयमी कथन ॥

दोहा ।

घड़ी दोय दिन चढ़े जव, पखिलो घटिका दोय । इतने मध्य भोजन करै, निरुद्धे आवक सोय ॥ ६ ॥

सोरठा ।

सुनिये श्रेष्ठिक भूप, निसि भोजन त्यागी पुरुष । शर सुख भुगति अनूप, अनुक्रमि शिव पावे सही ॥३॥
दिवस अस्त जब होय, तापीछं भोजन करे । वे नर ऐसे होय, कहं सुन्ने अणिक नृपति ॥ ८ ॥

नारचखन्द ।

उलूक काक औ विलाव गूढ पक्षि जानिये । वघेर डोडु सर्प सर संवरो वखानिये ।
हबति गोहिरो अतीव पाप रूप थाइहे । निसी आहार दोषते कुजेनिको लहाइये ॥ ६ ॥

दोहा ।

निसिवासर को भेद बिन, खात नृपतिनहीं होइ । सींग पूब ते रहतही, पचू जानिये सीइ ॥ १० ॥
दिन तजि निसि भोजन करे, महा पाप मति नइ । बहु मोल्यो माणिक तेजे, काच गह धरेरूढ ॥११॥

खन्दचाल ।

निसि माहे असन कराहीं । सो इतने दोष लंहाहीं ॥ भोजन में कीही खाप । तसु बुद्धि नाश होजाय ॥१२॥
जू उदर माहि जो जाय । तह रोग जलोदर थाय ॥ माली भोजनमें खैहे । ततखिण सो वमन करैहे ॥ १३ ॥
मकड़ी आबे भोजन में । तो कुटुरोग है तनमें ॥ कंठकरुकाठको खंड । फसिहे सो गलै प्रचण्ड ॥ १४ ॥
तखुकंठ विथा विस्तारै । हैहे नहि डील लगारै ॥ भोजन में खैहे वाल । शुरभंग होय ततकाल ॥ १५ ॥
अरु असन करत. निसिमांही । वज्रादिक में उपजांही ॥ इनि आदि असन.निसि दोष । सत्रहीको है अषकोप ॥१६ ॥

सोरठा ॥

निसि भोजन में जीव, अति विरूप मूरति सही । तिन से विकल अतीव, अल्प आयु अर रोग युत ॥ १७ ॥

दोहा ।

भाग्यहीन आदर रहित, नीच कुलहि उपजाय ॥ दुख अनेक लहै है सही, जो निसि भोजन खंदि ॥ १८ ॥

एक हस्तनागपुर ठाम, तस जसोभद्र नृप नाम । रानी जस भद्रा जानों, अष्टी श्रीचंद बखानों ॥ १८ ॥
 तिय लिखमी मती तसु एह । नृपप्रोहित नाम बुनेह । द्विज रुद्रदत्त तबु तीया, रुद्रदत्ता नाम जु दीया ॥ २० ॥
 हरदत्त पुत्र द्विज नाम । तिन चरित बुनो दुख धाम ॥ बीतोभादों को मास । आसोज प्रथम तिय जास ॥ २१ ॥
 निज पित्र श्राद्धदिन पाय । द्विज पुरका सकल बलाय ॥ ब्राह्मण जीमण कों आए । बहुअसन थकी जुअथाए ॥ २२ ॥
 द्विज पिता नृपति कै ताई । पोषे बहु विनोधराई ॥ पीछें नृप मंदिर आयो । राजा बहु काम करायो ॥ २३ ॥
 तबु राज काज के मांही । भोजन की छुधि न रहांही ॥ बहुषुध्याथकी दुख पायो । निसि अघंथगया धरि आयो ॥ २४ ॥
 निसि पहर गई जब एक । तसु वनिता धरि अविबेक ॥ रोटी जीमन कूं कीनी । बेंगण करनै मन दीनी ॥ २५ ॥
 हांही चूखै जु चढाई । पाडोसी हींग को जाई ॥ इतने में हांही माहीं । मीढक पहियो उखलाहीं ॥ २६ ॥
 तिय बेंगण लौके आय । मीढक मूवो दुख पाय ॥ तब हांही लई उतारी । रोटी ढकणी परि धारी । २७ ॥
 कीही रोटी में आई । घृतसन मधितें अधिकारै ॥ निसि बीति गई दोजाम । जीमण बैगो द्विजताम ॥ २८ ॥

दोहा ।

निसि अंधियारी दीप विनु, पीडित भूख अपार ॥ जो निसि भोजी पुरुष हैं, तिन के नहीं विचार ॥ २६ ॥
 रोटी मुख में देतही, चींटी लगे अनेक ॥ विप्र होंठ चटको लियो, बड़ो दोष अविबेक ॥ ३० ॥
 बेंगण कों लखि मीढको, विस्मय आयो जोर ॥ तातें अघउपज्यौ अधिक, महा मिथ्यात अघोर ॥ ३१ ॥

अदिसल ।

कालांतर तजि माण भयो घू घू जने । तहांमरण लहि सोई नरक गयी तबै ॥
 पंच प्रकार अपार लखै दुख ते सही । निकलि काक परजाय ठई दुखकी मही ॥ ३२ ॥
 तिह वायस चउ पद अनेक जु अंताइया । विष्टादिक जे जीव चित तै पाइया ॥
 मरु आयु तें पाप उपाय मूवो जदा । नरकि जाय बहु आय समुद भुगतै तदा ॥ ३३ ॥

तिहै निकलि विलाव भयो प्रापी घनो । भंसा भौडक आदि भखै कहलौं गनो ॥
 नरक जाय दुख भुलि शृंग्रपत्नी भयो । माणी भखै अनेक नरक फिर सो गयो । ३४ ॥
 निकसि नरक ते पाप उदै केबर भयो । तिह भली जीव अपार नरक भंचमगयो ॥
 निकल सूर है जाव भखै तिनकों गिनै । अध उपाय भरि नरक जाय सहि दुख घनै ॥ ३५ ॥
 अजर खडि परजाय मनुष तिरयग प्रसे । नरक जाय दुख लहै कहे बांणी इसे ॥
 निकलि बघेरो थाय जीव बहु खाइया । पाप उपाय लहाय नरक दुख पाइया ॥ ३६ ॥
 गाथा तिरयग जाति निकसितह तैं भयो । बहुव जंत कौ भखि नरक फुनि सो गयो ॥
 भब्व तणी पर जाय लई दुख की महीं । लघु मब्बादिक पाप उपाए अध सही ॥ ३७ ॥
 सो पापी भरि नरक गयो अति घोर में । स्वासति निमिष न लहै कहुं तिसि भोर में ॥
 तह भुगते दुख जीवयादि जो आवही । निसि न तींद दिन नीर असन नहि आवही ॥ ३८ ॥

चौपाई

तिसिभोजनलंपट द्विज भयो । महापापको भोजन थयो ॥ दसभव तिरयगति दुखलहो । तिमदसभयदुखनरक तिसरको ३९ ॥
 नरक यकी नीकलि के सोई । देस नाम कर हाट सुजोई ॥ कीसल्या नगरी नरपाल । है संग्राम सूर गुणमाल ॥ ४० ॥
 तसु पट तोया बल्लभानाम । राजा सेठ श्रीधर है ताम ॥ श्रीदत्ता भार्या तिह तयो । राज पुरोहित लोमस भणी ॥ ४१ ॥
 प्रोहित त्रनिता लोभा नाम । महीदत्त सुत उपल्यो ताम ॥ सात विसन लंपट अधि कानी । रुद्रदत्तद्विज को वरजांभी ॥ ४२ ॥
 महीदत्त कुविसन तैं जास । पिता लंस्ति सव क्रियी विनास ॥ जूवा वेश्यारमि अधिकाय । राजदण्ड दे निरधनथाय ॥ ४३ ॥
 घरमें इतो रबी नहीं कोय । भोजन मिलिवे हूं नहीं जोय ॥ तवद्विज काढि दियो घरथकी । गयो सोपि मांभा घरतकी ॥ ४४ ॥
 मांभ तनु आदर नहि दीयो । बहु अपमान तासको कीयो । भावहीन नर जह जह जाय । तह र मानहीनता थाय ४५ ॥

सवैया २३ सा ।

जानकै सिर टाट सदा रवितापथकी दुख जोरि लहैहै । पाद पचीलतनी तकि छांह गए सिर चीलकी चोट सहैहै ॥
ता फलतै तसु फाटिहै सीस वेदनि पाप उदै जु गहैहै । भाग्य बिना नरजाय जहां तह आपद थानक भरिबी रहैहै ॥४६॥
मातुल ताव महीदत सीस लवाय दियो अचही ! पूरव पाप किए मैं कौन सुभाषिये नाथ वहे सबहो ॥४७॥
दोहा ।

कौन पाप ते दुख लखो, सो कहिये सुनि नाह । सुख पाज कैसे अकै, उहै ब्रतावो राह ॥४८॥

सुनि उत्तर ॥ सवैया २३ सा ॥

सो सुनिराज कबो ओ बरस सुपूरव पाप कहों तजयाहीं । मोहित नाम यो रुद्रदत्त महीपतिके हथनापुर माहीं ॥
सो निसि भोजन लंपट जोर पिपील कूकीट भखै अघिकीहीं । सो जन रात समय इक मीडक वेंगण साथ दियो सुखमाहीं ॥४९॥

अडिल्ल ।

तास पापके उदय मरिचि घघू भयो । नरक जाय फुनि काग होय नरकहि गयो । हे ब्रिलाव लहि नरक जाय गंवर
भयो ॥ नरक जाय है गुद्ध पत्त नरकहि लखो ॥५०॥ निकल मूकरो होय नरक पद पाइयो । है अजगर लहि नरक
बचरो थाइयो ॥ सुअजाय फिर गोथा तिरियग गतपई । नरक जाय हो मच्छ नरक प्रथवी लई ॥ ५१ ॥ नरक महीते
निकल महोदत्त थाइयो । उलूकादि देस तिरियग भन दुख पाइयो ॥ नरकचार देसजाय महा दुखते सखो । निसि भो-
जनके भखै सुअ दुख अति लखो ॥ ५२ ॥

दोहा ।

महीदत्त फिर पूखने, निसि भोजनतें देव । नर भवमें दुख किम लहे, सो कहिये सुभ भव ॥ ५३ ॥
सुनि भापें दिज पुत्र सुण, निसि नें भोजन खल । जीव उदरि कैहै तन, बहु विधि हे उतपात ॥ ५४ ॥

सर्वैया इकतीसा ।

माखीते वमन खोय चीटी बुद्धि नास करे, जूकाते जलोदर होय कोटी लूत करि है । काटफांस कंठकते गले मेव थावै व्यथा वाल छुर भंगकरे कंठहीन परि है ॥ अमरीते सना होई कसारीति कम्पवाय विन्तर अनेकभांति बला उर धरि है । इन आदिक कथन कहाँलौ कीजे वञ्च सुन नरक त्रयं व थाय कहे जो उपरि है ॥ ५५ ॥

दोहा ।

जो कदाचि मर मनुष है, विकल अंग विनु रूप । अल्प आयु दुर्भंग अकुल, विविध रोग दुख कूप ॥ ५६ ॥
इत्यादिक निस असनते, लहि है दोष अपार । सुन विमहीदच मुनिप्रते, कहे देहु व्रतसार ॥ ५७ ॥
मनि भापे मिथ्यात तज, भवि सम्यक्त रसाल । पूरव श्रावक व्रतकहे, द्वादश धरि गुण माल ॥ ५८ ॥
दरशन व्रत विधि भाषिये, करुणा कर मुनिराज । मुक्त अनन्त भव उदायत, तारणहार जहाज ॥ ५९ ॥

सोरठा ।

दोष पचीस न जास, संवेगादिक गुण सहित । सप्त तत्व अभ्यास, कहे युनीश्वर विष सुन ॥ ६० ॥

दोहा ।

इस दरखण सरथान करि, निरवै अरु व्योहार । पूरव कथन विशेषते, कही ग्रन्थ अनुसार ॥ ६१ ॥
सात व्यसन निसि असन तज, पालो वसु गुण सूत । चरम वस्तु जल विनु छणयो, त्यागे व्रत अनुकूल ॥ ६२ ॥

चौपाई ।

इत्यादिक मुनिवचन सुनेइ । उपदेश्यो व्रत विधिब्रतलेइ ॥ हरपित आयो निजघरमाहि । तासु कृयालखि सब विसमाहि
अहो सात विमनी इह जोर । अरु मिथ्यातो महा अघोर ॥ ताको चलन देखिये इसो । श्रीजिन आगम भाष्यो तिसो ६४
मात पिता तसु नेह करेइ । भूपति ताको आदर देय ॥ नगर माहि माने सब लोग । विवधतणे वहु भुंजै भोग ॥ ६५ ॥

पुण्यथकी सवही सुख लहै । पाप उदै नाना दुख सहै ॥ ऐसो जान पुण्य भवि करौ । अघते डरपि सवै परिहरो ॥६६॥
 महीदस बहु धन पाइयो । तत्वलिख पुन्य उदै आइयो ॥ पूजा करे जपै अरिहत । मुनि श्रावकको दान करन्त ॥६७॥
 जिन मन्दिर जिन विम्ब कराय । करी प्रतिष्ठा पुण्य उपाय ॥ सिद्धत्त वन्दे बहुभाय ॥ जिन आगम सिद्धांत लिखाय ६८-
 आप पढ़ै ओरनिको देय । सप्तत्त त्रय खरच करेय ॥ निसदिन चालै अत अनुसार । पुण्य उपायो अति सुखकार ॥६९॥
 कितेक काल गया इह भांति । अति समय धारी उपसांति ॥ दरशन ज्ञान चरण तप चार । आराधन मनमाहिं विचार ॥७०॥
 भाई निरचै अरु अयोहार । धर सन्यास अन्तकी वार ॥ शुभभावते झाँड़े प्राण । पायो पौडशस्वंग विमान ॥ ७१ ॥
 रिद्धि आठ अणिमाधिक लही । आयु वीस दुय सागर भई ॥ पाँचौ इन्द्री के सुख जिते । उदै प्रमाण भोगिए तिते ७२॥
 समकित धरम ध्यान भुत होइ । पूरण आयु करइ सुर लोय ॥ देस अर्बती मालव जाण । उज्जैनी नगरी सुवखाण ७३-
 पृथ्वी तल तछु राज करेय । प्रेम कारिणी तिय गुण गेह ॥ समकित दृष्टी दंपति सही । जिनअगयाहिरदयतिनगही ॥७४॥
 स्वंगं सोलमेतें डरबयो । प्रेमकारणी के भुत भयो ॥ नामअधारस ताकोदियो । मातपिता अतिआनंद कियो ॥ ७५ ॥
 द्वियो दान जाचक जन जितो । मोवै कथन होय नहि तितो ॥ विधिसौं पजे जिनवरदेव । सुतगुखंदन करि बहुसेव ॥७६॥
 अधिक महोद्वै कीनो सार । जैसो श्रावक को आचार ॥ बस्त्रादिक आभरण अपार । सबपरियनसंतोपसार ॥ ७७ ॥
 अनुक्रम वरससात को भयो । पसिहत पास पठन को दयो ॥ शास्त्रकलाभैं भयो प्रवीन । आवक व्रतजुतसर्माकत लीन ॥७८॥
 जावनवत भयो सुकुमार । व्याहन कीनो धरम विचार ॥ एक दिवस वन क्रीडा गयो । बडतरुअंजरी तें पैभयो ॥७९॥
 देख कुमर उपजो वैराग । अनु प्रज्ञा भाई बडभाग ॥ चंद्रकीर्तियुनि के द्विग जाय । दिवालीनी शिव सुखदाय ॥८०॥
 बाहिर आभ्यंतर चोधीस । तजंअंध मुनि नामे सीस ॥ पंच महा व्रत गुपति जु तीन । पंच समितिधारीपरवीन ॥८१॥
 इमतेराविधि चारित सज । निअयरत्न त्रय सुभजे ॥ सुकल ध्यान बलियोह निवास । केवल ज्ञान ऊपउयो तास ॥८२॥
 भनिउपदेअे बहुविधि जहां । आयुकरम पूरण भयो तहां ५ सेप अघातिय को कर नास । पायो मोक्षपुरी सुखदास ॥८३॥

मोह केम नास भये प्रसमत्त गुणथये ज्ञानावणनास भये ज्ञानगुण लयो हे । दसंख आवरण नास भयो दसख
सुअंतराय नासतै अनंतवीर्ययो हे ॥ नार्थकर्तनास भये प्रगटथी छुहुमत्तगुण आयुनास भये अर्कगाहण जुपायो हे ॥
गोअकर्मनास कीये भयो हे अग्रह लघु बेदनी के नासे अव्यबांध परिणयोहि ॥ ८४ ॥

दोहा ।

विवहारै वडगुण कहै, निअै सुगुण अनंत । कील अनंतानंतविते, निअैसे सिद्धमहंत ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

इह विधि भविदर्शन जुत सार । पालै आवक व्रत आचार ॥ अर सुनिवर के व्रत जो धरै । सुनरै सुखे लोहि सिवतियवरै ॥ ८६ ॥
निसि भोजन तै जे दुख लये । अरुत्यागे सुखते अनुभये ॥ तिनके कल कोवरन धरी । कथाअणथभी पूरणकरी ॥ ८७ ॥

छप्पय ॥

दिवसउदय दुय धंडी चढत पीछै ते ले कर । अस्तहोत दुयधंडीरहै पिछेलो एते पर ॥
भोजन जे भवि करं तलै निसिंच्यारिओहाही । लोदिम स्वादिम लेप पान मन वचकर वारही ॥
सो निसि भोजन तजन वरत नितिप्रतिजो जिनराजवखानियो । इहविधिनितप्रती चित्तधरआवक मनजिहियानियो ॥ ८८ ॥
चित्रकूट गिरि निकट ग्राम मातंग वसै तहै । नाम जागरी जर्जन कुरंग चंडार तियातहै ॥
तहिनिनिसि भोजन तजन वरत सेठ णिपैलियो । मन वचक्रम व्रतपालमरन शुभ भावनि कियो ॥
बहबेठ तिया उरि ऊपनि सुता नागश्रिय जानियो । जिनकथित धर्म त्रिभि जुतगहि विसरगता सुख तिन लियो ॥ ८९ ॥
तिरयग एक सियाल सुणिवि सुनि कथित धरमपर । रखनिसि भोजन तजन वरत दियो लखि भविवर ॥
त्रिविधि शुद्ध व्रतपालिसेठ सुतहै मीतंकर । त्रिविध भोग भोगए नृपति पुत्रीपरणविवर ॥

मुनिराज पास दीचालई । उग्रधोर तप ध्यान सजि ॥ वसु कर्म त्रैपि पहुंचे मुक्ति सुखअनंत लहि जागत महि ॥८०॥
याही व्रत को धार पूर्वही बहुत पुरुष तिय । तदभवमरु पद लहे त्रिविध पारलड हरपित हिय ॥
अनुकामी मोक्षहिगण वरिसुदीक्षा जिति भारी । सुख अनन्त नरह वोर सिद्ध पद के जे धारी ॥
नरनारी अजहुं व्रत पालिहै । मनवचकाय त्रिशुद्धिकर ॥ लहि धर्म देवगतिका अधिककर्म तैं पहुंचै मुक्तिधर ॥८१॥
इति अणुधर्मीकथन ।

अथदर्शन, ज्ञान, चारित्र्य कथन लिख्यते ॥

दोहा ।

त्रैपन किरया के धियै, दसणणालप्रमाण । अवरन्धितयचारिते तणे, कछुएक कहो वखाणें ॥ ८२ ॥
निज आतम अत्रलोक्रिये, इह दर्शन पर धान । तस गुण जान पखो विविध, नहैज्ञान परवानें ॥ ८३ ॥
तामैथिरता रूपदे । रहै सुचारित होई ॥ रत्नत्रयनिश्चै इहै, मुक्ति बीज है सोई ॥ ८४ ॥
अवविबहार बखारणिये, समतत्वपरधान । निःस्वकादिक आठ गुण, जुत दर्शन सुख धनिं ॥ ८५ ॥
ज्ञान अष्टविधियाव्ययो, व्यंजन ऊजित आदि, जिन आगम को पाठ वहु, बरैत्रिविधि अहलादि ॥ ८६ ॥
पवमहाव्रत गुप्तिय, सुमति पञ्चमलिसोय । विधि तेरा चारित्र है, जाखों भविजन लोय ॥ ८७ ॥
इनको वणें नपूर्वही, निश्चै अरु विबहार । मति प्रमाण संत्तेपतें, कियोअन्य अनुसार ॥ ८८ ॥

कीपाई ।

त्रैपन किरयाकी विधि सार, पालो भविमन बचतन धार ॥ सो हरनर सुखलहि शिव लहै । इमगणधरगीतमजीकहै ॥८९॥
इति त्रैपन क्रियाकथन सं णंभु ॥ अथ श्रीर वस्तुहैं तिनकी उत्पत्ति उगरे कथन चले हे ॥

अथ गूंदकी उत्पत्ति ।

दोहा ।

गूंदहलद अरु आंवला, निपजन विधि जे थाहि ॥ क्रियावान पुरुषनि मत्तै, कहूँ संकल समजाहि ॥ १०० ॥

चौपाई ।

गूंद खैर के लागी होय । भील उतार लेतुहैं सोय ॥ अरुअंगुली के राल लमाय । इह विधि गूंदउत्तारत जाय ॥ १ ॥
 कौडी मात्र अहि असीव । लागारहै गूंद के ज व ॥ भील विचैकहीण अति दुष्ट । करुण रहित उतारैं अष्ट ॥ २ ॥
 दूना सेंधरते सो जाय । जीव कलेवर तामें आय ॥ इहविधि जाण लेहु जन दत्त । नरनारी सब स्वातप्रतत्त ॥ ३ ॥
 भील जूठ इहजाणों सही । क्रियावान नरखावैं नहीं ॥ जो खैहै सो क्रिया नसाय । अवरवरत को दोष लगाय ॥ ४ ॥
 अथ अफीमकीउत्पत्ति ॥
 चौपाई ।

अरुउत्पत्त अफीम जु तणी । भूठी दोष गूंदहि जिमभयी ॥ इह अफीम मेंदोष अपार । खाए प्राण तजै निरधार ॥ ५ ॥

अथ हलदकी उत्पत्ति ।

हलदभील निज भाजन मांहि । अपने जलतैं ते औटांहि ॥ तापीछैं सोदेंयसुकाय । हलदविकै तेसवहीखाय ॥ ६ ॥
 कंदमूल तैं उपज्यो सोय । भाजन भील नीर मैजोय ॥ यामैं हे इतनो लखिदोष । धरम अष्ट गुभ क्रियानपोष ॥ ७ ॥

आंवलाकी उत्पत्ति ॥

वरहि मांभ आंवला अपार । हीण कृया नामें अधिकार ॥ हरयो आंवलाभील लहाय । अपने माजनमांहि डराय ॥ ८ ॥
 निज पाणीमें ले औटाय । जंभां मांहि फिर डारैं जाय ॥ पहरि पाहनो तिनपर फिरैं । फूटत तिन गूदरी नीकरैं ॥ ९ ॥
 अरु भीलनके बालक ताम । तिनकी गूदली चीन्त जाम ॥ खूण सार्थले खातै जाहि । भूठ होत तामें सक नाहि ॥ १० ॥
 जल भाजनको दोष लहन्त । पाटा पाहनी से खदंत ॥ ऐसी उत्पत्ति बुध जन जान । धर्म फलैं सोई मन आन ॥ ११ ॥

अथ पानकी उत्पत्ति ॥

काथ खातहैं पानहिं मांहिं । तिसकेदोप कहेना जाहिं ॥ प्रथम पान साधारण जान । राखे मास वरषलों आन ॥१२॥
 सरद रहै तिनमें अति सदा । तस उपत्रै जिनवर यों वदा ॥ हिन्दूतरकतंबोली जान । नीर निरन्तर निज छटकान ॥१३॥
 जल भाजन अशुद्ध अति जान । सारा नर मृतंतहिथान । पूंगीलौंग गरुगिरि विदाम ॥ ढोडादिक फुनितावै ताम ॥१४॥
 चूनो काथ इत्यादि मिलाहिं । सब मसालो पानन मांहिं ॥ धरकै बीडा बांधै सोइ । सवजन खात खुसी मन होइ ॥१५॥
 धरस पाप नहिं भद लहन्त । ते ऐस बीडा जुगहन्त ॥ अरु उत्पत्ति काथकी सुनो । अधदायक शुभ है तिम गुणो ॥१६॥

अथ काथकी उत्पत्ति ॥

बंध्याचल तहभीला रहन्तः । खैरखकी ऋाल गहन्त ॥ अषटाधें निज पाणी डार । अरुण होय तव लेय उतार ॥१६॥
 तामें चून जु मंडवा तणो । तंबुल ज्वार सिंघाडा तणो । नाखखैर जलमाहीं जोयः । रांधराधड़ी गादी सोय ॥१७॥
 ताहिं सुकावे फुएडा मांहिं । उत्पत्ति काथ कहिसक नाहिं । कहुं कहां लों वारम्बार । होयपापलखकरि निरधार ॥१८॥
 सुखदायक सिस गहिये वीर । दुखद पाप की खांख्यो धीर ॥ खांड़े मन वच सुख सी लहै । विनुखांड़े दुरगतको गहै १९॥
 तातें सब बरनन इहकियो । खनहु भविक जनद निज हियो ॥ जिभ्या लंपटता दुखकार । संवर्तें सुरषदहै सार ॥१२॥

दोहा ।

ब्रतधारी जे पुरुष हें, अवर कृया धर जेह । तजहु वस्तु जो भीण हें ॥ त्यों सुखलहो अखेह ॥ २० ॥

अथ वरणौडीखीचलाकुरेडी फली हरी उत्पत्तिवर्णन चौपाई ॥

क्रियान आवक हें जेह । वस्तु इती नहिं खेहे ते ॥ रांधें चून वाजरा तणः । और जवारि भावलको भणो २१॥
 वरणौडीखीचला करे । कुरेडी फुले हरिधरै ॥ भाटे गूद सुकावे खाट । सीला अटवायो सुनि राट ॥ २२ ॥
 इह विधि वस्तु नीपजे सोई । ताहि तजो ब्रत धरि अखलाई ॥ अरु लोजाइ रसोई माहि । सेकै तलै क्रिया तस जाहिं २३

अथ भडभुंज्या के चबीणों सिकावे ताका कथन ।

भडभुंजो सेके जो थान । तास क्रिया अनिये प्रतिमान ॥ राधा चावल देय मुकाय । तस चिडवा मुरमुरा चनाय ॥ ३४ ॥
गेहूं वाजराकी घुवरी । राधतुरपुरा से कैधरी ॥ मका जवार एकालैजाण । फुलाकर बैचै मन आण ॥ ३५ ॥
कर मूगडासेके चणा । मूंग मोठ चौलादिक घणा ॥ इत्यादिक नाजहि सिकवाय । निकै चबीणी सब जन स्वाय नद ॥
शुद्र तुरक मुज मुं ब्या न्हालि । तिनके भाजनमें जल घालि ॥ करै चबीना ताजा जानि । सवै स्वाय मनअंति ज आना ॥ ३६ ॥
जो मन होय चबीणो परै । तोखइये इतनी विधिकरी ॥ नि ग घरते लीजे जल नाज । तिनहि सिकावे ब्रतघरि साज २८
पीतल लोह चालणी मांहि । बांणि लेय बालू कढ़नाय ॥ इह करिया नीकी लखि रीति ॥ खाडु चबीणी मन धरपीति २९

चौलाकीफली कैर करेली सांगरी वगैरह तिनको कथन ॥

चौलहरी चौलाकी फली । आवै गांव गांव ते चली ॥ तिनको शुद्र सिजाय सकाय । बेचे सो सगरे जन स्वाय ॥ ३० ॥
जल भाजन शुद्धनको दोप । वासी बटवोयो अघ कोप । बहुदिन राखे जिय उपजाय । तिनहि चिबेकी कवहुं न खाय ३१
कैर करेली अरु सांगरी । शुद्र उकाले तें निज घरी ॥ षट् कुंथवा बरपा काल । यह खैवी मति हीनी चाल ॥ ३२ ॥
अबहलि कैरीकी जो करे । जतनयकी राखे निज घरे ॥ जल बरष अरु नार्हीं मेह । तवल्लो जोग स्वायवो तेह ॥ ३३ ॥
बरपाकाल मांहि निरधार । उपले लटकुंथवा अपार ॥ इन परिचोमासो जय जात । ताहुचिबेकी कबहु न खात ॥ ३४ ॥
नईतिली तिल उपजे जड़े । फागुण लौ खइये जत्र सवै ॥ सो सरजांदा तेल ममाण । बोली पीछे तजहु सुजाण ३५ ॥
होली पछिलो दे जो तेल । तिसमें जीत्र कलेवर मेल ॥ यावै होली पहिलो गही । ले राखे आवक घर मही ॥ ३६ ॥
सोवते कातिक लौ तेल । तिन भवि सुनको लखिवो मेल ॥ चरमतणी जो दे ताकडी । बुध जन घर राखे नदिघडी ३७
तामें तेल चूनरु नाज । चमरवस्तु को दोस समाज ॥ कागद काठ कांस अरधात । राखे क्रियावंत विख्यात ॥ ३८ ॥
सिंघाडा अति कोमल आंहि । होली गए जीव उपजांहि ॥ ताकी होइ मिटाई जिनी । खैवोजोगन भाखी तिली ३९

केऊ करवि घघरी लाय । केऊकसीरो पड़ीवणाय ॥ हीली पहिली तो सब भली । खेकी जोय्य कही मनरली ॥ ३८॥
 पीछे उपजै जीव अपार । क्रिया दया पालक नर सार ॥ तबइनको लोभीदें नोधि । कही धर्मसाधे तिनखांहि ॥ ३९ ॥
 दूधगिदोडी के गजरी । दोहे पीछे जाय बहुघरी ॥ निजवासण में धर ले जाय । करे गिदोडीमावो ताहि ॥ ४० ॥
 दीप अधिक काचा पयतण । ताका कथन कहां लोभणो ॥ अत्रिको समझै नहि ताहि । समजाए हमतिनही आहि ४१ ॥
 इतनी तो निजरयालिखि लेहु । मावोकरता समय में तेहु ॥ पड़ेजीव उसमें लघु जाति । अरुफिर रात तणीकावात ॥ ४२ ॥
 ताहमें फुनि वरणा फाल । पड़े जीव तिहि निसि दरहाल ॥ मांखर हांस पतंगाआदि । मावो इसोखात शुभवादि ४३ ॥
 सदापाप दायक है सही । पापथकी दुरंगति दुखलही । लोह अख छुट नहि जदा । निसि को कियो न खइयेकदा ॥ ४४ ॥
 जोखे सो विनु रखे न जाय । तोपय जतनथकी घरलवाय ॥ मरयादा बोतै नहिजास । क्रियासहित मावोकरि तास ॥ ४५ ॥
 भिहालपटता बसिथाय । तो ऐसी विधि करि कै खाय ॥ कोऊ छलप करेगो एम । उपदेश्यो आरंभकुकेम ॥ ४६ ॥
 वामे काचा पयको दोष । अरुत्रस जीव कलेवर कोप ॥ यातें जतन थकीजो करे । जतन साधि भाष्यैहे सिरे ॥ ४७ ॥
 जतन थकी किरियाहू पलै । जतन थका अदयाहूटवै ॥ जतन थकी सधिहै विधिधर्म । जतनमुख्य लखिथावककर्म ॥ ४८ ॥

इति चोलांकी फली आदि सबका कथन संपूर्णम् ॥

शोधिकाधित की मरयादा । दोहा ।

मरयादा सब शोधकी, कही मूल गुणमांहि । जिहि अत में भोजन करे, घरत शोध को खहि ॥ ४९ ॥
 ब्रह्मचाल ॥

धर्म में तो निपजैनही । विकलतालपि मोल गहांही ॥ तिहशाध वखाणे कूर । शुभक्रिया न तिनके मूर ॥ ५० ॥
 बाणालघुश्राभावास । जल आदि क्रियानहि तास ॥ तिनके घरको जो घीव । धर भाजन मलिन अतीव ॥ ५१ ॥
 लेआने शहर मफार । बंचेउ लोभ विचार ॥ ड्योढा दुगुण लेदाप । लखि लाय खुसो हे ताम ॥ ५२ ॥

तीलग परिरहै तह माखी । करतै काहे दे नारखी ॥ जीवत ऊई नहि जाति । तिहि जतन न कवहुं ठानि ॥ ५३ ॥
 परगं बतयो इह रीति । सुन शहर तणी विपरीति ॥ वैचै दधि छाछि विनाणी । तिनके घरको घृतजाणी ॥ ५४ ॥
 खावंत है जे मति हीख । तडसकल क्रियाव्रत क्षीण ॥ निसि सोतिय दूध अंगावै । तरतहि नहि अर्गनिचहावै ॥ ५५ ॥
 इहते अघ उपजै भारी । फुनितिहगहि यत बहूडारी ॥ देजावण दही जमवै । दधि मथ के घाव कढ़ावै ॥ ५६ ॥
 लएयो वहु बेलो राखे । उपजै अघ नाणी भाखे ॥ बेचे ले बहुत परईसा । पुनि पाप जिहो नहि दीसा ॥ ५७ ॥
 सो धिरत शोधिको माने । व्रत में जो खैवो ठाने ॥ दूषण ऐसे लखि ताम । जैसे वृत धरियो चाम ॥ ५८ ॥
 सुनिये अघ अघ कर वात । जानत जन रुकल निरुथात ॥ निरमाय लखे है माली ॥ भोजग सुनि लेह विचारी ॥ ५९ ॥
 तिनपास अंगावै घीव । अरु शोध गिने जे जीव ॥ तिनकी छुई जो वस्त । दोपीक गियो रुसमस्त ॥ ६० ॥
 आचार कहो शुध भाव । तिनको जो वस्तु मिठाय ॥ आचरिये कवहु नाही । जिनवर भाष्यो श्रुत मांही ॥ ६१ ॥
 लबु ग्रामकोस देस वास । निज समधि तहां निवास ॥ किंकर भेजे तापःई । व्रतजोग धिरत मंगवाई ॥ ६२ ॥
 जाला आता वहु जीव । विनसै मारग में अतीव ॥ व्रतघात मगावत होई । सोशोधि कहो किम जोई ॥ ६३ ॥
 कोई प्रश्नकरे इह जाग । आवक होते जे आग ॥ घृतखाते अककछ नांही । हम मन इह जंका आंही ॥ ६४ ॥
 ताके समजावन लायक । भापे अति ही मुखदायक ॥ आवक जुहुते व्रतधारी । तिन घृताविधि छुनि यह सारी ॥ ६५ ॥

चौपाई ॥

जाके घर महिपी या गाय । पके टाम तिनही वंधवाय ॥ सरद रहे नहि टाम मंभार । बालू रेन तहां दे डार ॥ ६६ ॥
 किंका एक रहे तिन पर । सोतिनकी इम रत्ना करे ॥ देय बृद्धारी सांज सवार । उपजे नहीं जीव तिन डार ॥ ६७ ॥
 दोय तीन दिन शीते जड़े । प्राशु कजलहि न्हवावे तवे ॥ परनाली राखे तिह ठांइ । बहे चूत्र तिनकेठिग नाहि ॥ ६८ ॥
 वासनवर राबे तिहि तले । तासं परे मूत्रजा टजे ॥ मुके टाम नापिहै जाय । जहां सरद कवहु न रहाय ॥ ६९ ॥

गोधर तिनको द्वै निति सीय । आप गेह थाये नहीं कोय ॥ औरन को मांग्यो नहीं देय । अससितावतभिएउपज्येय ॥
 बलुरेत नापी जामाहि । करइकोरि सो देय सुकाय ॥ चरइको रो न न खिदाय । जलपीव निवाख नहीं जाय ॥ १० ॥
 धरि बांधे राखे तिन सही । हरयो घासतिन नीरे नहीं ॥ सुको घास करवखाललो पालो इत्यादिक जो भलो ॥ ११ ॥
 लेराखे इतना घरमाहि । दोप रहित न ही जीय उपजाहि । नीरेभाडि उपरिजो वीर । अरुविधितें जो ब्याएयो नीर ॥ १२ ॥
 पीवै भाजन भवत मजासि । सरद न राखे माजैमारि ॥ ईधण कुडि बालता जाय । रांधिकाक डापलि जु मिलाय ॥ १३ ॥
 खीर चूरुं विरिया जेह । देय खवाय जतन तें तेह ॥ स्यालैतापर जूठ डराय । जतन करे जिम जीव न थाय ॥ १४ ॥

छंद चाल ॥

जवमहिपी गाय दुहावे । जलतेकर धनहि धुवावे । कपडो चरई सुख राखे । दोहत पय तापर नाखे ॥ १५ ॥
 ततकाल सुअगनि चढ़ावे । लकडी वालिर अढावे ॥ सखरो जीमण जहं होई । तहं दध करे नहीं सोई ॥ १६ ॥
 पय करणें की जो ठाम । सीलो करिहै पय ताम ॥ भाजन जु भरतका माहीं । जावनदे केन जमाहीं ॥ १७ ॥
 जावणकी जधिधिसारी । भालो गुल मूत्र मकारी ॥ बेसा ही जांयणरोजे । वहै टालि न ओर गहीजे ॥ १८ ॥
 इह प्रातउणी विंथ जानू । अथ सांजतणी सुखानू ॥ सत्र किरिया जानी वाही । इह विधि सुन्दरही जमाहीं १९ ॥
 जंनलीय वरणकी जाग । तहं हाथ न सखरां लाग ॥ सोभी त्रिधि कहहु वखाणी । सुणव्यो सत्र भविजन प्राणी ॥
 लिडकी इक जुदो रवाही । तिह थारि किवाइ ऊडाहीं ॥ हें प्रात जवै दांध आनी । मथिहें सो मेलि मथानी ॥ २० ॥
 जो सगली किरिया भाखी । गोरस विधि आग आखी ॥ लुएयो निरुते ततकाल । अबटावै सो दरहाल ॥ २१ ॥
 वासणमें तनि पयाही । चंे खरन जितने ककवाहीं ॥ कहां बरत कहां छदभय । घृत गृही सोधिको खाय ॥ २२ ॥
 पंतो घृत खेवे बालो । अंतराय मुनीति प्रतिपालो ॥ यह कथन कियो सत्र सांच । याके न अलिकी वांच ॥ २३ ॥
 एसी विधि निपजे नाहीं । गोरसकथ न थमाहीं ॥ मेलिन देखो बर राई । घृतखाय छदेय बवाई ॥ २४ ॥

विधि बाही जिम ह्यावै । किरिया जुत ताहि जमावै ॥ दथ छाखि घिरत पय लूनी । विधि कही करय नवि ऊनी ॥५५॥
 निज घर जो घृत निपजाहीं । अत धरि आवक सो खाहीं ॥ कर छुई न माली व्यास । हिंसाकस नई नहीं तास ॥५६॥
 प्राणी न परै जिह माहीं । सोतो घृत सोधि कहाहीं ॥ घृतसो निज घर निपजइये । ब्रबधर सो ब्रतमै पइये ॥ ५७ ॥
 निज घर ब्रत विधि न मिलाहीं । ब्रतधरितव लखो खाहीं ॥ अरु धिसल सोधिको सावे । ब्रतमें बहु हरी मंगावै ॥ ५८ ॥
 इह सोधि न कहिये भाई । जामैं करण न पलाही ॥ करणजुत कारिज नीको । सुखदाई भवि सवहीको ॥ ५९ ॥
 दोहा ।

घिरत सोधि काकी बुविथ, कही यथारथ सार । आखी जाणि गहीजिये, बुरी तजहु निरधार ॥
 चौपाई ।

अब कछु क्रियाहीन अति जोर । मगटयो महा मिथ्यात अघोर ॥ आवक सो कवहू नहीं करै । आनमती हरपित विस्तरै ॥६०॥
 जैन धर्म कुल करे जीव । करे क्रिया जो हीणु सहीव ॥ तिनके संबोधनको जाण । कहे तासकी चालि बसाण ॥६१॥
 तिहको तजे विवेको जीव । करवेते भवभमें अतीव ॥ अब बुनियो शुधिवत विचार । क्रियाहीन वरणन विस्तार ॥६२॥
 इति सोधिका घिरतकी मरयादा का कथन संपूर्णम् ।

अथ मिथ्यामत कथन ॥ दोहा ॥

मिथ्यामति विपरीत अति, हुंदा प्रकटा जेम । किनि बरनन संत्ते पते, कहाँ सुनी हो नेम ॥ ६३ ॥
 चौपाई ।

रथामी भद्रवाहु मुनिराय । पंचम श्रुत केवलि सुखदाय ॥ मुनिवर अवर सहस चौवीस । चउप्रकार नंधहै गणईश ॥६४॥
 उज्जैनयो में जिनदत्त सार । ताके भद्रवाहु मुनि तार ॥ चरयाकों पहुंचे तहंगणी । जूतत बालकवच इम भणी ॥६५॥
 गच्छ गच्छ विधि नहीं अहार । वारे वरपलंगे निरधार ॥ अंतराय मुनिवर मानि आनि । पहुंच जंघ जहां वनथान ॥६६॥

स्वामी निमत लख्या तत्काल। पांडुहें बारा चरण दुकाल ॥ मुनिवरधर्म संधे न बिसह्यी। अरवइहां रहनी जुगती नह्यी ॥ ९७ ॥
 कितक मुनि दक्षणको गए। कितक उज्जैनी थिरहे ॥ तहां काल पड़ियो अति घोर। मुनिवर क्रि या अष्ट षडै जोर ॥ ९८ ॥
 मत स्वतंत्र थापियो ज्ञान। गही रीत उलटी जिनवान ॥ तिनको गच्छ बंध्यो अधिकार। हुंडाकार दोष निरधार ९९
 तिन अतिहीन चलन जो गबो। चरित जु भद्रवाहुमें कबो ॥ तार्पछि पनरासे साल। कितेक वर पाए। इह बाल १०० ॥
 लुका मत प्रगटयो अति घोर। पापरूप जाको नहिं ओर ॥ तिनसेतं दुंडा मत थाप्यो ॥ काल दीष गोडो व्है टाप्यो ॥ ११ ॥

बन्दवाल !

पापी नहिं प्रतिमा माने। ताकी अति निन्दा ठाने ॥ जिनगेह करनकी बात। तिनको नहिं मूल उहात ॥ २ ॥
 जात्रा करवो न बखाने। पूजा करिवो अवगाने ॥ जिन बिम्ब प्रतिष्ठा भारी। करिवो नहिं कहे जगारी ॥ ३ ॥
 जिन भाष्यो जिम अनुसारी। रचिया मुनि ग्रंथ विचारी। तिनको नहिं अधिकारि। गीतम वचन कहाई ॥ ४ ॥
 ऐसेनिर बुझी भापे। कलपित भूटे श्रुत आवै ॥ सबको विपरीति गहावे। निजपोटे मारग लावे ॥ ५ ॥
 जिय उत्पत्ति भेद न जाने। समकित हू कों न पिछाने ॥ गुरु देव शास्त्रनहिं ठीक। किरिया अति चलै अलीक ॥ ६ ॥
 निजको माने नहिं मुख धान। बढो मुनि पद सरधान ॥ जाँसै मुनि गुण नहिं एक। मिथ्यानिज मत की टेक ॥ ७ ॥
 मुनि नगन रूप कों धारे। चारित तेरह विधि पारे ॥ षट काय दया व्रत राखे। नित्य वचन सत्य जुत भाखे ॥ ८ ॥
 अरुदान अदक्षहिं धारे। सीलांग भेद विधि पारे ॥ त्यागे परिग्रह चौकीस। गोपेतिहुं गुपति मुनीस ॥ ९ ॥
 ईर्ष्यापथ सोधत चाले। हित भित भापाहिं सखालै ॥ आवक धरि असन जु होई। विधि जोग जेवनपजोई ॥ १० ॥
 भोजन के दोष छियाली। निपजाने आवक ठाली ॥ चरया को मुनिवर आही। आवक तिन लेपडिगाही ॥ ११ ॥
 मुनि अंतराय चालीस। उपर बहठालीज तीस ॥ पात्रे तो लेइ अहार। इम एषणा समित विचार ॥ १२ ॥
 आदान निक्षेपण धारे। पंचम समित विधि पारे ॥ इम चारित तेरह भापे। जैसे जिन चानी आपे ॥ १३ ॥

गुण मूल अष्टाईस धारी । उत्तर गुण लख असिचारी ॥ गिरि शिखर कंदराथान । निरंजन धरय हृदयान ॥१२॥
 श्रीपम गिरि सिर रवि ताप । सिला परिठाढ़े आप ॥ वरषा रितु तब तल ठाढ़ो । उपसगं सहे आंत गाढ़ो ॥ १३ ॥
 हिम नदी तलाव नजीक मुन सहस परीपह ठंंक ॥ निज आतम सों लव लागी । परचरतु सकल परस्थानी ॥१४॥
 पूअकनिंदक सम भवै । दृण कनक समान जु ताके ॥ इत्यादिक मनि गुण धार । कहतें लहिंये नहि पार ॥१५॥
 इनतें उलटी जे रीत । धरै ढूंढ्या विपरीत ॥ आहार जु सीलो बासी । रोटी रावड़ी सगरासी ॥ १६ ॥
 कांजी दुय तिय दिन केरी । बहुत्रसजीवनि की बेरी ॥ तरकारी हरित अनेक । ले पापी धरि अविबेक ॥ १७ ॥
 आदो कदो अर अरण । मूला त्रस थावर पूरण ॥ ए लेय आहार मभारी । बहुके मद्यया विनपारी ॥ १८ ॥
 अथाणोत्रस जिसधाम । फासूगिन लेहं ताम ॥ फुनि काथो दूध गहाई । बहुवार लगै रखवाई १९ ॥
 दुय घड़ी गए तिह माहीं । पंचंद्री जीयउपजाहीं ॥ मदिपी गौतणो जु खीर । तैसे हे जीव गहोर ॥ २० ॥
 इह भेद नूद नहिं जानें । अथवाल अगन वखानें ॥ पंचेद्रि तामें थाइं । सुलोफांशु गणवाई ॥ २१ ॥
 जिय अनंतणी दुयदाल । दधि छांछि मांहि दे डाल ॥ सो भोजन विदल कहांही । स्वायें ते पाप बढ़ाही ॥
 अन्न दाल छाछि दधि जेइ । मुखलाल मिले तब तेह ॥ उतरता गला संभारी । पंचंद्री जिय निरधारी ॥२२॥
 उपजै तामांहे जानो । मननै सशय नहिं आनो ॥ सो खेहे ढूंढ्यां पापी । करुणा तिन निश्चै कापी ॥ २३ ॥
 कवखादि अखादि विचारी । ढूंढ्या सपके न गर्वारी ॥ अथ उपजे वस्तु जुमाहीं । भाथो सुनि लेहु तहांहीं ॥ २४ ॥
 ऐसो पापी मुख देखे । हे पाप महासुविजसे ॥ ऐसे कर अथ आचार । तिन माने मूढ गवोर ॥ २५ ॥
 धोवण जांवल हांडीओ । तिन लेगिन फाम् नीको ॥ सीले जल अन्न पिलाई । तानें बहु जीव उपजाई ॥ २६ ॥
 रवि उदय होत तिह चार । धरि धरि भटकै निरधार ॥ जल न्यावे फासू भाखे । तिह सांभलगे धरि राखे ॥ २७ ॥
 उपजै ता माहे जीव ॥ घटिका दुइ मांछि अतीव ॥ सो चरतै पीचे पानी । करुणा न तहां ठहरानी ॥ २८ ॥

दूत जलधरि तेल छचाम । सो बहु जीवनको धाम ॥ तिनते निपज्यो जु अहार । सो मांस दोष निरधार ॥ २३ ॥
 ऐसी दोष न मन आन । तिनको हो नरक पयान ॥ ढढा अघकरी मृत । इन माने पापी धूरत ॥ २९ ॥
 भूमीको सांच बखाएँ । उपदेश छ भूटा ठाणै ॥ भूटो मारग जु गहाँवै । सो भूट दोषको पावै ॥ ३० ॥
 सालांग हजारअठारा । लागै तिन दोष अपारा ॥ परिग्रहको ठीक न कोई । कपडा पात्रादिक होई ॥ ३१ ॥
 ऐसो धरि भेन जुहीन । मानें तिन गरल दोन ॥ ग्यारा प्रतिमा प्रतिपालक । कोपीन कमएडल थारक ॥ ३२ ॥
 कोमल पीकी है जाके । आवक व्रत गिनिय ताके ॥ पारग्रह तिल तुस सम होई । मुनिराज धरि सो सोई ॥ ३३ ॥
 वह जाय निगद मझारी । जिनवाणो एम उचारी ॥ सो कपडाकी कहाँ रीत । चोथो पात्र विपरीत ॥ ३४ ॥
 एअरै जगतके माहीं । दुखको नहिं अन्त गहाहीं ॥ तिन कहै महाव्रतधारी । ते पापो हीणाचारी ॥ ३५ ॥
 इन माने ते संसार । अग्निहै न लखै कहुं पार ॥ मन वच तन गुपति न गोपै । पापी छुनि धरमहि लोपै ॥ ३६ ॥
 पिरथी निज प्रान लहाहीं । चालै निम भागे जाहीं ॥ ईर्या समिति जुक्तिम पाली । माणी हिसा किम टाली ॥ ३७ ॥
 हित मित वच कबहूँ न भाखै । जिन मत तें उलटी आखै ॥ सम निज भापा न पखैहे । अदया कवहूँ न टलैहे ॥ ३८ ॥
 किम एणण समित सधैहे । जिनके इम पाप वधैँ है ॥ जो दोष रहित आहार । नविजाने वसु विध सार ॥ ३९ ॥
 मुनि अन्तराय जे होई । तिननाम न समझ कोई । कुञ्ज ऊंच नीच नहिं जाणै । शूद्रनके असन जु आणै ॥ ४० ॥
 तबोली जाट कलाल । गूजर अहीर वनपाल ॥ खतरी रजपूतरु नाई । परजापति असन महाई ॥ ४१ ॥
 तेली दरजी अर खाती । खिपादिक जाति बहु भांती ॥ मांदराहूको जो पीवै । आमिपहु भखे सदीवै ॥ ४२ ॥
 भोजन नित भाजन करी । ल्याय अति दोष वनेरो ॥ तिन भीटो भोजन खैहे । त मांस दोषको वैहे ॥ ४३ ॥
 तो भोजन की कहै वात । जानें सव जगत विब्यात ॥ जिइ भाजन असन कराहीं । आमिप तिह मांज थराहीं ॥ ४४ ॥
 जिन मारग एम कहाहीं । वासन जिह मास थराहीं ॥ संगुद्ध न वैहे चिरकाल । महोहे सो भोल चंडाल ॥ ४५ ॥

तिनके घरको जु आहार । पापी स्यावे अविचार ॥ अरु सुनिवर नाम भराबे । सो घोर पाप उवकावे ॥ ४६ ॥
तेनरक निगोद भकारी । अमिहै संसार अपारी ॥ अपने आवक तिन भनि है । कुल ऊंच नीच नविमिनिहै ॥ ४७ ॥
तिनको कछु एक आचार । कहिये विपरीत विचार ॥ निजको मानै गुणथान । पंचम आवक परधान ॥ ४८ ॥

दोहा ।

खत्री, ब्राह्मण, वैश्य, फुनि, अवर पौख बहसीस । धरम गहै ढूँढा न को, अरु तिन नावे सीस ।
ढूँढा तिन आवक निने, आप साधु पद मान । बहोकाय रजा सवन, उपदेशी इहवाल ॥ ४९ ॥
कथन किबो ऊपर सबै, लखडु विवकी ताहि । दुहुन चलन के एक से, इहि मारग नहि आहि ॥ ५० ॥
बूढ़ काम करता जिके, निजनिज कुल अनुसार ॥ पेट भरन उद्यम सफल, करै दया किम धार ॥ ५१ ॥

चौपाई ॥

गूर जाट अहीर किसान । खत्री सौंचे निरनिवान ॥ हलवाहै तस को हे घात । कहुँ वह आवक पद किमपात ॥ ५४ ॥
पवे अहाव प्रजापति गेह । अगनि निरंतर बालत तह ॥ होत घात सब जीवन तनी । तिन को कैसे आवक भनी ॥ ५५ ॥
अवर हीन कुल है अत्रतार । ढूँढ्या मत चाले निरधार ॥ मदिरा पीवे आमिप भखे । धरम पले तिनके किमअखै ॥ ५६ ॥
बाण्या बिन बोधो जोनाज । घृत गुल लूण तैल बडु साज ॥ होप घात तस जीव अपार । तिनको आवक कहै गँवार ॥ ५७ ॥
हीन करम करि पेट जुभरे । तिनपे कहुँ करुणा किम परे ॥ जैसी जात हीन निजतणी । मानै आप साध पद भणी ॥ ५८ ॥
तैसेही आवक तिन तणे । कुकरम पाप उपावें धणे ॥ ऐसे मत को चावोगिणे । ते पापी इम आगम भणे ॥ ५९ ॥

दोहा ॥

सांचे भुटे मत तबी, करि विपरिजा सार । सांचो लखि हिरदय धरो, भुटो दीजे टार ॥

अथ श्री प्रतिमाजीकी महिमा वर्णन ॥

होहा ।

श्रीजिनवर प्रतिमा तणी, महिमा जो अतिसार । सुनयो जिनागम में कथन, मति वरणयो निरधार ॥ ६१ ॥
जोपाई ।

मिथ्यादृष्टी एक हजार । तिनकी जो महिमा निरधार ॥ एक मिथ्याती जैनी भास । सबही सरभर करै न तास ॥ ६१ ॥
जेन भास सहस्र इक जोई । तिन सबही की प्रभुता होई ॥ सम्यक दृष्टी एक प्रमाण । तिसहि बराबर तेनहि जान ॥ ६२ ॥
सस्यदृष्टी गिनहु हजार । एक अणोत्रत धारी सार ॥ महिमा गिनहु बराबर सबो । इह जिन् भारग माहे कही ६३ ।
इशत्रवी इक सहस्र खजान । सुनि प्रपत्त गुणधान प्रमाण ॥ एक वरावर महिमा धार । आगे सुनहु कथन विस्तार ॥ ६४ ॥
सुनि प्रपत्त एक हजार । तिनको जो प्रभुत्व विस्तार ॥ इक सामान केवली सही । दोस वरावर संशय नहीं ॥ ६५ ॥
हे सीमान केवली तेह । महिमा एक सहस्र की खेड । समवसरन धारी जित देव । तीर्थकर इकसन शिकि एव ॥ ६६ ॥
परतखि समवसरण जुत होय । तीर्थकर पद धारी सोय ॥ एक हजार प्रमाण बखान ॥ एक प्रतिमा सामानता ठाल ॥ ६७ ॥
कोई प्रश्न करै इह जाण । तीर्थकर इक सहस्र प्रमाण ॥ प्रतिमा एक वरावर कही । इह महिरे बहरत नहीं ॥ ६८ ॥
तोके सम जानन को वैन । कहिये हे अतिही सुखदैन ॥ त्यों प्रतिमा पूजव सरधान । अति गाढी राखो प्रतिमान ६९ ।
खन्दचाल ।

जिन समवसरण जुत राजे । पूर्व उतकृष्ट सुखाजे ॥ निरखत उपजे पैराग । इहे शान्त चित्त अतुराग ॥ ७० ॥
परतत्त तिट्ट भगवान । समवादि सरनजुत थान ॥ पखतखुवास वडात्रे । भत्रिजन हिरदय न समवे ॥ ७१ ॥
तिनकी वाणी सुनि जाय । तरिहे भव उदधि अतीव ॥ जिनवर नत्र मोक्ष लुहाई । तत्र जिनप्रतिमा उहराई ॥ ७२ ॥
नरखत प्रतिमाको कणन । बुधजन हीये उपवी शान ॥ तिनको निमित्त भविजीव । जगमें लुहिहे जुसदीव ॥ ७३ ॥

प्रतिमा आकृति लखि थीर । रुपजे वैराग गहीर ॥ मन बीतरगता आनै । तप ब्रत संयमको ठानै ॥ ७४ ॥
 दरसन प्रतिमा निरधार । भविजनको नित उपगार ॥ जिनमारग धरम बढ़ावै । महिमा नहि पार न पावै ॥ ७५ ॥
 जे प्रतिमा दरशम करिहै । पूरव संचित अम हरि है ॥ कहिये का अधिक बखान । दायक भविजन सिवथान ॥ ७६ ॥
 ऐसी प्रतिमा जुत होई । भविजन निरश्रै चित सोई ॥ मम वच क्रम धरिहै ध्यान । ज्यों न्है सब विधि कल्याण ॥ ७७ ॥
 कोऊ पूछे फिर येह । कहु साखि ग्रन्थकी जेह ॥ तिनको उत्तर ये जानी । बुनियो तुम कहूँ बखानी ॥ ७८ ॥
 साथमी द्विज सुखधाम । सहदेव नाम अभिराम ॥ पूरव दिशि सेती आयो । सो सांगनेर कहायो ॥ ७९ ॥
 पढ़ियो जो ग्रन्थ अनेक । जिन मत धरे चतुर विवेक ॥ गाथाबंध सततरि हजार । मझा धवल ग्रंथ अति सार ॥ ८० ॥
 तिहकी टीका सुखदाई । लख सादातीन कहाई ॥ ते श्लोक संस्कृत सारै । तिन कंठ भलीविधि धारै ॥ ८१ ॥
 तिह कथन कियो सब पाहीं । महा धवल थकी मुकहांहीं ॥ ताकी लखि वापरतीत । पूछी जिनमत बहुरीत ॥ ८२ ॥
 जिहनीसांकरी विधि सेती । आगम प्रमाण कहि तेती ॥ जैनी पंडित बुबखानी । परतखिए भवि मानी ॥ ८३ ॥
 प्रतिमा दरसन समलोक । मधि अवर न दूजो थोक ॥ प्रतिमा पूजा जे कारक । तो होइ करम ते फारक ॥ ८४ ॥
 प्रतिमा की निन्दा करिहै । ते नरक नियोदे परि है ॥ प्रवर्चन पंच प्रकार । पूरण करिहै नहि पार ॥ ८५ ॥
 श्रावक मत जैन दिगम्बर । कुलधर्म कछो जिय जिनवर ॥ मन वच क्रम ताहि गहे है । सुर हे अनुक्रम शिव पैहै ॥ ८६ ॥
 पूजा जिन प्रतिमाकीजे । पात्रन बहुदान नू दीजे ॥ तप सोलभावभुत पारं । अरु कुगुरु कुदेवहि दारै ॥ ८७ ॥
 विनु जैन अवर मतवारै । वातुल सय गनिए सारै ॥ गहलीनर जिससतिम भाखै । कुमती जिम भठी आखै ॥ ८८ ॥
 श्रावक कुल जिहि अत्रतार । जिन भर्महि तजहि गंधार ॥ हूँब्या मत्तको जोलीहैं । ते नरक निगोद परैहैं ॥ ८९ ॥
 सांचो भूजो न पिछाणै । अविबेक हियें में आणै ॥ प्रतिमा निदक ज जीव । तिनको उपदेश गहीव ॥ ९० ॥
 ताके पोते संसार । वाकी कछु वार न पार ॥ चहुंगति दुख विविध भरंतो । हलिहै बहु जानि धरन्वो ॥ ९१ ॥

यातें जे भविजन धीर । हुंतांमत पाप गहीर ॥ बांडी लेखि अति दुखदाई । निहचै जिनराज दुहाई ॥ ६० ॥
 जिनमत हिरदय अचधारे । जप तप संयम व्रत पारे ॥ ताते सुख सहै अपार । यामें कछु फेर न सार ॥ ६१ ॥
 इति श्रीप्रतिमाजीकी वखन तथा दृढ्याको मत निषेधन संपुण्यम् ॥

चौपाई ।

अब कछु क्रिया हीण अति जोर । प्रगट्यो महा मिथ्यात अघोर ॥ श्रावकलां कवहुं नहिं करे । आनमती हरषित विस्तरे
 जैनधरम प्रतिपालक जीव । कर क्रिया जे हीण सदीव ॥ तिनके सम्बोधनको जान । कहौ क्रियात हीण बवान ॥ ६३ ॥
 तिनको तनै विवकी जीव । करतत भव भ्रम अतीव ॥ अब उणिषा बुधिनत विचार । क्रियाहीन वरणन विस्तार ॥ ६४ ॥
अथ मिथ्यामत निषेधन ॥ चौपाई ॥

भाइव गए लगे आसोज । पडिवा दिवसतणी बुनि मोज ॥ लहकी बहुमिलि गोबर आनि । सांभी मांई अतिहित ठानि ६५ ॥
 पहर आठलौं राखे जाहि । फिरहुजे दिन मांई ताहि ॥ मांई दिन नवनव रीति । तेरसका दिन लौं धार प्रीति ॥ ६६ ॥
 चौदस अमावस दसदिन जाहि । सांभी वड़ी जुनाम धराहि ॥ मिले पांच दस प्रौढा नारी । मांई ताहि विचारि विचारी ६७ ॥
 हाथपांच मुख करि आकार । गोबरका गइना तनधार ॥ उभर चिरमो जत पोस लगाय । कोड़ी फूल लगावै जाय ६८ ॥
 इम विपरीत करै अधिकाय । तास पापको कहै बनाय ॥ खोड्यो वांभण सांभी लेन । आयो भावै बनिता बैन १०० ॥
 राति जगावै गावै गीत । ऐसी महा रचै विपरीत ॥ करि गुलथाणी देनाहणा । आवै सो राखै पूर तणा ॥ १ ॥
 बुद्धि पडिवा को ताहि उतारि । नदी ताल माहे दे डारि ॥ ऐसी प्रभुता देखी जास । देवमान पूजत है तास ॥ २ ॥
 अरुसांभी क्रिसकी हे धिया । कोपोड्योद्विज कुण कीतिया ॥ गोबरकी मांई किमतिया । वरसावरसी कहुंसमजिया ॥ ३ ॥
 परगट लेखि निज रां इह रीति । माने ताहि धरे बहु प्रीति ॥ पापी भेद लहै तसु नांहि । गोबर सरदरहै जा मांहि ॥ ४ ॥
 घटका देग्य वोतहे जवे । तामें तस उपजतहै तबे ॥ तिनके पाप तणौं नहिं पार । भव भव मों दुख को दातार ॥ ५ ॥

महीं मिथ्याति तणो जे गेह । नरक तणी दीयक है जेह ॥ छेदन भेदन तांपन जंहं । ताडन सूला रोहण तहां ॥ ६ ॥
 दुखभुगतै तहं पंच प्रकार । इसमिथ्यात थकी निरथार ॥ जिन मतके धारी हं जेह । सो भेरी विनती सुनि एह ॥ ७ ॥
 नहीं माहि मतं पूजि लगार । इह बसार बढ़ावन हार ॥ आन प्रती पूजत मन लाय । तिनसौं कछु कहनो न वसाय ॥ ८ ॥

सौरा ॥

दिनपनरे के मोहि, मरण दिवस पितमात को । आवक के हरपाहि, जे जिन मारग ते विमुख ॥ ६ ॥
 बंद बाल ।

पितमाक तुपति के हेत । भोजन बहु जन को देत ॥ कैसे तुपति है तेह । जिन आगम भाज्यो एह ॥ १० ॥
 सुएहुए वरप घनरे । सुखदुख भुगति भव करे ॥ तहां ते बहु किम कह आवै । जिन मत में इह न समावे ॥ ११ ॥
 सुत असन करै पितु देखे । तुपतिन हें परत पर्यखे ॥ ती आन जनम कहा बात । जानो ए भाव मिथ्यात ॥ १२ ॥
 दुयकोस थकी निज वाग । सौंचे चित धरि अनुराग ॥ रूप न बढवा पी पावे । परभव किम तुपति लहावे ॥ १३ ॥
 ताते जिन मत में सार । ऐसो कबो न आचार ॥ इए दोर मिथ्यात गुजाणी । तजिए भवि उत्तम प्राणी ॥ १४ ॥
 अठे आसोजजारी । अरु पूजे चेत दिहारी ॥ करि के न्यारीक सार । बांटे तमु धर वर वार ॥ १५ ॥
 गुल धिरत सुपारी रोक । नालेर धरे दं डोक ॥ निजबहनभुवा को देहे । धरि लोभहिए के लेहे ॥ १६ ॥
 लेने देने को पाप । मिथ्यात बढे संताप ॥ ताते जेनी है जेह । पूजी न चढ्यो कछु लेंह ॥ १७ ॥
 सतियन की राति जगावै । पित्रनहू कोजु मनावै ॥ बीजासक सोकि आराधे । जागरण करे हित साधे ॥ १८ ॥
 कंजोडा अवरकंवारा । गोरणीय जिमावे सारा ॥ तिनके करितिलक लिलाट । पायनिदे डोक निराट ॥ १९ ॥
 पैसादिक तिनको देई । के हरपि हरपि चित लेई ॥ इह किरिया अति बिपरीति । अंडी बुध जाण अनतीति ॥ २० ॥

अद्विष्ट ॥

बीजासण को करविभालरो उरि धरे । सोकिउ घंडत घंडाय पातरी हिय परे ॥
मह मान तिन पुने परे लखभी जवे । उदै असाता भये वेचि खाहे तवे ॥ २१ ॥

दोहा ॥

सकलाई तिन नै इसी, अविवेकीन लखाहि । सुरभखमें बहु मानता, उरभैल सो विक जाहि ॥ २२ ॥
खेन पालकी थापना, एम बनावे कुर । जिसातिसा पाषाणपरि, डरे तेल विदूर ॥ २३ ॥

छंदचाल ॥

त्रैशाल नै घर के यारे । पूजे दे जात विचार ॥ तेल चंदरुवोंकला तेल । ऐसे पूजा विधि मेल ॥ २४ ॥
दसवीस त्रिवा धरि मीति । गावे जु गीत विदरीति ॥ सेवे तिह माने देव । सो जाणिमथ्याली एवं ॥ २५ ॥
बहुते खडा पुर माम । इक सेन कही तसुनाम ॥ ताते सकलाई माने । खखंडातो एम बखाने ॥ २६ ॥
दीया सुते जो उपजाही । सुतायिन तिय कॉन रहंहीं ॥ इह भूट थापणो जाणो । तजिय भंकि उंचम प्राणो ॥ २७ ॥
पाहण लघु धरे इक ठाहीं । पथचारी नाम कहाही ॥ तिमि को पूजत धरि नेह । कबहु न सुखदोता तेह ॥ २८ ॥
मिथ्यात तणो अधिकार । नरकादिक दुख दातार ॥ जिन भाषित परंचितदीजे । खोटी लेखि तरत तजीजे ॥ २९ ॥
अमसीज है आठे स्वेत । घोटक पूजे धरि हेत ॥ जिन राज एम बखानी । तिरयंघहे पूजे प्राणी ॥ ३० ॥
सो पाप अधिक उपजावे । कहते कछु औरन आवे ॥ ताते जैनी जो होय । पसु पूजिन नरभवं खोय ॥ ३१ ॥
दुसरा हाकादिन माहीं । लाड पीर लेजाहीं ॥ इह रीति तजो भवि जीव । जिन वच धरि हृदय सदीव ॥ ३२ ॥
जिन चैत्यन बनके माहीं । पुन्यो दिन सरद कराहीं ॥ आगम नै कहु न बखानी । विपरीत तजी तिह जानी ॥ ३३ ॥
संगल तेरसि दिन न्हावे । वसतर बन उजले स्यावे ॥ आवे जव दिवस टिवाली । दीवा भरि तेल हवाली ॥ ३४ ॥

निज मन्दिर ऊपर धरिहै । अतिही शीभा सो करिहै ॥ तिनमें बहु असको घात । अघ घोर महा उतपात ॥ ३५ ॥
दीवा थालीमें धरिकै । मिलहै तसु घर घर फिरकै ॥ तिनमें कछु नाहं बडाई । प्राणो मरिहै आधकाई ॥ ३६ ॥
पापी कछु भेद न जानै । मनमें उच्छव अति टाँनै ॥ सो पापी महा दुख पावे । भव भामरि अन्त न आवै ॥ ३७ ॥
भरि तेल काकडा बाले । बालक हींढहि करवाले ॥ घर घर लीये सो डोले । बालक हींढहि वच बोले ॥ ३८ ॥
बहु हींढमारिं अस जांव । जलिहैं नहि संख्या कीव ॥ इह पाप न मनन आवै । सुत लखि दम्पति सुखपाव ॥ ३९ ॥
ते पापी जानो जोर । पडिहै जो नरक अघोर ॥ भविजन जो निज हितदाई । किरिया इह हीण तजाई ॥ ४० ॥
कांती छुदिएकै जानी । गोधन को गोवर आनी ॥ साथ्यो निज वार करावे । गोर्धन तनु नाम घरावे ॥ ४१ ॥
जब सांभ वैल घर आवै । पूजै तिन अति हरपावे ॥ सांध्यो निज पाय खुदावे । मिथ्यात महा उपजावे ॥ ४२ ॥
इन हीन क्रियाको धारी । जैहै सो नरक संक्षारी ॥ एकवान दिवाली केरो । करिहै धरि हरष घनेरो ॥ ४३ ॥
दुय चार पुत्र जे थाई । तिनको दे जुदी बनाई ॥ हांडीय भरे एकवान । पितु मात हरष चित आन ॥ ४४ ॥
पुत्रन सिर तिलक करावैं । तिनवै तो हाट पूजावैं ॥ सिरनाय तवै दे धोक । किरिया इह अघकी कोक ॥ ४५ ॥
व्यापारी वही बणावै । पूठा चमड़ा का ब्यावै ॥ तिनको पूजत है जह । लखि लोभ नहीं तसु एह ॥ ४६ ॥
तिथि चौथि महावदि मानी । व्रत पाप उदयको तानी ॥ दिनमें नहि लेय अहार ॥ निशि शशि जगे तिहिवार । ४७ ॥
ले मेवो दूध मिठाई । देखो विपरीत बढ़ाई ॥ जे चौथ मास छुदि होई । करिहै ज वंदेके खोई ॥ ४८ ॥
इम पाप थकी अधिकारि । दुरगति में बहु भटकाई ॥ पदरह तिथि में इह जानी । तसुकहि मकट की रानी ॥ ४९ ॥
पद देव मान करि पूजै । सो अति मूरखता हूजै । जैनी जनको नहि काम । मिथ्यात महा दुखधाम ॥ ५० ॥
संकराति मकर जब आवै । तब दान देय हरपावे ॥ तिल घाली मांदि भराई । द्विज जन को देय लुटाई ॥ ५१ ॥

मूलां का पिंड बर्गावे । ब्राह्मण के घरहि खिनावै ॥ स्त्रीचंडी वांट हर खावि । गिन है हम पुन्य बढ़ावे ॥ ५३ ॥
 जहँ त्रस थावर है नाश । तहँ किम है शुभ पर काश ॥ अति घोर महा मिथ्यात । जैनी न करै एवात ॥ ५४ ॥
 फागुण यदि चौदस दिन को । बारह मासन सैं है तिनको ॥ शिवरात तनो उपवास । कीए मिथ्या परकास ॥ ५५ ॥
 होली जालै जिहि वारै । पूजै सब भाल निवारै ॥ जाको देखन नहिं जइये । कर जाप मौन ले रहिये ॥ ५६ ॥
 पोछे बहु छार उड़ावे । जल ते खेले मन भावे ॥ ब्याएय अण ब्याएयाकी नहीं ठीक । लंपट न गिनं तहकीक ॥ ५७ ॥
 करि चरम पोटली होल । राखै मन करत किलोल ॥ यदवात दवा सुख भाखे । लघु बृह न गंका राखे ॥ ५८ ॥
 जल नाखै आपस मांही । नर तियनहीं लाज गहांही ॥ न्हावण के दिन सब न्हावि । कपडा उजरे तन भावै ॥ ५९ ॥
 सनवंधी गेह जुहार । करिहै फिरि है हित धार ॥ विपरीत लवण लखि एह । तामैं कछु नहिं संदह ॥ ६० ॥
 मिथ्यात तणी परि पाटी । क्रिया लागे जिन बाटी ॥ सो भव भवकी दुखदाई । मानों जिन राज दुहाई ॥ ६१ ॥
 दोहा ॥

चैत्रसित आठे दिवस, जाय सीतला थान । गीत विविध वादित्र जुत, पूजै मूढ अयान ॥ ६२ ॥
 भाष्यो रोग मधूरिया, जिन श्रुत बंदक मांहि । करवि कांकरा एकठा, धरी थापना आंहि ॥ ६३ ॥
 सोरठा ।

लखी बड़ाई एह, वाहन गदहो तासको । लहै हीन पद जेह, जो लघु नर हचदाइये ॥ ६४ ॥
 दोहा ।

शालक याही रोग ते, मरै आत्र जिह छीन जाकी दीरघ आयु है, सो सारै नकि सीन ॥ ६५ ॥
 सोरठा ॥

प्रगट भई कलिकाल, इह मिथ्यात कि थापना । जे जैनी सुविशाल, याहिन माने सरवथा ॥ ६६ ॥
 मेलै जे नर जांदि, नहीं गीत सुनि के खुसी । टका गांठि का खं हि, पाप उपावे अधिकवे ॥ ६७ ॥

गीताखण्ड ।

जे चैत वदि पढ़वा थकी गण गौरि की पूजा सजै । परभाति लड़की होय भेली गीत गाहै मन रुखै ॥
माली तणी बाड़ी पईचेर फूल दो ब्रह्मलै कर । बरपात मन उखाह करती आसह ते निज घरी ॥ ६८ ॥
यूजे तहां तिह दिवस सो ले फूज दोय चहायकै । पांचे बनावे हेत थरि गण गौरि आरि अणायकै ॥
ईश्वर महेडर करे मूरति आखि कोड़ी की करे । देखो बड़ाई नजर इमहो चित्र की अयता धरे ॥ ६९ ॥

छंद माराच ।

बणायतीज की मूणो चड़ाइ पूजि कै सही । बड़ी तियाक कन्य काइ कंत व्रत को गही ॥
करे । वठाम भोजना अनेक रूप मानि है । सुहाग भाव वरु नाम जेरेपिता बखानि है ॥ ७० ॥

गीता छंद

गण गौरि की पूजा किएजो, आयु पति की वितरै ॥ तो लखहु परतखि आयु छोटी प्राय मानव क्यों मरे ॥
कन्या कुंवारी पयाही तें तास पूजा आ चरै । वारह बरय की होय विधवा क्यों न तसु रत्ता करे ॥ ७१ ॥
साहिव तणी जां करे सेवा दिवस निति मन लायकै । धिंकार तसु साहव पणो कहु दन सेव कराय कै ।
द्रायक सुहागनि विरदु को गदि । सकति तसु अति हीनता ॥ सेवा करती बालु विधवा होय लहि पद हीनता ॥ ७२ ॥

तोड़कछन्द ।

सिगरी नर नारि इहे दरसे । अरि मूरखता फिरि कै परसे ॥ कछु सिद्ध लहै नहिं तास थकी । तिह ते तजिपुतु पूजनकी अरे

गीताखण्ड ॥

भूषन वसन पहिराय बहुविध अधिक तिय मिलकै गही । लेजाइ पुरसे निकसि बाहर पडु चिहै जल तीरही ॥
गावे तिनोद अनेक विनती नीरमें तसु डारही । अतिहरप धरतो हरप करती आय गेह सिधारही ॥

दोहा ।

इह प्रभुता सद् देखि कै, गौरी ईश महेश । वाकू जल में खैयतें, डर न कियो लवलेश ॥७५॥
रहत सकत तिह देखिये, कर विथापना मूढ़ । महा मिथ्याती ज्ञान तिन, धारें दोष अगूढ़ ॥७६॥

सोरठा ।

इत पूजै फल येह, कुगति अधिक फल भोगवें । धर्म नहि सन्देह, जैनीको इह योग्य नहि ॥ ७७ ॥
दुरलभ नर भव पाय, जैन धरम आचार जुत ॥ ताको जित तिसराय, पूज करै गण गौरिकी ॥ ७७ ॥
सो मिथ्यातको मूल, त्रिविध तजौ तिन दुखद लखि । होय धरम अनुकूल, ताते भव भव दुख लहे ॥७८॥

सवैया ३१ ॥

चांवड़ा बराही खेतपाल दुरगा भवानी पथवारी देव ईष्ट थापना बखानिये ॥ सत्तनाही नाभिग ललितदासं पथी
आदि नाना प्रकार भव परगट जानिये ॥ भ्रांभाकलवानी डाल भेव दीप त्रौ मुगाकी मंत्रते उतारै भुत डाकिनी
प्रमानिये । एती विपरीत घोर थापना मिथ्यात जोर अहो जैनी इन्हें कष्ट झाएह न मानिये ॥ ७६ ॥

सोरठा ॥

पीपर तुरसी ज्ञान, एकद्वी परजाय प्रति । नही ह्व पद डान, पूजै मिथ्यादृष्टिजे ॥८०॥

सवैया ।

खवाने पीर साह अज्ञमेर जाकी जाति बोलै पुत्रके गले में तांधी घाली चाम पाटकी ॥ मेरे सुत जीवै नाहि याते तम
पाय अहो सात वर्ष भए नीत पायनते बाटकी ॥ जलालदीय पंचपीर और बड़ी परिसने जाय करे बूरिमो कुबुजि
जिन राटकी । फतिहा पढ़वावैं जिंदा दरवेशको जिमावैं इह कबिहाल रीति मिथ्यातके थाटकी ॥८१॥

दोहा ।

तुरक आनके देवको, मानत नाहिं लसार । हिन्दू जैनी मूढमती, सेव वारस्वार ॥ ८२ ॥
या समान मिथ्यात जग, और नहीं है कोय । दुखद्वयक लखि त्यागिहै ॥ महा विबेकी सोय ॥ ८३ ॥

सवैया ३१ ॥

भादों बदि नौभी दिन गारिको बनायघोडो तापरिचढ़ावै चहुंवाण गोयो नामही । वावड़ी में जेलि कुम्भकारि
तिय कर धर लोभते पुजावत फिरै है धाम धामही ॥ ताको सुखदाई जानि मूढमती मानिठानि देत दान पायनभि
सेवे गाय गामही ॥ मिथ्यात कीरीति एह करे निरबुद्धी जेह कुगति तहैहै जेह वांका दुखपावही ॥ ८४ ॥ भादों बदि
वारस दिवस पूजै बख गाय रातिको भिजोवैं नाज लाहण के कामही । निकसैं अंकूरा तिनि मांहिं जे निगोदरासि
हरष अधिक धरि वांढें ठाम ठामही ॥ जीवन को नाश होय मानत तिवहार लोय कैसे सुखपावैं सोय पशू पूजे
नामही । महा अविचारी मिथ्याबुद्धीचारी नर नारी ऐसी कृया करे भुञ्ज लहै दुख धामही ॥ ८५ ॥

दोहा ।

हखद मांहिं रंग सुतको, गाज लंत है तेह । सुणें कहानी खोलते, रोठ करत है तेह ॥ ८६ ॥
धोक देय पूजे तिसे, कहि सुखदाई एह । नाम ठाम नहिं देवकी, भव भवमें दुख देह ॥ ८७ ॥

बन्दचाल ।

नारी जो गंधधरे है । बालक परब्रत करे है ॥ जनमें बालक जिहि वार । तसु औतिह लेत उतार ॥ ८८ ॥
केउन के ऐसी रीति । गावै विय मन धर प्रीति ॥ गाई चित अति हरपाई । ते ओलि हाट लेजाई ॥ ८९ ॥
केऊ रोटी के मांही । गाई के देत न खाहीं ॥ तामाहीं जीव अपार । गाई सो हीणाचार ॥ ९० ॥
ते अदयाके अधिकारी । पात्रें दुःखगति दुखभारी ॥ जिनके करुना मन मांही । ताकां दे दूरि न खाहीं ॥ ९१ ॥

दस दिन को है जबवाले । सूरज पूजे तिहकाल । लागै तसु दोष भिख्यात । जिन मारग ए नही घात ॥ ६२ ॥
 तीन्है जवन्हवणकरैहै । जलथानिक पूजन जैहै ॥ जलजीवन को भंभार । एकंद्रीनस अधिकार ॥ ६२ ॥
 जैनी जिनके घरमाही । संका चित मांहिघराहौं ॥ जलथानक जाय नदुजे । घरमाहिं परहंडी पूजे ॥ ६३ ॥
 ताको है दोष महंष । ततचिण तजिए गुणवंत ॥ दिन तीस तयो व्है बाल । जिन मारग में इह चाल ॥ ६४ ॥
 वसुदरव मनोहर लेई । चैत्याले गमन करेई ॥ ते बालक अंक मजारी । तिह साथ चलै बहु नारी ॥ ६५ ॥
 गावै जिन गुण हरखंती । इम मंदिर जिन दरसंती ॥ भगवंत चरण सिर नाथ । फुनि नृत्य रचै बहु भाय ॥ ६६ ॥
 वाजिन्न विविधि के बाजे । जासौं घन अंबर गाजे ॥ जिन भांन हरखि धरि सेवै । तसुजनम सफलता लेवै ॥ ६७ ॥
 श्रुतगुरु पूजे बहु भाई । जिन की युति में मन लाई ॥ भापै अति उत्तम कैन । सब जन मन कों सुख देंन ॥ ६८ ॥

दोहा ॥

जिन श्रुतगुरु पूजा पढ़ै, आवे अपने गेह । यथा सकति अरथी जनहि, दान हरपतें देय ॥ ६९ ॥
 सनमानें परिचार कौं, यथा योग्य परवान । जैनी इह विधि पुत्रकौं, जन्म महोको ठाम ॥ १०० ॥
 आठ बरस लों पुत्र जो, करइपाप विस्तार । तास दोष पितुं मातकौं, व्है हे फेर न सार ॥ १ ॥
 यातें बुनि निज कारमें, राखै जे मति मान । साल पदावै लाभखि, हे तत्र विद्यावान ॥ २ ॥

छंदचाल ॥

अवब्याह करन की बार । फिरिया जे व्है अविचार ॥ प्रथमहि जत्र लगनलिखावै । सज्जन दस बीस बुलावै ॥३॥
 चावल है जिन कर माहीं । पूजा सब लगन कराहौं ॥ करि तिलक विदा तिन कीजे । मिथ्यात महा बुगिनीज ॥४॥
 मांड़ि फिदि भीत विनायक । कहि सिद्ध सकल सुखदायक ॥ नर देह वदन तिरयच । सो तो सिधि देय नरंच ॥ ५॥
 तातें जैनी जो हेइ । ए जैन धिनायक सोइ ॥ साजी अवटावि जेह । पापह करण को तेह ॥ ६ ॥

जल तीन चार दिन ताई । रातै नहीं संक धाराहीं ॥ बसु पहर गये तिन माहीं । सनच्छन जे उपजाहीं ॥ १ ॥
 मांग्यो धर धर पहुंचावै । बहुतो सो पाप बढ़ावै ॥ बहुजामं मांदि वह नीर । बरतै जे बुद्ध गहीर ॥ ८ ॥
 उपराति दोष अति होई । मर्याद तजो मति कोई ॥ अखदी करण कै ताई । भिजवावै दालि अयांहीं ॥ ६ ॥
 सोदालि धोय सब नाल । बहुविधियां लगत न राखे ॥ घटिकां दुय्ये उसभाहीं । सन्च्छन जीवं उपजांहीं ॥ १० ॥
 यात भवेजन मन लावे । तस तुरतहि ताहि छकावै ॥ धोवण को पानी जह । नाखे बहु जतन करिय ॥ ११ ॥
 बसु सरद रहै नहीं जातै । बीखरिवाजांवे यतै ॥ सांके जो दालि पिसावै । वासनं भरि राति रसावै ॥ १२ ॥
 उपसावै अधिक खटावै । उपजे तस वारन पावै ॥ फुनि लूण मसाला डारे । करतै मसलें कहुवारै ॥ १३ ॥
 इमजोबनि नास करती । मनभाहीं हरप करती ॥ निजपरतिय बहुत बुलावै । तिनपै ते वडी दिवावै ॥ १४ ॥
 सो पाप अनेक उपावै । कहतै कबु ओरन पावै ॥ करुणा जाके मनि आवै । सोइह विधि वडी निपावै ॥ १५ ॥
 उनहै जल दालि भिजोवै । प्राडुक जल तैं फिर धोवै ॥ किरिया को दीप न लावै । सोदिन में कलौ करावै ॥ १६ ॥
 ततकाल वडी तनु देह । उपजावै पुन्य न छेह ॥ स्याणों जन अवर अंयाणो । दुहुं व्याह करे इह जाणों ॥ १७ ॥
 किरिया में भेद अपार । इकसुखदे इक दुखकार ॥ जाके करुणा मनभाहीं अविक्कं न कियां कराहीं ॥ १८ ॥
 बाणा की गाडो आने । अविक्की पूजा आने ॥ लकडी को थंभ बनाव । ताकां तिय पूजण आवै ॥ १९ ॥
 गावती गीत अनेरा । जोजो जिह धानक केरा ॥ भंठी पूजै करि टीकी । फारण लखिं संवहीको ॥ २० ॥
 संकडी राखी दिन एहे । तियचाकि पूजणो जेहे ॥ तिसि कां डारे बंधवावै । परियण सज्जन मिलि आवै ॥ २१ ॥
 तह पूज विनायक करिके । रोली पूजै चित धरि के ॥ अरुवारं चार विनायक । पूजे जानो सुखदायक ॥ २२ ॥
 इन आदि क्रिया विपरीति । करिहे मूख धरि भीति ॥ मिथ्यात भेद नहिं जानै । अयको डर मन नहिं आनै ॥ २३ ॥
 अयतैं है मरक तसेरा । कोरन आवै दुख केरा ॥ यतैं बुनि बुध जन एह । मिथ्यात क्रिया तनि देह ॥ २४ ॥

तातैं भव भव सुखपाव । आगम जिम रीज बतावै ॥ यातैं सुख बौछक जीवै । आझां जिन पालि संदीवै ॥ २५ ॥
 करिहै जे क्रिया विवाह । सिव मत माफिक यह राह ॥ मिथ्यात दोष इह जातैं । जैनी को वरजी यातैं ॥ २६ ॥
 पूरव दिस ज्योतिस जैन । कळयक लखीत सुख देन ॥ रहियो तिन माफिक व्याह । जैनी भरि करे लखोह ॥ २७ ॥
 तामें मिथ्या नहि दोष । सिवमत विधिहू नही पोष ॥ जैनी श्रावक जो पंडित । जिनमत आचार गु मंडित ॥ २८ ॥
 ते व्याह करावै आई । मनसै शंका न धराई । तिनहूं स्यो आपसमाही । सुत बेटी सगपन थाही ॥ २९ ॥
 प्रथमहि जो व्याह सचैहै । जिन संदिर पूज सचैहै ॥ वाजिज अनेक वजाके । कुवती जन संगल गावै ॥ ३० ॥
 कन्या वर को लजाही । जिन चरणानि नमन कराही ॥ जिन पूजिरआवे नहै । पीछे विधि एम करेहै ॥ ३१ ॥
 सज्जन परिवार संतोष । ऊपित भूषित जन पोषे ॥ जिन मत विधि पाठ प्रमाणै । अपराजित संज्ञ वपायै ॥ ३२ ॥
 वरकन्या दोहु कर जोड़ । फेरा कराय चरी कोड़ ॥ सपथी जन असन करावे । दुहं तरफहि हरप बढावे ॥ ३३ ॥
 देवो निज सकति प्रमाण । कन्या वर भूषणदान ॥ इह विधि जे व्याह कराही । मिथ्यात न दोष लगाही ॥ ३४ ॥
 गुरु देव धरम परतीत । धारो जनकी इह रीत ॥ तिनको जस है जगमाही । दूपण मिथ्यात तजाही ॥ ३५ ॥

दोहा ।

श्रीहणवन्तकुमार की, मूढ़ निधरि चित प्रीति । गाम गौम की थापना, महा द्यौर विपरीत ॥३६॥
 बन्दवाल ॥

मरति पापाण घड़वै । तसु ऐसे अज्ञ वनावे ॥ मानुष कैसे करपाये । बन्दरकोसो सुख थाय ॥ ३७ ॥
 लखी पूछ जु अधिकारै । मूरति इस भांति रचाई ॥ कहुं इक चत्री गु चुषावे । कहुं मखि रचिके पंधरावै ॥ ३८ ॥
 कहुं चोड़े निकटहि गाम । कहुं कांकड़ दूरहि धाम ॥ तिनतेल लगाने पूर । चरके कांवीर सिन्दूर ॥ ३९ ॥
 करिहै तखुलड़ा देव । बहु जन तिह पूजे एव ॥ पापी जन भेद न जानै । जिह आगे अदया ठानै ॥ ४० ॥

चौपाई ।

जात्री दूर दूर का घणा । आवै पायनमें तिह तणा ॥ जीव बद्ध करि तास चढ़ाय । निहचैते नरकहिजाय ॥ ४१ ॥
कामदेव हणमन्त कुमार । विधाधर कुलमें अवतार ॥ तीर्थङ्कर विनु जग नरजिते । तिहसम रूपवान नहिं तिते ४२ ॥
बन्दर वंशी खगपतिजान । धुजामाहिं कपि चिन्ह वखान ॥ माता अंजनी जाकी जानी । पवनजयतसु पिता बखानी ४३ ॥
दादी खगपति नृप पहलाद । जैनधर्म धरि चित अहलाद ॥ पालै देव गुरु श्रुत ठीक । महा सीलधारी तइकीक ४४ ॥
हणु कुमार दीक्षा धरि सार । मोक्ष गये सुख लहे अपार ॥ ताको भावै कपिको रूप । ते पापी पढ़िहै भवकूप ॥ ४५ ॥
आनमतीसों कछु न बसाय । जैनी जनसों कहुं समभाय ॥ जिनमारग में भाष्यो यथा । तिहु अनुसार चली सरवथा ४६ ॥
गंगा नदी महा सिरदार । जाको जल पवित्र अधिकार ॥ जिन पपाल पूजा तिह थकी । करिये जिन आगम में वकी ॥ ४७ ॥
जैनी श्रावक नाम धराय । हाड रुलावे तिह धितु माय ॥ धन्य जनम मानै जग आप । गंगा घालै मायरु बाप ॥ ४८ ॥
आनमती परशंसा करे । तिन वच सुनि चित हरषहि धरे ॥ मूढ धरम अघ भेदन लहे । वातुलसमजिम तिम सरदहे ४९ ॥
पदमद्रह हिमवन ऊपरी । ताइहते गंगा नीकरी ॥ विकलत्रस जलमें नहीं होय । बहु दिन रहैन उपजे वोय ॥ ५० ॥
याते याको जे बतिमान । उत्तम पानी नानै अति ॥ हाड रोम नालै अघथाय । अयते नरकादिक दुप पाय ॥ ५१ ॥
जिसपरजाय तजै सतकाल । और ठाम उपजे दरहाल ॥ हाडरलाए गंगा माहिं । कैसें ताकी गति पलटाहि ॥ ५२ ॥
जैनीजन तिन शिखा एह । जैन विरुद्ध कीजे हे तेह ॥ ते करिये नहीं परम सुजान । तिम उत्तम गति लहे पयाण ५३ ॥

अथ जनम मरणकी क्रियाको कथन ॥

दोहा ।

मरण समय कीजे क्रिया, आगमते विपरीत । पोखक मिथ्यादृष्टिकी, कहुं अनुहु तिन रीत ॥ ५४ ॥

चौपाई ॥

पूरी आयु करवि जे मरे । भेखिह सनहती ए विधि करे ॥ चून पिण्डका तीन कराय । सो ताके कर पास धराय ५५ ॥
आत पुत्र पोताकी बहू । धरि नाखेर धोकदे सहू ॥ पान गुलाल कफन पर धरे । एम क्रियाकरिल नीसरे ॥ ५६ ॥
दग्ध कृत्यो पाछे परिवार । पानी देय तबै तिह वार ॥ दिन तीजो सो तीयो करे । भात सरा इम साणे धरे ॥ ५७ ॥
चांदी सात तवा परिवारि । चन्दन टिपकी द नर नारि ॥ पानीदे पाथर खटकाय । जिन दर्शन करिके घर आय ५८ ॥
सत्रपरिजनजीमत तिहिवार । बांवां करत गास निकाार ॥ सांभू लगे तिहिठांकरि खाय । गायबवाक देय खुवाय ॥ ५९ ॥
जिह थानक मुवो जन होय । लीपै ठाम करै मृग्व होय ॥ फरे ताऊपरिके रडी । ए मिथ्यात क्रियाअति बडी ॥ ६० ॥
ए सत्र क्रिया जैन मत मांहि । निंद सकल भाषे सकनाहि ॥ अवर क्रिया जे खाटा होय । सकल त्यागिण्युधजनसोय ॥ ६१ ॥
जवजिय निज तजि के परजाय । उपजे दूजी जतिमैजाय ॥ इक दुय तिन समये के मांहि । लेइ आहार तहां सकनाहि ॥ ६२ ॥
गतिमाफिक पर्यापति धरे । अंत सुहरत पूरो करे ॥ जिहगतिही में मगन रहाय । पिछले भव कुण यादिकरांय ॥ ६३ ॥
पिंडमेखिह तिहि कारण लोय । धोक दिये जैलै नहीं सोय ॥ पाणी देवे कीजो कहै । सूप को कचहुन पहुँचिहै ॥ ६४ ॥
भात सराई काकै हेत । बहतो आय आहार न लेत ॥ जाकै नियत काहियेगास । पहुँचै वहाँ यहै मन आस ॥ ६५ ॥
सोजाणै सरख की वाणि । मुवो गास लेय नहिं आणि ॥ गडके रडीगांसीखाहि । अर मूढ किम पहुंचै ताहि ॥ ६६ ॥
मृत्यकयंमि फिरै के रडी । सो मिथ्यात भूल अति बडी ॥ उलटी क्रिया ते हूँ पाप । जो दुरगति दुख लहै संताप ॥ ६७ ॥
याते जैन धरम प्रतिपाल । जे बुभ क्रिया अमूडी चाल ॥ तिनह भलि मति करियोकोय । जोआगम हिरदैहडहोय ॥ ६८ ॥
पूरे आयु करि विजिय मरे । तापीछं जैनी इमकरे ॥ घडी दीय भै भूमि मसान । ले पहुँचै परिजन सब जान ॥ ६९ ॥
पीछे तास कलेवर मांहि । तसअनेक उपजे सकनाहि ॥ महो जीव विन लखि जिह थान । सूको प्रासुक ईधणआन ॥ ७० ॥
दग्धकरवि आवै निज गृह । उसनोदक स्नान करेह ॥ वासंस्तीनवीसिहै जधे । फलू इक सोक मिटयको तत्र ७० ॥

स्नान कर विआवे जिन गेह । दर्शन करि निज नर पहुंचेह ॥ निज कुल के मानुष जे थाय । ताके प्ररतैं असन लहाय ॥७१॥
 स्नान कर विआवे जिन गेह । दर्शन करि निज नर पहुंचेह ॥ निज कुल के मानुष जे थाय । ताके प्ररतैं असन लहाय ॥७१॥
 दिन द्वादश बीतै जव । जिन मंदिर इम करिहै तबे ॥ अष्टद्वय तें पूज रत्नाय । गीत नृत्य वाजिन् वजाय ॥७२॥
 सात्त्विकोपकरणे कराय । चंदोद्गादिक तास चढाय ॥ करवि महोत्सव इह विधि सार । पात्र दान दे हरष अपार ॥७३॥
 परिजन पुरजन न्योति जिमाय । यथाशक्तिक इम शोक मिटाय ॥ अरु परिजला सूतककी वात । सूतकविधिमें कही बिल्यात ७४
 ता अनुसार करे भवि नीच । हीण कथाको तजो सदीच ॥ इह विधि जैनी क्रिया करय । अवर कृत्तिया सवहि तजे य ७४

अथ सूतकविधि लिख्यते ॥

उक्तं मूलाचार उपरि भाषा शोदक छन्द ॥

इम सूतकदेव जिनन्द कहै । उत्पत्ति विनास विभेदवहै ॥ जनमें दसवासर को गणिए । मरिहै जव नागहकोभनिए ॥७६॥
 कुलमें दिन पंचलगी कहिये । जिन पूजन द्रव्य चढ़े न दिये ॥ परसूत भई सिद्ध गेह मही । ब्रह्म गाम अली दिन तीस नहौं ७७
 चौपाई ।

चौरी महिषी बोड़ी गाय । ए वस्त्रें परसूतजि थाय ॥ इनको सूतक एक दिन होय । घर वारे नूतिक नहि कोय ॥
 महिषी चीर पत्त एक गये । गाय दूय दिनदस गत भये ॥ छेली आठ दिवस परमाण । पाँच प्रयसको अथ ज्ञान ७८॥
 जनम तणो सूतक इह होय । मरगतणी मुनिये अनलोय ॥ दिन तारह इह सूतक ठानि । पत्नी तीनि लगे एकजानि ७९
 चौथी साखि दिवस दस थाय । पंचम पीही पट दिन जाय ॥ पष्ठी साखि चार दिन कहे । साख सातमी तिहु दिन रहे ७९
 अष्टम साखि अहो निति सोग । नवमी जामहि दोय नियोग ॥ दसमी हीन मात्रही जाणि । नूतकगोत्रनि गृहवखाण ८०॥
 करि सन्यास मरे जो कोय । अथवा रिणमें नूभे सोय ॥ दशांतरमें छोड़े प्रात । बालक तीस दिवसलों जान ८१॥
 एक दिवस इनको हे सोग । आग अवर सुना भवि लोग ॥ पौढो बालक दासी दास । अरु पुत्री सूतक सम भास ८२॥
 दिवस तीनलों कथो बखान । इसकी मरयादा म जान ॥ वनिता परम पतन जो होय । जितना प्राप्तणी धितसोय ८३

जितने दिनको सूतक सधी । पीछे स्नान शद्धता लही ॥ पति का मोह थकी तिय जरै । अथवा सपसातक जकरै ॥२५॥
 अरु निज परिमरिहै जो कोय । इन तिनहुं की बर्या होय ॥ पखवारा नूतक ता तबौ । आगे अवर विगष जो भूपौ ॥२५॥
 जाके घरके असनरु नीर । खाय न पौवै बुद्धगहीर ॥ अरु भीजिन चैत्यालय मही । द्रव्य न चढै रु आवै नही ॥२६॥
 नीति जाय जवही बह मास । जिन पूजाउच्छवपरकास ॥ जाँन पल ताब के गेइ । ज्ञातिमांहि तव आवै जेइ ॥२७॥
 मरधादा ऐसी कां ब्राह्म । और भांति करवा मांहि मांड ॥ जो जिनआगम भाखी रीत । सोकरिए नित मन धरमीत ॥२८॥

कुंडलिया ॥

सूतक जन्नी गेइ अंकार कस्यो । ब्राह्मण गेइ मरुारि दिवस दसही लखो ॥
 अहो रात्रि दस दोय बैश्य घर जाणिये । सब सुद्वनि के सूतक पाप बखानिये ॥ २६ ॥
 च्युवती तिय प्रथम दिवस चंडालणी । अक्षयातिका दिवस दूसरा में भणी ॥
 त्रितय दिवस के मांहि निद्रिसम रजकणी । वासर चौथे स्नान क्रियासौं सुथ भणी ॥ २७ ॥
 जाके घर में नारि अधिकहै दुष्टणी । जाके किरियाहीण सदा पूरब भणी ॥
 विगिचारणि परपुरुष रमण मति है सदा । ताके घर को सूतक निकसे नहि कदा ॥ २८ ॥

सोखा ॥

जो कवि कहै बनाय, ताके अवगुण को कथन । प्रायश्चित न समाय, जिहिदिन दिन खोटी क्रिया ॥ ६३ ॥
 कुंडलिया ॥

अरुनाके घर त्रिया दयो व्रत पालनी । सत्य वचन मुख कहै अदृच मृटाखिनी ॥
 बलवर्माको घरै सती सनु जन कहे । पतिव्रता पति भक्ति रूप नितही रहै ॥ ६४ ॥

जिनघर की सो पूजा करै नित भाव सो । पात्रनि को दे दान महा उच्छ्राह सो ॥
सूतक पातक ताके घर नहि पाइये ॥ आयश्चित्तिय तिहि को क्रिम वताइये ॥ ९४ ॥
दोहा ।

इह सूतक वरनन कियो, सुलाचार प्रमान । विह अनुसार जु चालहै, ता सम और न जान ॥ ९५ ॥
सोरठा ॥

भापा कीनी सार, जोमब संशय ऊपजै ॥ देखो सुलाचार, मन संसो भाजै सही ॥ ९६ ॥ इति सूतक विधि ॥
अथ तमाखू भांग निषेध वर्णन ॥ अंद चाल ॥

बुनियै बुध जन कलिकाल । प्रगटी हीणी दीय चाल ॥ इकप्रथम तमाखू जानो । दूनीविजियाहि वखानो ॥ ९७ ॥
सुनिलेह तमाखू दोष । अदया कारण अघ कोष ॥ निपजनकी विधि है जैसे । परगट भाषत हों तैसे ॥ ९८ ॥
तसुहरित तोडि कै पोन । सजीजलतै छिड़कांन ॥ गदहा को सूत्र जु नांखै । बांधिरुजूडाधरि राखै ॥ ९९ ॥
दिन बहुत सरदता जांखै । तसजीव ऊपजै तांखै ॥ तिनकी अदयाहै भूरि । करुणा परिहै नहि मूरि ॥ १३०० ॥
पिरथी नै आगि डरांहीं । तिनिके जिय नास लहांही ॥ धूवां सुखसेती निकसै । तववाय जीव बहु दिनसै ॥ १ ॥
थावरकी कौन चलावै । तसजीव मरण बहु पावै । दुरगन्ध रहै मुख मांहीं । फारे कर है अधिकांहीं ॥ २ ॥
उत्तम जन द्विग नहि आवै । निंदासव ठाम लहावै ॥ दुरगतिहि दिखाव वांट । सुरगति कौं जांण कपट ॥ ३ ॥
अतिरोगबढाने र्वास । ऐवै नरकीका आस ॥ दोषीक जानि करि तजिए । जिन आशाहिरदय भजिए ॥ ४ ॥
उपवास करै दे दान । किरिया पालै धरि मान ॥ पीवैहै तमाखू जेह । ताके निरफल है एह ॥ ५ ॥
अघतरु सिंचन जल धार । शुभ पादप हनन कुठार ॥ बहु जनकी भुट्टि घनरी । दायक गति नरकहि केरी ॥ ६ ॥
इह कामन बुधजन लायक । ततत्रिण तजिये दुखदायक ॥ के सूंघे केऊ खेहें ॥ तंऊ रूपणको लोहें ॥ ७ ॥

दोहा ।

भंग कसू भौ खातही, तुरत होत नै रोस । काम बढ़ावन अग्र करन, श्री जिनवर पद सोस ॥ ८ ॥
अतीचार मदिरा तणों, लागै फेर न सार । जगमें अपजस विखरे, नरक लहै निरधार ॥ ९ ॥
लखहु विवेकी दोष रह, तजहु तुरत दुख धाम । पट मतवें निन्दिल महा, हनै अरथ शुभ काम ॥ १० ॥

मरहटा छन्द ।

इह जगमाहीं अति विचराहीं क्रिया गिख्यात जु केरी । अदयाको कारण शुभगति वारण भव भटकावन फेरी ॥
करिहै अविवेकी है अति टंकी तजिकै लेकी सार । धरि मन चित आनै अवही जानै कौन वखानै पार ॥ ११ ॥
तामै रमि रहिया ग्रह ग्रह गहिया तिय बच सहिया तेह । मन में डर आनै कहे सुखानै वचन बखानै जंह ॥
नरपद जिन पायो ब्रुथा गमायो पाप उपायो भुक्ति अस मनमें रमिहै कुगुरुन नमि है भवभव अमिहै कूर ॥ १२ ॥
किरिया लखि ऐसी भाषी तैसी तजिय वैसी वीर । ताते सुख पावे अथ नसि जायें जो मन आवे धीर ॥
जिनभाषित कीजे निज रस पीचें कुगतिहै दीजे नीर । भव भ्रमणहिं ह्यंड़ो सकतिह मांडो उतरो भवदधि तीर १३

अथ ग्रहशांति जोतिस वरनन लिख्यते ॥ चौपाई ॥

जोतिस चक्रतणी सुनि वात । जम्बूदीप माहिं विख्यात ॥ दोंय चन्द सूरिजदो कहे । जेनी जिन आगमसरदहे १४ ॥
इक रवि भरत उदें जय होय । दूजो ऐरावतिमें जोय ॥ दुहुन विदेह माहिं निसि जाणि । जोतिस चक्रफिरे इहवाणि १५ ॥
भरथ अरु ऐरावति निसि जवे । दुहुनविदेह दुहुं रवि तवे ॥ इक पूरव विदेह रवि जान । अपर विदेह दूसरो भान १६ ॥
फिरतें रवि शशिको इहभाय । थादि अन्त थिरतानहिं थाय ॥ एक चन्द्रमाको परिचार । आगमभाष्यो पंचप्रकार १७ ॥
शशिकविग्रह नक्षत्र जाणिये । पंचग सहु तारा ठाणिए ॥ तिनकी गिनती इहविधि कही । एकचंद्रमा इकरवि सही १८ ॥
सह अठ्याग्नी अथर नक्षत्र । भागै अष्टाईस विचित्र ॥ ब्यासठ सारु नक्षत्रयसही । ऊपरिपचदृचरिकों गही १९ ॥

अद्विल्ल छन्द ।

बच अंक इन ऊपर चौदह छुनिद्विये । अंक भये उगणीस सकल भेले किये । आसठ सहस्र नवसय पंचहस्र भये ॥ कोडाकोडी तारा इतने गण गये ॥ २० ॥

चौपाई ॥

एक चन्द्रमाको परिवार । तैसो दूजाको विस्तार ॥ बैरुतणी परदिज्या देई । थिरतां एक निलिष नां लेई ॥ २१ ॥
जिन आगमनं इह तहकीक । आनमतीकै सो नहि ठीक ॥ जिन मत जोतिष विच्छिन्न भई । अढासी ग्रह भेदन लई ॥ २२ ॥

दोहा ।

प्रगट्यो शिवमत जोर जब, पंडित निजबुधि धार । ग्रन्थ कियो जोतिष तखों, तिम फेल्यो विस्तार ॥ २३ ॥
आदित सोमर भूमि सुत, बुध गुरु शुक्र सृजान, राहु केत शनि ए सकल, नव ग्रह कहे बखान ॥ २४ ॥
चौथो अष्टम वारही, अरु घातीक बनाय । साई साती सनि कहैं, दान देहु समथाय ॥ २५ ॥

छन्द चाल ।

तंदुलरूपोसित वास । रवि शशिकौ दान प्रकास ॥ रातो रूपही गोधूम । तांबो मुलघौ सुत भूम ॥ २६ ॥
बुध कंत दुहूँ इकसेही । मूंगादि कख्यो इत देही ॥ गुरुज वसन चौ हेम । अरु दगलि वनन करि प्रेम ॥ २७ ॥
जिम कहे शुक्रको दान । तिमही दे मूढ अयान ॥ शनिराइस्याम भणिए लोह । तिलतैल उहद तद्योह ॥ २७ ॥
हस्ती अरु घोटक रयाम । जुत रयाम विलरथ नाम ॥ इत्यादिक दान बखाने । ग्रहशान्ति निमित्त मन आने ॥ २८ ॥
नव ग्रह उरपदके धारी । तिनके नहि कमल अहारी ॥ किहकाज नाज गूल देहै । सुर किम न्नि नृपतता लैहै ॥ २९ ॥
हाथी घोड़ा असवारी । तिनि निमित्त दंड डर धारी ॥ बनके विमान अति सार । मुकरण नगं जइत अपार ॥ ३० ॥
भूपरि कछुपायन चाले । किहकारण दानहि भाले ॥ तातें ए दान अर्नाति । शिवमत भापे विपरीति ॥ ३१ ॥

बालक जनमें तिय कोई । मूला असलेला कोई ॥ दिन सात बीस परमाणै । वनिता नहि स्नान जुठानै ॥ ३३ ॥
 पति पहिरे वसन मलीन । बालक निज स्वाद नचीन ॥ सिर दाढ़ी केस न ह्यावे । स्नानहुंकरि वो नहि भावे ॥ ३३ ॥
 दिन है सब जाय विलीन । किरिया बहु रचे अनीत ॥ द्विजको निज गेह बुलावे । वह मूलाशान्त करावे ॥ ३४ ॥
 तरु जाति बीस परसात । तिनके जु मंगावे पास ॥ इतनेही कूवा जानी । तिनको जु मंगावे पानी ॥ ३५ ॥
 इतनेही छानि जु केरा । सो फस करै तस भेरा ॥ अरु सताईस कर टक । सीधा इतनेही अबूक ॥
 दिक्षणा एती जु मंगावे । सामग्री होम अनावै ॥ करि अग्नि बाल अगियारी । घृतआदिक वस्तु जु सारी ॥ ३६ ॥
 होमै करि वेद उचारे । इह मूलशान्ति निरधारे ॥ पावे फिर एम कराई ॥ वह फस जो देय जलाई ॥ ३७ ॥
 बालक पग तेल जुमाहीं । परियणको देहि बुलाई ॥ सबहीने बालक कै पाय । कहि ढोल घोह सिरनाय ॥ ३८ ॥
 सत्र मुख वच एम कछावे । हयते तू दहो कहावे ॥ एंसी विधि शिवमत रीति । जैनी करिहै धरि प्रीति ॥ ३९ ॥
 धरम न अर्थ भेद लहाधी । किम कहिए तिनै शठ पाहीं ॥ ते अघ उषांवे भारी । तिनके शुभ नहीं लेगारी ॥ ४० ॥
 गुरुदेव शास्तर प्रीति । धरिहै जे मन धरि प्रीति ॥ तें ऐसी कथा न मंडे । अंधकर लखि तुरतहि छंडे ॥ ४१ ॥
 सतबीस नक्षत्र जु सारे । बालक हें सकल भकारे ॥ जाके शुभ पूरव सार । सो भुगति विभव अपार ॥ ४२ ॥
 जाके अघ ँडे प्राचीन । सोइ यहै दलिद्री हीन ॥ एदान महा दुखदाई । दुग्गति करे अधिकारी ॥ ४३ ॥
 मिथ्यात महाउपजावे । दर्शन सिव मूल नसावे ॥ निज हित वांछक जे मानी । ए खोटे दान वखानी ॥ ४३ ॥
 जिन मारग भाष्यी एह । विधि उदे आय फल देह ॥ तैसो भुगते इह जीव । अधिको वोखो न गहीव ॥
 जाके निथो मन माहीं । विकल्प कवहूँ न कराहीं ॥ मन मांहि विचारै एह । अपनी लहनों निधि लेह ॥ ४४ ॥
 दोहा ।

निमित्त तास चित पूजसी, अधिकारि ब्रह्म लाय । कोटि जनम करतो रहो, ज्यों को र्योंही थाय ॥ ४५ ॥
 ग्रहकी शान्ति निमित्त जो, विकल्प कूटे नाहि । भद्रनाड कृत श्लोक मैं, कहो जेम करवाहि ॥ ४६ ॥

अडिबल ।

नमसकार कीरति न जागत गुरु पद लही । सद गुरु मुखते क्रथन सुएयो जो होहि सही ॥
लोक सकल सुख निमित्त कथा शुभनेनको । नवग्रह शक्तिक वरणन हुनिये चनको ॥ ४७ ॥

छन्दनाराच ॥

जिनंदेव पादसेव खेचरीय लायहे । निमित्त ताहु पूजि जैन अष्ट द्रव्य लाय हे ॥
हुनीर गंध तंदुलै प्रखन चारि नवखं । सुदीप धूप औफलअनघ सिद्धदं भज ॥ ४८ ॥

छन्द चाल ॥

सूरज करूर जत्र थाय । पदप्रथम पूजै पाय ॥ श्रीचंद्रप्रभु पूजा तै । सिद्ध दोष न लागै तारै ॥ ४९ ॥
जिनवासु पुष्य पद पूजत । भाजे मंगल दुख भूजत । दुःख करू पण जत्र थाय । वखु जिन पूजे मनलाय ॥ ५० ॥

अडिबल ॥

विमल अनन्त सुधनं शान्ति जिन जानिए ॥ कुन्य अरह नाम वधमान मन जानिए ॥
आठजिनेखर चरण सेव मन लाय हे । वद्धतणो जो दोष हुरत नस जाय हे ॥ ५१ ॥
रिपभ अजित संभव अभिनंदन वदिए । सुमति नुपारस सीतल मन आनंदिए ॥
श्रीश्रयांस जिनंद पाय पजत सही । विसयति दोषनसाय यही आगम कही ॥ ५२ ॥
सुवध नाथ पद पूजित गुनसाय हे । मुनि मुत्रत को नयत दोष सनि जाय हे ॥
नेमनाथ पद वदत राह रहे नहीं । मलिरूपारस भगत केत भजिहे सही ॥ ५३ ॥
जनम लगन के समे करू ग्रह जो परे । अथवा गोचर मांदि अणभ जे अनुसरे ॥
तिनि तिनि ग्रह के काजि पूजि जिन की कही । जाय करे जिन नाम लिए दुप रहे नहीं ॥ ५४ ॥

नवग्रह सांतिह काज जिनेश्वर सौ मणी । घंढो होय सिर नाय करे सो श्रुति घणी ॥
वार एक सो आठ जाप तिनको जवे । ग्रह नक्षत्र की वात कर्न बहु विधि खवे ॥ ५५ ॥

भद्रबाहु इम कही तोसु ऊपरि मणी । जो पूरव विद्यानुवाद श्रुति ते मणी ॥

इह विधि नवग्रह शंति वखाणी जैन सै । करि विश्लोक अनसार किसनसिष वै नसै ॥ ५६ ॥

आन धरम के मांहि उपाय इम कहतहैं । विपरीत बुद्धिउपाय न मारग लहत हैं ॥

चंडारनिकेदान दियाहैं शुद्धता । कथे एम विपरीत ठाणि मति रुग्णता ॥ ५७ ॥

चददास दोय रवि दोय जिनागम में कहै । मेरु सदरसन गिरिदसदा फिर लेतहै ॥

शांशविभाणतलराहु एक योजन वहै । रांघ के नीचै केत, एम भमतो रहै । ५८ ॥

पखि अधियारे मांहि कला शशि कहे सही । एक दवावति जाय अमावस लों कही ॥

शुकल पत्त इक कला उघरती जाय है । पूरणवासी दिन शशि निरमल थाय है ॥ ५९ ॥

नित्यहि ग्रहकों मिलन इहां होय न सवै । पून्युंविन विपरीति राह उलटै जवै ॥

देते शशि जव दान ग्रहण जव ठानही । जिन मत में सो दान कबहुं न वखानही ॥ ६० ॥

रवि शशि चार्यों तखों ग्रहण चहुंजानियो । ऐरावतश्रर भरत मांहि परमाणियो ॥

छटे महीने अंतरपड़े आकाश में । फिर बाल कूलहै दवावै तासमें ॥ ६१ ॥

तिरुनिगानकी छाया अवर न मानिए । जिन मारग के सूत्रनि एम बला नए ॥

भरत माहि इक ऐरावत में भी नहीं । इक ऐरावत भाहि भरत तहुंही नहीं ॥ ६२ ॥

भरत माहि ऐरावतचहुं मनाकहीं । ऐरावत के ज्यारि भरत एण नहीं ॥

दोय दान दुहे धान होग तो नहि वनै । इएअएणहीरिनि अमादि वनी सनै ॥ ६३ ॥

उक्तश्चगाथा त्रैलोक्यसरि नेम चंद्र सिद्धांत कृत ॥

राहुअरिठविपाणं किंचूणाकि पिजोयणअधोगता । क्कमासे पव्वंत चन्द्ररवि व्यादयत्तिकेणेषु ॥ ६३

चंद्र बाल

ससिराह कृत रवि जाएण । आब्बादतहै जुविमांण ॥ विपरीत बाल षट् ऋस । यावत है ज्व आकास ॥ ६५ ॥
 चारथो डर पदके धार । तिहके कछु नही व्यापार ॥ देखो लहणो को करि है । फिर है जोजन अंतर है ॥ ६६
 चहूँ को मिलि वो नही कुवही । निम थान कि साहिब सवही । औरनि को दीयोदान । लहणो नही उत्तरे आन ॥
 शशिराह बाल इक वारी । शशि वहु घटे निरधारी ॥ पटमास विना लहि दावे । रविको नहि केत दवावे ॥ ६८ ॥

दीहा ।

एह कथन सुनि अतिक जन, करि चित्तसे निरधार । कथित आन मत दानजे, तजहु न लावौ वार ॥ ६९ ॥
 पाप बढ़ानन दुखकरन, भव भटकावन होर । जास हृदय सत जैन हट, त्यासै जानि असार ॥ ७० ॥

इतिनवग्रहशांति विधिः ।

अथ निजतनसंबंधी कृयाकथन ॥ चौपाई ॥

निज तनबंधी जे कया । करहु भक्ष्य तामें दे हिया ॥ सैनयकी जव उठिये सवार । प्रथमहि पड़े मन्वननकार ॥ ७१ ॥
 प्रभुकु जख भाजन करमाही । तस भूपित जो भूमि तजारी ॥ बुद्धि नीतिको जेहे जसै । अवर बसनसो पहिरैत्वै ७२ ॥
 नजरि मिहारि निहार करन्त । जीव दया मनपाहिं धरन्त ॥ होत निहार पखय जल लई । तामांकरतें सोच करई ७३ ॥
 फिरि माटी तामांकर माहिं । चारतीनले घोबे ताहि ॥ अहतहते आवे करकरी । बलादिक पाछे परबरी ॥ ७४ ॥
 करशोवनको ईश खोह । लोहि तथा पद मदित सोह ॥ बाल अरुभसपी करधार । बाथ दुहु खोह तिहुवार ॥ ७५ ॥
 माटीले दुहु हाथ मिलाय । बोबे तीनचार मनलाय ॥ पच्छिमदिशि मुख करिके सोय । दंतनकरे चिबेकी जोय ॥ ७६ ॥

स्नान करन जल थोड़ी नाख । कीजे इह जिन आगम सास ॥ करुणांकर मन मांढि विचार । कारज करिए करुणापार ११॥
 मथमदि मही देखिए नैन । जहं त्रसजीव न लहे अचैन ॥ रहे नहीं सरदी बहु बार । स्नान जहांकीजे बुधवार ॥१२॥
 पूरवदिसा सो म मुखकरै । उजरै वसन उतर दिस धरै ॥ जीमनवार धोवती धार । अवर सकलहो वसन उतार ॥१३॥
 सिर डाढी सँवरावै जबै । स्नान करे किरिया जुत तबै ॥ लोगाचार लठै किहूँ तनै । तबही स्नान करतही वनै ॥१४॥
 तिय सैवै पीखे इह जान । परम विवेकी स्नानहि ठान ॥ सयन जुदा सज्यापर करै । इम नितही किरिया अन्नसरै ॥१५॥
 रात सुपनमें मदन दबाय । शुक्रस्त्रिको कारण पाय । कपड़े दूर हार निरधार ॥ जल तें स्नान करै तिहवार ॥१६॥
 निशा सोवनको सटयायान । पलिंगकरे दक्षिण सिर हान ॥ अरु पच्छिमदि सिद्ध सिरकरं । ऊठत दुहुँ दिस नजर नु परे ॥१७॥
 पूरव अरु उत्तर दुहुँ जाण । उत्तम ऊठए हरपदिठान ॥ इहविधि क्रिया अहां निस करे । सो किरिया विधिकोअनुसरे ॥१८॥
 इति तुत्र संबन्धी किरिया समाप्तम् ।

अथ जाप पूजाकी विधि ॥ चौपाई ॥

जापकरन पूजाकी चार । जो भापी किरिया निरधार ॥ तांको वरणन भवि मुनि लेह । श्लोकनमें वरणीहे जेह ॥२५॥
 पूरव दिशि मखकरि बुधवान । जापकरे मनवत्त तन जान ॥ जो पूरव कदाचिदरिजाय । उत्तरसनमुख करि चितलाय ॥२६॥
 दक्षिणदिस पच्छिम दुहुँ यथा । जापकरण बरजी सरवथा ॥ तीन स्वास उस्वास मभार । जापकरे नवकरि विनिचार ॥२७॥
 मथग जाप अत्तर पंतोस । दूजो सेखह वरण गरीस ॥ तृतीय अंक छह अरहंत सिद्ध । असियाऊसा तुरीय परिद्ध ॥२८॥
 पंचमरण चार अरहन्त । पण्ठी दूय जप सिद्ध महंत ॥ वरण एकसोको ओंकार । जाप भाव ए जपिण सार ॥२९॥
 कष्टो द्रव्यसमग्रहं एह । सात जापलखि तनि मंदेह ॥ श्रीरजाप गुरु मुख मुन वात । तेउ जपिण निजहित प्राप्त ॥३०॥
 गेरुविना पण्डिया सो आठ । जापतणा जिनगन रहे पाठ ॥ स्फटिकमणि अरुगोनी भाल । मुनगंरूप दुर्गपनाल ॥३१॥
 गोया पोता रेशम जान । कुबलगटा अरु सूत वस्त्रान ॥ ए नवभांति जापके भेद । भावनहित नप नज मन संद ॥३२॥

दीक्षा ।

दिश विशेष तिनको कह्यो, जिन मन्दिर विन थान । चैत्यालय सँ ज्ञापककि, सनमुख श्रीभगवान् ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

पूजा निमित्त स्नान आचरे । सो पूरवदिसि मुखको करे ॥ धौत वस्त्र पहिरे तम सबै । उत्तर दिसि मुखकरिहै कबै ॥
(उत्कंच रलीक) — स्नानपूर्व मुखीभूय प्रतीक्यां दंतधावनं । उदीच्यांश्चैतमस्त्राणि पूजापूर्वोत्तरामुखी ॥ १४ ॥

चौपाई ।

पूरव उत्तरदिशि मुखकार । पूजक पूर्व करै मुख सार ॥ जिन प्रतिमा पूरव जो होय । पूजक उत्तरदिशि को जोय ॥९॥
जो उत्तर प्रतिमा मुख ठान । ती पूरवमुख सेवक जान ॥ श्रीजिन चैत्यगेहमें एय । करै भक्तिक पूजा धरि प्रेम ॥९६॥
जिनमन्दिर सँ प्रतिमा धाम । करे तासविधिहुनि अभिराम ॥ घरमें पोलि प्रवेश करन्त । वामभागदिसि रचै महन्त ॥९७॥
मन्दिर ऊपर लेखणकी मही । ऊचो हाथ छोड़िहर सही ॥ जिन प्रतिमा पधरावन गह । परम विचित्र करे धरिनेह ॥९८॥
प्रतिमा मुख पूरवदिसि करे । अथवा उत्तरदिशि मुख धरे ॥ पूजक तिलककरे नव जान । सोसुन बुधजन कहूँवखाना ॥९९॥
सोस शिखा ढग करिए एहं । दूजो तिलक लिलाट करेय ॥ कंठ तीसरे चौथो िए । कानपंघोही जानिए ॥१००॥
कठो भजा हखिसातवां । अट्ठाय नामि सँ नवो ॥ एह तिलक नवठावनाय । अरुगहण तुष विविध वनाय ॥१०१॥
सुकुट सीसपर धारे सोय । कंध जनेऊ तहिरै जोय ॥ भूजं काहु जु विराजत करे । कुडल कानहकण धरे ॥ २ ॥
कटिसूत्र कटिमखल धरे । सुद्र घंटिका शब्दहिकरे ॥ रतन जटित सोवन मय जान । इस अगुलिन सुद्रिकाठान ॥१०॥
पांय सांकला घुघर धरे । मधुर सख्द वाजै मन बरे ॥ भूपण भुषित करविसरीर । पूजा आरम्भी वरवीर ॥ ४ ॥

पढ़डी छन्द ।

पूर्वान्हिक पूजा जो करे । वसु इव्य मनोहर करि करे ॥ मध्यानक पूज समय नुएह । मनहस कुसमवहु खेप देह ॥३॥

अपरान्ह भविजन करिह एवदीपहि । चढाय बहु धूपखेव ॥ इहविधि पूजाकरि तीनकाल । शुभकंठउचारे जयहमाल ॥
 पूर्वान्हिकरविउगत कराय । मध्यान्हकवासर मध्यथाय ॥ दिन अस्तहोत पहिली प्रमाण । अपरान्हक पूजा करयजराण ॥
 जिनठाम अंग धरि धूपदाह । खवै सुगंध शुभ अंगरताह ॥ अरहत दक्षिणकरदिसि जु एह । अतिही मनो ब्र दीपक धरेह ॥
 जेध्यानधरे अति मनलगाय । जिनदक्षिणभुजदिसिभीनलाय ॥ प्रतिमा बंदन मनवचन काय । करिदक्षायभजदिससीसमाय
 इहभोति करै जे ई प्रवीण । उपजे बहुपुण्यरू पाप क्षीण ॥ पूजामाहीं नहि जोग द्रव्य । तिननाम वखाणो सुणो भव्य १० ॥
 द्रुतबिलांबि नृत ॥

प्रथमही पिरजो धरयो । अरुकदा करतैखिसिके परयो ॥ जुगल पायन लागि गयो जदा । दरवसों जिनपूजन नहीं बदा ।
 करन तें फिरियो सिर ऊपरै । बसणहीन मलीन मही धरै ॥ कटित लै परसें जय अंगही । दरवसों जिनपूजन लों नहीं ॥ १२ ॥
 बहुजन के करते करसंघरयो । मनुज दुष्टन भीट करै धरयो ॥ त्रसनदिपंत दर्बू सवै तजो । भगवंत ते जिन पूज सदासजो ॥ १३ ॥

दाहा ।

वसनपहर भोजन करै, सो जिन पूजा माहिं । तनु धारै अथ उपजे, यानें संशय नाहिं ॥ १४ ॥

कुंडलिया ॥

कवही संधित वसन तें, भगतवंत नर जोये । मन बच धन निहबै इहै, पूजा करै न सोय ॥ पूजा करै न सोय,
 दग्ध फटियो हें जातें । पहरौ अवरनि तएी कटिहि बंधियो फुनि तोतें । कर छुडि लवू नीति अर खेइ तिय
 जवही ॥ करहि नांहि भवि केव वसन संधित तें कवही ॥ १५ ॥ चौपाई ॥

कांभनि जनपूजा इहरेवे । प्रतिपापरसि पखालाहि सवै ॥ मीन सहित मुख कपडो करै । विनय विवेक हरख चित धरै १६
 पूजाकी विधि ऊपर कही । करिवै पुन्य उपजे सही ॥ नरकों करनी पूजा तथा । आगध मे भापी मरवथा ॥ १७ ॥
 जिन पूजा यनिता जो करे । सो ऐसी विधि को अनु सरै ॥ प्रतिपाभंडन नाहीं जोग । ऐतें कहै सयाने योग ॥ १८ ॥

स्नान क्रिया करि कैथिर होय। धौत वसन पहिरे तन सोय। विना कंचकीसा नहि रदै। पूजा करे जिनागम कहै ॥१६॥
बडी साख धैना सुन्दरी। कुंष्ट व्याधि पतितन की करी ॥ गंधोदक सींचित सो देह। सुधरखवरख भयो गुणगेह ॥२०॥
अनंत मती छरबिला जांछे। रेवतीय चेलना बखाण ॥ मदन सुन्दरी आदिक धरणी। तिनकीनी पूजां जिनतणी ॥ २१ ॥
लिंग नपूसक धारी जेह। जिनवर पूजाकरि है तेह ॥ प्रतिमा परसण को निरधार। ग्रंथन में सुन लेहु विचार ॥२२॥
नर बनिताह नपूसक तीन। पूजा करण कही विधि लीन ॥ अवं जिनको पूजन सरवदा। करन योग्य भाषी नहिं जदा २३
ओढेरोकांणी भयि अंध। फूलौ धंध जाति चपि बध ॥ प्रतमा अवं वसूले नहीं। जाको पूजा करन न कहौ ॥ २४ ॥
नसा कान कटी आंगुरी। हुई अगनि दाभै वांकुरी ॥ धंत अंगुलियाकर अरु पाय। पूजा करनी जोग न थाय ॥२५ ॥
घोडाः दुहुं पायन पांगुलो। कुवजक गूंगावच तोतलो ॥ जाके मैद गांठि तन घणी। ताको पूजा करत न वणी ॥२६॥
काळ दाग फुनि कोठी होय। दाग सुवेद शरीर हजोय ॥ मंगल फोड़ा पांव अदीठ। शील बोदरी व्योंची पीठ ॥२७॥
गोसो वधे आंत नीकले। ताको पूजा विधि नहिं पले ॥ होय भगंदर कांनन सुने। सुन्यपिएदगडलो वच सुने ॥२८॥
खांछी ऊध्वं सास है जास। भरै नासिका श्कुपमतास ॥ महासुस्थचाल्यो नहिं जाय। पूजा तिनही जोग नथाय ॥२९॥
दूतविसन जाके अभिकार। अरु आमिप लंपट चंडार ॥ सुरा पान तं कवहु न हटे। सो पापी पूजा नहिं घटे ॥३०॥
वेश्या रमि है लगि न लगाय। अवर अहंड़ी स्यनबि थाय ॥ चोरी करे रमे पर नार। परं कुगति की लीक किवार ॥३१॥

दोहा ॥

जो जिन पूजक पुरुष हैं, ते दुरगति नहिं जाय। तिनकी मृत सवनिकों, लागै अति सुख दाय ॥ ३२ ॥
छन्दचाल ॥

पूजा तैं अरु है नायक। अपखर सेवे सुर पायक ॥ अरुचक्रीपद को पावे। पट् खंडही आण फिगत्रै ॥ ३३ ॥
धरएँद्र लहै पद नीकों। स्वापी दसभवन पती को ॥ हरि प्रति हरि पदई थाय। बलिभद्र मदन सुसकाय ॥ ३४ ॥
पूजा फलको नहिं पार। अनुक्रम तीर्थकर सार ॥ पदई पावे शिव जाई। किसन विंध नमै सिरनारै ॥ ३५ ॥

दोष अठारह रहित चउतीस अति सय करि मंडित । मात्स्यहार्य जुत आठचतुष्टये चार अखंडित ॥
समवशरण विभवादि रूढ त्रिभुवन पति नायक । भविजन कमल प्रकाशक करान दिन कर सुखदायक ॥
देवाधिदेव अरहंत मुक्त भगत तणो भव भय हरी । जयवंत सदा तिहुं लोकमें सकल संघ मंगलकरी ॥ ३६ ॥
तीर्थकर सुख थकी दिव्य ध्वनि तैं जोबानी । स्यादवाद भयखिरी सपतभंगी सुख दोनी ॥
ताको लहै परसाद गणशिवथानक सुनिवर । अजहुयांहि सहाय पाय तिरहै भव उरधर ॥
तस्यची देव गणधरनिजो द्वादशगंगविधि श्रुत धरी । भारतीजगत जयवंत निति सकल संघ मंगलकरी ३७
अठईस गुणगूल लाख चौरासी उत्तरधरे । करे तपधोर बुधआतमअनुभवपर ॥
ग्रीपम पावस सीत सहै बाईस प्ररीपह । भवि लावहि सिवबंध ज्ञान हग चरान गरिसह ।
निज तिरहआन तारक सदा । यह विरद तिनमें खरी । ऐसेसुनीस जयवन्तजग सकलबंधमंगलकरी । ३८ ॥

अथश्रीचैत्यालयजी में यह चौरासी कामकी जेतो आछादना लागे

तिसका कथन प्रत्येक कहें हैं ॥ दोहा ॥

श्रीजिनश्रुतगुरुको नमों, त्रिविध शुद्धता ठान । चौरासी आछादना, कहूं प्रत्येक बखान ॥ ३६ ॥
श्रीजिन चैत्यालय थिपे, कथाहीण हैं जेह । किये पाप अति ऊपजै, तैं सुणि भविजिन देह ॥ ४० ॥

छन्दःचाल ।

मुखतें खंखर निकारै । बास्यादि केलि निस्तारे ॥ फुनि त्रिविध कला नु बणवै । पात्रादिक नृत्य करावै ॥ ४१ ॥
अरु कलाकरे रिसधारी । खेहे तंबोल सुपारी ॥ जल पीवै कुरला डारै । पंखातें पवन छिडारै ॥ ४२ ॥
गारी वचहीण उचरिहै । मल मूत्र याव नहि सरिहै । कर पद धीवै अरु न्दावै । सिर डाढ़ी कब उतरावै ॥ ४३ ॥

कर पंगके नखही लिवावे । कारीते रुधिर कढावे ॥ औषध-वणवावे स्वार्थी । नखे पधेव उतराहीं ॥ ४४ ॥
 तत्तु ब्रंणकी तुचा उतारे । कर दमन कफादिक डारे ॥ दातिएण फुनि सिलक कराहीं । हालै दतन उपराहीं ॥ ४५ ॥
 वांवे चौपद तनधार । फुनि करिहै जहां आहार ॥ आंखनके गीदहि डारे । कर पग नख गेल्लि उत्तारे ॥ ४६ ॥
 जहं कंठ कान सिर जानी । नासा को मैल डरानी ॥ जो वस्तु शरीरकी थाय । बांटे निज थानक जाय ॥ ४७ ॥
 मित्रादिक समधी कोऊ । मिलिजाहि जिनालय दोऊ ॥ ठाढ़े मिल भंट विदेई । फुनि हरष चित्तधरि लेई ॥ ४८ ॥
 परधान जुभूपति करे । दे गुरु धन चान घनेरे ॥ आए उठिकर सनमाने । इह दोष बड़ी इक जानै ॥ ४९ ॥
 फुनि व्याह करनकी बात । मिलिके जह जन बतलात ॥ जिन श्रुत गुरु चरन चढ़ावे । ताको भंडार रखावे ॥ ५० ॥
 निज घरको माल रबीजे । पदपरि पद धरि बैठीजे ॥ को भय ते जाय छिपीजे । काहू दुखदूर न कीजे ॥ ५१ ॥

चौपाई ।

कपड़ा धोवे धूपति देई । गहणा राव घड़वावे लेई ॥ से असलाख जुभाई छीक । केस समांरि करे तिनठीक ॥ ५२ ॥
 धोवे दाल बडी देजहां । पापड सोज बनावे तहां ॥ मैदा ब्यानन छपर बंधान । करन कढाई तें पकवान ॥ ५३ ॥
 राज असन त्रयतस करतणी । चारथो चिकथाको भापणी ॥ करण कसीथादिक सीत्रणो । करनासिकाको बीथणो ॥ ५४ ॥
 पंछी डारि पिछुरो धरै । अगनि जारि तन तापन करै ॥ सुवरण रजतप हरही जोई । छत्र चमरसिर धारै कोई ॥ ५५ ॥
 बन्दन आवे है असवार । फुनि तन को धारे हथियार ॥ तेल अरगजादिक मिलवाय । बैठक करै पसारपाय ॥ ५६ ॥
 वांघे पाय पेच फुनि देई । आवे तुर रादिक ढांकेय ॥ जुवा खेले होडवदेय । निद्रा आवै शयन करेय ॥ ५७ ॥
 मैथुन करे तथा तिस बात । चालि भोगशरीर खुजात ॥ वात करण व्यापारह तणी । चोपाई परि बैठन गिणी ॥ ५८ ॥
 पान द्रव्य ले जेहे जोग्य । जल ते क्रीडा करिहे कोई ॥ सवद जुडार परस पर करे । गीदू प्रमुख खंली चित धरे ॥ ५९ ॥
 जिन मन्दिर परबेस जो करे । सवद निसधीन बिडचरे ॥ फुनि करजोई त्रिनु जो जाय । एदोन्यो आछादन थाय ॥ ६० ॥
 एचौरासी अयकर क्रिया । करनी उचित नहीं नर क्रिया ॥ जिन मन्दिर श्रुत गुकुललि मानि । रहनो अधिक त्रिनयउरआनि

दोहा ।

किसन शिघ्र विनती करे, सुनौ भविक चिट-आन । क्रियाहीण जिनयुह तजो, सजो उचित मुख दान ॥ ६२ ॥

इति पूजा विधि असातन वर्णन संपूर्णम् ॥

अथ त्रेपन क्रिया तथा अत्र क्रिया को वर्णन कीयो तिनको कथन ॥ दोहा ॥

त्रेपन क्रिया को कथन, लिख्यो संस्कृत जोई ॥ गौतम मुख ससि तैखिरथो, गुड रूप है सोई ॥ ६३ ॥

ताऊपर भाषा रची, विविध छन्द मय ठान । श्रावक कां करनो जिसी, किरिया कही क्वान ॥ ६४ ॥

दोहा ।

अती चार द्वादश करन, लगे तिनहि निरथार । सूत्रन में तें पाइये, करी भाषा विस्तार ॥ ६५ ॥

कञ्जक त्रिवरणा चारवै, जो धरिवे को जोग । सुणी तेम भाषी तहां, बहिये तिसो नियोग ॥ ६६ ॥

जन्म मांही पिठ्यातकी, भई थापना जोर ॥ क्रियाहीण तामें बल्लन, दायक नरक अघोर ॥ ६७ ॥

ताहि निषेधन को कथन, सुन्यो जिनागम जंह । जिसो बुद्ध अवकास मुज, भाषा रची में एह ॥ ६८ ॥

मूलाचार यकी लिखी, सूक्त विधि विस्तार । श्लोक संस्कृत ऊपरें ॥ भाषाकीनी सार ॥ ६९ ॥

विद्यातुनाद पूर्वयकी, भद्रवाङ्क मुनिराय । कथन कियो ग्रहशक्तिको, तिह परिभाष वनाय ॥ ७० ॥

निज तन नितप्रतिकी कृया, अरु पूजा परबंध । श्लोकन पर भाषा धरी, जहं जैसो सम्वध ॥ ७१ ॥

भुजंगमया छन्द ।

कथा में कबौ पंच इन्द्री निरोधं । कथा में कलौ पंच पावं निरोधं ॥ कथा में कलौ त्यागिए लोभ क्रोधं । कथा में कलौ

पात्र मायाहि साधं ॥ ७२ ॥ कथामेइ चाईस भाषे अर्धेनं । कथा में कलौ गोर संभद भय ॥ कथा मेंधि कांजी

निपथी प्रपन्न । कथा में मरुञ्जदि मज्जदि लत्त ॥ ७३ ॥ कथामेधिसुल गुण अष्टपेदं । कथामेधि रत्नत्रयं कर्म छेदं ॥

कथामेधि शिक्ता व्रतं भेद चारं ॥ कथामेधि तीर्त्तं गुणं अन्न धारं ॥ ७४ ॥ कथामेधि भाषा प्रतिमा सुग्यारा । कथा
मेधि अर्पितपो भेद बारा । यथामेधिभाषे बहु दान साः ॥ कथामेदि भाषं निशीहार टारं ॥ ७५ ॥ कथा मध्य
संक्षेपणाश्रेष्ठ प्रख्या । कथामदि शुद्धं समभाव आख्या ॥ कथामध्य प्राणीक्रियाको विशेष । कथामध्य त्यागी कर्त्तो राग
द्वेष ॥ ७६ ॥ कथामे कर्त्तो नेम सत्रा प्रमाणं । कथामे क्रिया जोपिता धर्म जाण । कथा मे कर्त्ती मौन सन्तान कायं
कथामेधि आपे जिक्के अन्तरायं ॥ ७७ ॥ कथामदि भापी ब्रह्मकीर्त्ताति । कथा मे कर्त्तो सूतक होय भंति ॥ कथा
मध्य देही कृपाको प्रमाणं । कथामधि लूजा विधानं ब्रह्माणं ७८

दोहा ।

कलीकाल कारण लरी, जगत्माहि अधिकार । प्रगटी न्या मिथ्यातर्की, हीनाचार अपार ॥ ७९ ॥

स्तिनही निपथनको कथन, सुन्यो जिनागम प्रादि । ता अनुसार कथा महे, कर्त्तो यथारथ आहि ॥ ८० ॥

अथ मन्तेकव्रत निषेध कथन लिख्यते ।

दोहा ।

श्री जिन आगम मे कहे, वरत एक सी आठ । श्रावक को करनो सही, इह सब जागा पाठ ॥ ८१ ॥

इत सिवाय विपरीत अति, चलन थापियो मूढ़ । सुगम जनि सो चल पड़्यो, इनहुं विशुष अमूढ़ ॥ ८२ ॥

छन्द चाल ।

बनिता लखिने लघु चेश । तिनको इमि दे उपदेश । दिन अजीमे दोयवार । जल की सकथा नहि धार ॥ ८३ ॥

दोकन्त वरत धरि नाम । आगमन ब्रह्मण्यो ताम । तबलों एकान्त कराई । श्रीखण्ड बुनाम धराई ॥ ८४ ॥

तदुल केसर दधि मांही । कर गाली वरत गरांही । टीका व्रत नाम सुलेई । बनिता सिराही की देई ॥ ८५ ॥

अह तिलक व्रत को धारे । बहु तिय सिर तिलक निहारे ॥ करि देय टको इकरोप लेहेतिन हे अय कोप ॥ ८६ ॥

कौथलीय व्रत धर नाम । वांटे तिन तांसाह ठाम ॥ मधि सोंठ भिरच धरि रोक । प्रभुता है भापै लोक ॥ ८७ ॥
 फुनि रोटी व्रतही ठानै । वांटे घर घर मन आनै ॥ अर वरत पोपरा भापै । एकन्त तीस अभिलापै ॥ ८८ ॥
 नारेल वरतको लेह । वांटे घर घर धरिनेह ॥ खीर जु व्रत नाम धरावै । निज घर जो दूध मंगायै ॥ ८९ ॥
 चात्रल तामाहीं डारी । निपजावै खीर जनारी ॥ भरि ताहि कचोला माहीं । बांटे बहु घरि हरषाहीं ॥ ९० ॥
 काचली व्रततिय धरि है । कांचली दसवीस जु करिहै ॥ निज सगपण कीजे सारी । तिनकी दे हेत विचारी ॥ ९१ ॥
 तिन पहिरे जु उपजाही । व्रत घात पाप अधिकाहीं ॥ जिनको व्रत नाम धरावै । सो कैसे शमफल पावे ॥ ९२ ॥
 व्रतकरि घत नाम बखानो । दत दे घर घर मनआनो ॥ बांटेत माखो तहँ परिहै । उपजाय पाप दुख भरिहै ॥ ९३ ॥
 चूड़ाव्रत नाम धराई । करिके मनने हरपाई ॥ बांटेत मन धरि अति राग । इसते मुक्त वदै सुहाग ॥ ९४ ॥
 धिन न्योतो परयर जाई । निज करते असन गहाई ॥ भोजन कर निज घर आवै । व्रतनाम धिगानो पावै ॥ ९५ ॥
 भरि खांड रकेवी तीस । वांटे ते घर दसवीस ॥ व्रत नाम रकेवी तास । करिहै मूर्खता जास ॥ ९६ ॥
 वनिता चैत्यालय जाही । पाछ विधि एम कराही ॥ धरि असन थाल इकमाहीं । इकजल दुहुं ठाक धराहीं ॥ ९७ ॥
 नित्य चैत्यालय ते आवै । इक थाली आय उवावै ॥ जो असन उरि तीय । भोजन करि जल बहु पीय ॥ ९८ ॥
 जल थाल उवाड़े आई । जत्र पीन वैठि रताही ॥ इम वरत करम पत वान्यो । भूत्रनि में नहीं बखान्यो ॥ ९९ ॥
 इत्यादि कहांलों ठीक । आगमते अधिक अलीक ॥ करिके शुभ फलको चाहे । धियरं तिय अधिक उमाहे ॥ १०० ॥
 जो कलपित वरत जुमान । भापे तंतं अवधान ॥ जो सकल वस्तु ले आवै । त्रिज पूजा माहि बढावै ॥ १ ॥
 निज सगपन गेह मिलाय । वांटे घर घर फिरि आय ॥ भादों के मास जुमाहीं । तप करन सकनि ते नाहीं ॥ २ ॥
 इम कष्टिण कन्त कगही । जिन उक्त व्रत लो नाही ॥ वांटे जो वस्तु मंगायै । सोई व्रत नाम धराई ॥ ३ ॥
 जिनमत व्रत विनु मरयाइ । करिये मन उक्त प्रसाद ॥ जिन सूत्रनिमें जैनीहे । कुलदायन व्रत स हीं ॥ ४ ॥

जिन आज्ञाओं के गोपै । ते निज कृत सब शुभ लोपै ॥ यातें सुनिये नर नारी । मनमें तिसते अवधारी ॥५॥
जिन भाषित जे व्रत कीजे । मन उक्तन कवहूं लीजे ॥ आज्ञा विधिजुत व्रतधार । सुरपद प्रावे निरधार ॥६॥
सवैया ३१ ॥

त्रेपन क्रिया ने आदि देके नाना भेद भांति क्रिया को कथन साखि ग्रन्थनकी आनिकै ।
अवर मिथ्यात कलिकाल भई थापना जे तिनको निपेध कीयो आगमते आनिकै ॥
व्रत मन उकति सुगम जानि चालि परै कहै नहिं नते जिते दुख ब्रथा मानिकै ॥
अवै नर नारी मनलाय जो वरत धरे याह समय शील तप व्रतजीय मानिकै ॥७॥
छप्पय ।

यहुविधि क्रिया प्रसंग कही इह कथा मफारी । अत्र उवाह मनमाहिं आनि इह वात विचारी ॥
क्रिया सफल जब होइ वरतविधि याके आए । मन्दिर जोभा जेम शिखर पर कलाश चढ़ाए ॥
इहजान वासवत विधिनकी सुनी जेम आगम भनी । दशन विशुद्धत धरहु भवि इहविनती किसनातनी ॥८॥
छन्दचाल ।

समकित जुत व्रत सुखदाई । अनुक्रम ते शिव पहुंचाई ॥ कळु नाम वरतके कहिए । भविजन के जे व्रत गहिए ॥९॥

अथ अष्टान्हिक व्रत कथन ॥ चौपाई ॥

अष्टान्हिक महाव्रत सार । रहै अनादि जाका नहिं पार ॥ जो उत्कृष्ट भए तर तेह । तिन पूर्वव्रतकीन्हो एह १०।
व्रत कल को है विधि जिप्पी । जिन आगममें भाषो तिसी ॥ तीनवार इक वरस मंभार । आसाढ़ कातिक फागुणधार ११।
जो उतकृष्ट वरत को करै । आठ आठ उपवास जुधरै ॥ दूजो भेद कोमली जानि । जिन मारग में करो वसान ॥१२॥
आठे दिन कीज उपवास । नीमी एक भुक्त परकास ॥ दसमी दिन कांजी करिसार । पाणी भात एकही वार ॥१३॥

ग्यारस अल्प असन की जाए । दुश्चरित्तजि इकवटली जाए ॥ मुख सो ध्योत्रारस विधि एह । त्रिविधिपात्रकी भोजन देय ॥ १४ ॥
 अंतराय तिनकों नहिं थाय । तो वह व्रत धरि असन लहाय ॥ अंतराय तिनकों जो परे । तो उसदिन उपवास हिकरे ॥ १५ ॥
 तेरभि दिन आंघिल की जाए । ताकी विधि भवि सुन ली जाए ॥ एकअन्न पटरस विनु जांनि । जलमें फूलि लेई इक ठांनि ॥ १६ ॥
 चउदस चित्त बेलडी थाय । भात नीर जुत मिरच लहाय ॥ पूरणवासी को उपवास । किए होय चिरको अघनास ॥ १७ ॥
 इह कोमली की विधि कही । जिन आत्ममें जैसी लही ॥ आदि अंत करिए एकंत । दसदिन धरिये शील महंत ॥ १८ ॥
 जाके जिम चउदस उखास । चौदस पंदरस बलां तास । तेरस आंघिल के दिन नेह । रहत विवेक आंघली तेह ॥ १९ ॥
 सदासरद जाकी नहिं जाय । उपजै जीव न संसे थाय ॥ चउदस दिवस बेलडी करे । तादिन इम अनीति । वसतरे ॥ २० ॥
 खांहि खलरा अरकाचरी । तथा तोरई निज मतहरी ॥ तिनमें उपजै जीव अन्धर । सो व्रत दिन रहवो नहिं सार ॥ २१ ॥

० दोहा ।

कांजी के दिन नीरमें, नाखि कसेलो लेह । तंदुल जल विनु अन्नर कछु द्रव्य न भापो नेह ॥ २२ ॥

चोपाई ।

तीजी विधि जु अडाई जान । आठें तं चउदसहिं वखान ॥ वारस असन पछेंतिहुंवास । इहै भेद लखि पुन्य निवास ॥ २३ ॥
 दशमी तेरस जीमण होइ । बेला तीन करहु भविलोय ॥ चौथो भेद यहै जानिये । शील ब्रत ताको ठानिये ॥ २४ ॥
 आठें दशमी वारस तीन । प्रोपय धरियै भाव प्रवीन । चउदस पंदरस बेलो करे । पंचमविधि बुधजन उच्चरे ॥ २५ ॥
 आठें ग्याःस चउदस जान । तीन दिवस उपवात बखान ॥ अथवा दोय करे नर कोय । एकासन पण्डितदिनजोय ॥ २६ ॥
 यहै व्रत नंधर धरि मन लाय । सवै हरी तजिये दुखदाय ॥ दसदिन शील वरत पालिये । संबरहू इह विधि धरिये ॥ २७ ॥
 वउदसतासण विधि जुतकरे । पांच पाय व्रत धरि परिहरे ॥ धरि आरम्भ तजै अघदाय । दिवस आठलों शुभ उपजाय ॥ २८ ॥
 अमपयादा सुनि भवि जीव । धरि त्रिगुद्धता सों लखि लीव ॥ सत्रह वरप साखि इक जान । करिये व्रतनसाल बखान ॥ २९ ॥

अथवा आठ वर्षों में जानें। वीस चार तें सु साख बखान ॥ यंच वरप करि यंशरा सा ३॥ अदिमने वचतन शुभ अशिलाख
 तीन वरपनो साख प्रमाण। एक वरप तिहुं साख मुजाण ॥ जैसी सकति दई अत्रकास। सो विंध आदर करि भवितास ॥
 सकति प्रमाण उद्यापन करे। संवर तैं कवहू नहिं दरे ॥ मैना सुन्दरि अरु थापाल। कियौ वरत फल लखोरसाल ॥ ३२ ॥
 कोड अठारह रहत जास। सवै गए सुवरण परकास ॥ और जहूँते सातसे धीर। तिनके निर्मल भए शरीर ॥ ३३ ॥
 चक्री भयो नाम हरपण। व्रत विशुद्ध आराध्यो तेंण ॥ तिन फल पायो सुखदातार। करम नासि पहुंचे भवपार ॥ ३४ ॥
 अंतराय पारो भविसार। मौन सहित करिए आहार ॥ व्रतमें धरी जिके नर खाय। संवर तास अकारथ जाय ॥ ३५ ॥
 ताते व्रत थारी नर नार। मन वच क्रम हियरे अत्रधार ॥ विधि माफिकते भवि जन करो। सुरनर सुखलहिं शिव तियवरो ॥
 सकल वरप के दिन सैं जान। परच अठारई भूपित मान ॥ खग भूमीस मिले नरैस। तिनकरि पूज जेमचक्रस ॥ ३७ ॥
 चक्रीकी जो सेवा करे। सो मनवंछित सुख अनुसरे ॥ आज्ञा भंग किए दुख लहै। ऐसे लोक सयाणें कहे ॥ ३८ ॥
 तिनजो इम दिन संवर धरे। तास पुन्य वरनन दो करे ॥ जो इन दिनमें अय उपजाय। संख्यातीत तास दुखथाय ॥ ३९ ॥

दोहा ।

इहै अठारही व्रत धरो, प्रगटवपाएयौ मयं । सुरगादिक की वारता, लहै सास्वतो समं ॥ ४० ॥

अथ सोलह कारण दश लक्षण खत्रय व्रत विधि कथन ॥

चौपाई ।

सोलह कारण विधि छनि लेह । जिन आगम सैं भापी जेह ॥ भादों माघ चैत तिहुं मास। मध्य करे चित थारि हुलास ४१
 वास इकंतर विधि जुत धरे। वीच दोग जीमण नहिं करे ॥ सोलह वरस करे भं व लोय । उद्यापन करि लखैं सोय ४२
 सकति नहीं उद्यापन तणी । करे दुगणव्रत श्रीजिन भणी ॥ दश लक्षण याही परकार । चक्रणो दशांरुधधार ॥ ४३ ॥
 दूनी विधि ब्रह्वासह तणी । करे इकंतर भाष्यो गणी ॥ मयंदा दशवरपहिं जान । वरप मदि विहंवारहि ठान ॥ ४४ ॥

अवर सकल विधि करिहै जिती । सम्बर साँहि जानिये तिती ॥ रत्नत्रयकी विधि एँ सही । वरषावधि तिहुवारह कही॥४५॥
 भादौ माघ चैत्र पखि सेत । वारसि करि एकन्त सुहेत । पोसह सकति प्रमाण जु धरे । अति उच्छ्राह तैतलो करै ॥४६॥
 पडिवा दिन करिहै एकन्त । पंचदिवस धरि सील महेत ॥ वरस तीन मरयादा गहै । उद्यापन करि फुनि निरवहै ॥४७॥
 सकतिहीन जो नरतिय होय । सम्बर दिवस न छाँड़ै सोय ॥ जाको फल पायो सो भणी । नृप वैश्रवण विदेहा तणै॥४८॥
 मल्लिनाथ तीर्थकर होय । ताके पद पूजत तिहुँलोय । बालब्रह्मचारी तप कियो । केवलपाय मुकति पद लियो ॥४९॥
 अजहूँ जे या व्रत को धरे । दरसन त्रिविधि शुद्धता करै । ताको फल शिवहै तहकीक । श्रीजिन आगम भाष्यो डीक५०

अथ लब्धि विधान व्रत चौपाई ॥

भादौ माघ चैत्र विध जान । वदि पंदरसि एकन्तहि ठान ॥ पडिवा दोयजतीज प्रवान । थापै तेला करि विधि मान ॥५१॥
 सकति प्रमाण जु पोसह धरै । चौथ दिवस एकासणकरै ॥ पाँचो दिवस सीलका पाल । तीन वरस व्रत करहि सम्हाल ५२
 पुत्री तीन कुटम्बी तणी । जिनव्रतलियो एम मुनि भणी ॥ विधिवत करि उद्य पन कियो । तियपद छेदि देवपद लियो॥५३॥
 वय द्विजसुत है पंडित नाम । गौतम भगंरु नाम ॥ महावीर के गणधर भए । तिनके नाम इन्द्र एँ दिए ॥५४॥
 इंद्रभूति गौतमको नाम । अग्निभूत दूजो अभिराम । वायुभूत तीजे को सही । वरत तणा तीनों फल लही ॥ ५५ ॥
 इंद्रभूत तदभव शिव गयो । दुहूँ तिहूँ उत्तम पदको लयो ॥ यातें ते नवि परम मुजान । करो व्रत पायो सुखथान ॥५६॥
 दूजो विधि आगम इम कहै । पहिवा ताजहि प्रोपथ गहै ॥ दोयजदिवस करे एकन्त । इस मरयाद वरपछह भन्त ॥
 परिवा तीज एकान्त करेय । दोयज को उपवास धरेय ॥ मरयादा भापी नववषं । करिये भवि मनमें धार हपं ॥५८॥
 पञ्चदिवस लौ पालै शील । सुरगादिक छल पावै लील ॥ फुनि उत्तम नर पदवी लहै । दीक्षाधर शिवतिय कर गहै ॥५९॥

अथ असैनिक व्रत चौपाई ॥

व्रत अपैनिधि को उपवास । श्रावण छदि दशमी करितास ॥ भादौ वदि जवदसमी होय । तिनहूँकंपोषत्रयलोय ॥६०॥
 अवर सकल एकंत जु धरे । सो दशवर्षहि पूरो करै ॥ उद्यापन करि छाँड़ै ताहि । नांतर दुगणो करिहै जाहि ॥ ६१ ॥

अथ मेघमाला व्रत चौपाई ॥

व्रत मेघमाला तच्छ नाम । भादव मास करै सुखधाम ॥ प्रोषध परिवा तीन बखान । अतैं दुहुचौदसि दुहुं जान ॥ ६२ ॥
सातवास चौदस एकंत । त्रिविधि शील जूत कारएस्त ॥ वरप पांच लों तछ मरयाद । मुर सुख पावै जूत अहलाद ॥ ६३ ॥

अथ जेठ जिनवर व्रत चौपाई ।

व्रत जेष्ठ जिनवर भवि लोह । जेष्ठमास में करियं सोय ॥ किशन पक्ष पड़वा उपवास । एकासण चौदा फनितास ॥ ६४ ॥
प्रोषध शुक्ल प्रतिपदा करै । फुनिएकन्त चतुदश धरै ॥ ज्येष्ठमास के दिवस जु तीस । तास सहित व्रत करे गरीस ॥ ६५ ॥
द्वारभ नाथ जिन पूजा रचै । गीत नृत्य वाजिब सुसवै ॥ अति उच्चाह धारहीये भभार । मरयादालखि कथा विचार ॥ ६६ ॥

अथ पट्टसीव्रत अडिह ॥

दूध दही घृत तेल लूण मीठो सहो । तजैपाख दोय दोय सकल संख्याकही ॥
करै अन्न एक वार व्रती इम व्रतसजै ॥ पखवारह मरयाद पट्टसी व्रत भजै ॥ ६७ ॥
अथ पाख्या व्रत ।

लूण दीत ससिहरी मंगल मीठो हरे ॥ धिरतदुद्ध गुरु दही दूध भुगु परिहरे ॥
तेल तै ज सनिइहै व्रत पाप्यागहै ॥ मरयादा जिम नेम धरे जिम निरवहै ॥ ६८ ॥

अथ ज्ञान पचीसी उपवास लिख्यते ॥

प्रोषध चौदह चोदसि के विधि जूत करे । तैसें म्यारा म्यारसि के प्रोषध धरे ॥
उपवास पचीस शील व्रत जूत धरे ॥ ज्ञान पचीसी व्रत जिनागम इम करे ॥ ६९ ॥
अथ सुसकरण व्रत ।

एक वास एकंत एक अनुक्रम करै । मास चार पख एक इकंतर इम धरै
देव शाल गुरु पूज सभें व्रत धरि सदा । नाम तास सुख करण हरण दूख जिनवदा ॥ ७० ॥

अथ समीशरण व्रत ॥ दोहा ॥

श्वेतकिशनचौदसि तणी, प्रोपथ वीसरु चार । शील सहित भक्विजन करै, समीशरण व्रत धार ॥ ७१ ॥

अथ आकास पंचमी व्रत ॥ चौपाई ॥

भादव बुदि पंचमि उपवास । करे जच पंचमि आकाश ॥ वरप पंच मरयादा जास । शील सहित प्रोपथ धरि तास
अथ अषै दशमी व्रत ॥

आवण बुदि दशमी कीं सही । अखैदशम व्रत कीं जन गही ॥ प्रोपथ करै शील जु त सार । तनुमरयाद वरप दशधार ॥

अथ चंदन षष्ठी व्रत

भादव वदि छठि दिन उपवास । चंदनपट्टीव्रतधरतास ॥ मनवच काय शील व्रतपाल । तखप मानवरप छहधार ७४ ॥

अथ निर्दोष सप्तमी व्रत ॥

भादौं बुदि सातें निर्दोष । वरत करे प्रोपथ शुभकोष ॥ संख्या सात वरप लौं जाहि । उद्यापन करि तजिण ताहि ॥ ७५ ॥

अथ सुगंध दशमी व्रत ॥

व्रत सुगंध दशमी को जांन । भादौं बुदि दशमी दिन ठान । प्रोपथ करे वरप दस सही । शील सहित मयांदागही ॥ ७७ ॥
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करे । धूप विशेष खवे अघ हरे ॥ धीवर बुता हुंती दुरगंध । व्रतफल तस तन भयो सुगंध ॥ ७७ ॥

श्रवणद्वादसीव्रत ॥

भादौं सुदी द्वादशि व्रत नाम । श्रवण द्वादशी जो आभराम ॥ वारहवरपलगे जो करे । शील सहित प्रोपथ अनुसरै ८० ॥

अथ अनन्त चतुर्दशी व्रत ॥

भादौं बुदि चौदस दिन जानि । व्रत अनंत चौदसि कां ठानि । तीर्थकर चौदही अनंत । रचै पूज सौं जीव महंत ॥ ८१ ॥
प्रोपथ करे शीलजुत सार । चौदह वरपलगे निरधार ॥ उद्यापन विधि करि व्रत जै । सो जन स्वर्गंतका सुख भजि ॥ ८० ॥

अथ नवकार पैतिसव्रत चौपाई ॥

अपराजित मंत्र नवकार । अक्षर तद्यु पैतीस विचार ॥ करि उपवास वरया परमांनि । सातैं सातकरी बुधमानि ॥ ८१ ॥
फुनि चौदा चौदसि गनि सांच । पांचै तिथिके मोषध पांच ॥ नवमी नव करिये भवि सात । सवमोषध पैतीस गणान्तर ॥
पैतीसी नवकार जु एह । जाप्यमन्त्र नवकार जपेह ॥ मनवच तन नर नारी करै ॥ छर नर छखलहि शिवसिख बरे ॥ ८३

अथ त्रेपन क्रियाव्रत ॥

त्रेपन किरियाकी विधि जिसी । सुणिए बुध भाषी जिन तिसी ॥ आठैं आठ मूल गुण तखी । पांचै पांच अणुव्रतभणो ॥ ८४
तीनतीज गुण व्रतकी धार । शिक्ताव्रतकी चौथ जु सार ॥ तप वारहकी धारसि जानि । तिसका मोषध वारह ठान ॥ ८५
सामि भावकी पढ़िवा एक । ग्यारसि प्रतिमा की दश एक ॥ चौथ चारख डूदानहि तखी । पढ़िवा एक जलगालन भणी ॥ ८६
अणथमीय पढ़िवा अवरोध । तीनहुं तीज चरण ह्य बोध ॥ एत्रपन मोषध जे कर । शोल सहित तपको अन्सरै ॥ ८७
सो नरतिय छर नृप छल पाय । अनुक्रमित शिवथान लहाय । उद्यापनविधि करिए सार । सकृति जेम हीननःवस्तार ॥ ८८

अथ जिनेंद्र गुण संपत्ति व्रत ॥ छंदचाल ॥

जिन नुण संपत्ति व्रत धार । छणिएतिनको अवधार ॥ दसअतिहे जिन जन मतही । लीये उपजै लखि सतिही ॥ ८९ ॥
उपज्यौ जव केवल ज्ञान । दस अति से प्रगदेजान ॥ इम अतिसय बीस जु करी । करि बीसदहे छखवरी ॥ ९० ॥
देवाकृत अति सय जाण्यो । चौदस चौदस तिह ठांण्यो । वछ प्राति हार्यं जिन देव । वछ आठैं करिएएव ॥ ९१ ॥
भावन सोलह कारणकी । पढ़िमा लोडश करि नीकी ॥ पांचौ कल्याणक जाकी । पांचौ पांचे कारताकी ॥
मोषध ए त्रेसठ जाण्यो । जूतसील भविकजन ठांण्यो ॥ उत्तम छरनर छल पावै अनुक्रमिते शिवपडुं चावै ॥ ९२ ॥

अथ पंचमी व्रत ॥ चौपाई ॥

फागुण आसाढ कातिग एह । सितपंचम तैं व्रत कां लेह ॥ पैसठ मोषध करिएतास । वरप पांच पांच परिमास ॥ ९३ ॥

स्वैत पंचमी को व्रत धार । कमलश्री पाथो फलसार ॥ भवसदंत तत्र मिलियोआय । तिनहूँ व्रत कीनो मनलाय ॥९४॥
तास चरित माहे विसतार । वरनन कीयो सब निरधार ॥ अजहूँ नर तिय करिहे सोय । त्रिविधि छुधि तैसो फलहोय ॥९५॥

अथ शील कल्याणक व्रत ॥ दोहा ॥

शील कल्याणक व्रत तणो, भेदसुनी जे संत । मन वच काय त्रिछुधि करि, धारो भविहरपंत ॥ १६ ॥

छंदचाल ॥

तिरयंचणि छर तियनारि । चौथी विनु चेतन सारि ॥ पञ्चहन्द्रिनिते बहुगुणिए । तिनिसंख्यात्रीसज युणिये ॥ ९७ ॥
मन वच तनतै तेकीस । गुणतै वहे तीसरतीस ॥ कृत कारित अनुमोदनते । गुणिए ऋनि झगठहि गनते ॥ ९८ ॥
एकसो असी हुई जोई । मोपथ कर भवि धरि सोई ॥ इकवरप मांहि निरधार । करिएपूरण सब ब्रत सार ॥ ९९ ॥
इकदिन उपवास नु कीजे । दूजीदिन असन नु ब्रिजे ॥ तीजै दिन फिर उपवास । इमकरहुइकंतर तास ॥ १६०० ॥
एकसो असी एकंत । इतनेही वास करंत ॥ दिनसाहे तीन सै धीर । पालै निति शील गहीर ॥ १ ॥
इह शील कल्याणक नाम । ब्रतहै बहु विधि छलधाम ॥ द्वैचक्री काम कुमार । इरिमतिहरि ब्रत अवतार ॥ २ ॥
तीर्थकर पदवीपावै । समकित जेत व्रत जो ध्यावै ॥ ऐस लखिजे भविजांण । करिएब्रतशील कल्याण ॥ ३ ॥

अथ शीलव्रत ॥ छंदचाल ॥

अवबुनहुगील व्रत सार । जैसो आगम निरधार ॥ बंशाल सुकल ब्रंठ लीजे । मोपथ उपवास करीजै ॥ ४ ॥
अभिनंदन जनवरमोपं । कल्याणक दिन शिवपोपं ॥ शुभ शीलव्रत तउ नाम । करिपंचवरप दुखधाम ॥ ५ ॥

अथनक्षत्रमाला व्रत ॥ गीताछंद ॥

अभिनी नक्षत्र की बुवाहरव्यार अधिक पचासही । तिदिमध्य एकासन सताईस वीस सान उपवागडो ॥
शुशोल मन वच तन त्रिछुद्रि करि विंचकी चावस्यो । मालानक्षत्रनुनाम व्रततै कृटिये विधि दावस्यो ॥ ६ ॥

अथ सर्वार्थसिद्धव्रत ॥

कातिग सुकलश्रष्टमदिवस तै अष्टवास जु कीजिए । त बुआदि अंतइकत दस दिन सीलस हितगनीजिए ॥
जिनराज श्रुत गुरु पूज उरसव वहित नृत्यादिक करै । सर्वार्थ सिद्ध जुनाम व्रतइह मोक्ष सुखको अनुबरे ॥ १ ॥

अथतीनेचोविसी व्रत ॥ दोहा ॥

व्रतचोवीसीतीनको, सुकल भाद्रपदतीज । प्रोपथकीजे शीलजुत, उरखल शिवको बीज ॥ ६ ॥

अथ श्रुतस्कन्धव्रत दोहा ॥

श्रुतस्कन्ध व्रत तीन विधि, उत्तम मध्य कनिष्ठ । पोइस प्रोपथ तीस दुय, वासुर माहि गरिष्ठ ॥ ६ ॥
दस प्रोपथ दिन बीस में, मध्य मृविधि जखि लेह । वसु प्रोपथ इक वासमें, है कनिष्ठ व्रत एह ॥ १० ॥
कथन विशेष कथा मही, द्वादशांग के भेद । त्रिविध जिनेस्वर भापियो, करके कर्म उखेह ॥ ११ ॥

अथ जिनमुखीवलोकन व्रत ॥

जिनमुखी बलोकन व्रत, करिये भादों मास । जिनमुख देखे प्रात उठि, अथर न पखै तास ॥ १२ ॥
बदचाल ॥

प्रोपथ इकमात्र इकन्तर । कांजीजुत करिये निरन्तर ॥ अथवा चन्द्रायण करिहै । लघु सकति इकन्त जु थरिहै ॥ १३ ॥
संख्या धरि वस्तु जु कैरी । ताते अधिक लेजहि कैरी ॥ इह व्रत महा सुखदाई । चहंगति भव भ्रमण नसाई ॥ १४ ॥

अथ लघु सुखसंपत्ति व्रत ॥

सुख संपत्तिव्रत दुय भेद । तिनकी विधि भवि सुनिपत्र ॥ पौंडश तिथि प्रोपथ पद दश । लहुंडी सुखदाय अनेकस १५
चंडीमुख संपत्ति व्रत ॥

पडिना इक दोयज दोई । तिहु तीज चीथ चणुं जोई । पांचै पण ब्रत ब्रह जाणो । सातें फुनि सात बखाणो ॥ १६ ॥

आठे के प्रोपथ आठ । नवमी नव आगम पाठ ॥ दसमी दस ग्यारस ग्यार । वारसिके प्रोपथवार ॥ १७ ॥

तेरसि तेरा गनि लीजे । चौदसि के चौदह कीजे ॥ पंदरसि पदरह शिवकांगी । भीसरु सो प्रोपथ घारी ॥ १८ ॥
इहनुख संपत्ति व्रतनिको । भव भव सुखदायक जीको ॥ मन वच काया शुभ कीजे । भविजन नर भवफल लीजे १९

अथ वाराव्रत चौपाई ॥

वाराव्रत तशी विधि जिसी । वारा भंति बखाणे तिसी ॥ प्रोपथ कीजे वारा भंति । अरु वाराही करिए एकन्त २० ॥
वारा कांजी तंडुल लेय । निगोरद्वे गोर रस तजिदंय ॥ अलय अहार असनइक भाग । लेहै करि है दुय वटभाग ॥
इकठाणी भोजन जल सत्रे । ले पुरसायवार इक तवे ॥ मूंग मोःचौला अरुचिणा । लेहि इकौण वीणी तपिणा २१ ॥
पाणी लूण थकी जो खाय । जयड नाम ताको कहवाय ॥ धिरत कंडिये सव परकार । सो जाणो लूखो जुअहार २२ ॥
त्रिविधि पात्रसाधरमीजाण । ताहिआहारदेठ विधिजाण ॥ लेनुख सोधि निरंतरथाय । पाळैव्रतधर असन लहाय २३ ॥
अंतराय हूए उपवास । करे नाम सुख सोधयो तास ॥ घरके लोक वृलाइ कहेई । विनजाचें भोजन जला देई ॥२४ ॥
धरे थालमाहीं जो खाय । फिरिया चैन अयाची थाय ॥ लूण सर्वथा त्यागे जदा । भंति अलूणाकी है तदा ॥२६ ॥
त्रिनपूजा हुन शास्त्र बखान । एक गैत्रको करि जरिमाण ॥ जाय उडंड तासके वार । भोजनलेहु कहै नरनार ॥२७ ॥
वाम असन जलको जंगहे । वरतमान निरमान जु कहै ॥ वाराव्रत भंति दस दीय । अनुकृमि भेतपत्र भगिलोय २८
समकित सहित जुव्रतको धरे । त्रिविध शुद्ध शीलहि आचरे ॥ करिहै पूरण वरप मंकार । सो हरपद पावे नरनार २९

अथ एकावली व्रत अडिल्ल ॥

सुणहु भयक एकावली विधिहे जिसी । सुकल प्रतिपदा पंचम अष्टम चउदसी ॥
कृष्ण चतुर्थी आठे चउदसि जागिए । चउरासी उपवास वरपमधि टाणिये ॥३० ॥
नीये कानि नृप प्रीपथ विधि हे तिसी । लयापनकी रीत करी आत्म जिसी ॥ ३१ ॥
दीक्षा धरि मुनि होय नोर तपको गभी । केवल ज्ञान उपाय मोक्ष पदवी लही ॥३१ ॥

अथ दुर्गावलीव्रत दोहा ।

विधि दुर्गावली वरतकी, श्रीजिन भापी ताम । बेला सात नु मासमें, करिए छुनि तिय नाम ॥ ३२ ॥
छन्दचाले ॥

पक्षि श्वेत यकी व्रत लीजे । पडिवा दोयज छुडि कीजे । सुनि पांचै षष्ठी जाणौ । आठि नवमी छंदि ठाणौ ॥ ३३ ॥
चाँदसि पूण्यो गिए लेह । बेला चहुं पपि सित एह ॥ थिति चःधी पांचमी कारी । आठि नौमी सुविचारी ॥ ३४ ॥
चौदसि मावस परबोन । पखि किसन करै छठतीन ॥ इम सांत मांस इकमाहीं । चारामांसहिँ इक ठाहिँ ॥ ३५ ॥
चौरासी बेला कीजे । उद्यापन करि छाँडीजे ॥ इस व्रांत डर शिव पावे । छलको तरां वोर न आवै ॥ ३६ ॥

अथ रतनावलीव्रत ॥ चाले छन्द ॥

रतनावलि व्रत इम करिये । मोपथ नृदि तीजहि धरिये ॥ पचम अष्टम उपवास । सितपक्ष तिहुं मोषधतास ॥ ३७ ॥
दोयज पंचम अंधियारी । आठि मोषथ सुखकस्त्री ॥ इक मास मांदिं ब्रह्म जानो ॥ वरष सतरि दुय ठानो ॥ ३८ ॥
उद्यापन सकति समान । करिके तजिए मतिसान ॥ हगजुत धरि शील धरीजे । ताते उत्तम फल लीजे ॥ ३९ ॥

अथ कनकावली व्रत ॥

कनकावलीय व्रत जैसे । आगम भाण्यो सुणि तैसे ॥ सितपक्ष थकी उपवास । करिये विध बुनिए तांस ॥ ४० ॥
मोषथ सित पडिवा कीजे । फुनिवास पंचमी लीजे ॥ छुदि दशमी फुनि होय जवही । वदि घंठ वारस व्रत सजहाँ ४१
ब्रह्म मास माल इकमाहीं । करिए भवि भाव धराही ॥ उपवास ब्रह्मचरि जास । इक वर्ष मध्यकर तास ॥ ४२ ॥

अथ मुक्तावलीव्रत ।

मुक्तावली व्रत लघु एम । करिहै भवि करि प्रेम ॥ भादौं छुदि सातै जाणौ । पडिलो उपवास बंलाणौ ॥ ४३ ॥
आसोज किसन छठि तेरस । उजियारी करिये ग्यारस ॥ कातिक वदि वारस ताम । सुदि तीजस ग्यारस ताम ॥ ४४ ॥

मगसिर वदि ग्यारसि जानौ । प्रोपथ सुदि तीजहि ठानौ ॥ नव नव प्रति वरप गहरीजै । प्रोपथइक असी करीजै ॥४५॥
 पूरो नव वरप मझारी । जुत शील करहु नर नारी ॥ तातें फल पावे मोडो । मिटिहे बिधि उदय नु पोडो ॥४६॥

अथ सुकूट सप्तमी व्रत ॥ दोहा ॥

सावण छदि सप्तमी दिवस, प्रोपथ को नरवाम ॥ सातवरप तक कीजिये, सुकूट सप्तमी नाम ॥ ४७ ॥

अथ नंदीश्वर पंक्ति व्रत ॥

नंदीश्वर पंक्ति व्रत, सुनहु भविक चितलाय ॥ क्रिये पुन्य अतिरपने, भव आतां पमिठाय ॥ ४८ ॥

चोपाई ॥

प्रथमहि च्यार इकंतर वीस । करहु पळे वेलो इकतीस । तावीळें नु एकंतर करै । द्वादश प्रोपथ बिधि जुत धरै ॥४९॥
 फुन वेलो करिये हित जानि । वारा वास इकंतर ठानि ॥ पाळै इक वेलो कीजिए । इकअंतर दशद्वयलीजिए ॥५०॥
 फिरि इक वेलो करि धरि पेम । बछउपवास एकंतर एम ॥ सबउपवास आठ चालीस । बिचि वेलो चहु गडेगण ।स. ५१॥
 दधि मुख रतिके उपवास । अंजन गिरि चहुं बलातास ॥ दिवस एक सो आठ मझार । वस्तयहै पूरणतां धार ॥५२॥
 छपन प्रोपथ भविमन आन । करे पारणावा वन जान ॥ लगत करै न अंतर परे । अथ अनेक भवचंचितहरे ॥ ५३ ॥

अथ लघु सृदंगमधि व्रत ॥ अडिख ॥

दोय वासफिर असन फिर तिहुं चउकरै । पांचवास धरि च्यार तीन दुय अनुसरै ॥

दिवसतीस में वास कहे तेईसहै । लघु सृदंगमधि सात पारणाजुत गहै ॥ ५४ ॥

अथ वडो सृदंग मधि व्रत ॥ गिताछंद ।

उपवास इक करिदोय थापे तीन चहु पण छह धरै । फुनिसात आठरु चहै नवलो केरिबहु सात जु करै ॥

छहपांच चाररु तीन दुयइक वास इवासीगह । मिरदंगमधि जुनाम दीरघ पारणा सत्रह सहे ॥ ५५ ॥

अथ धरम चक्र व्रत ॥ अटिल्ल छंद ॥

एकवास करि दोय तीन फुनि चहुंधरे । तापीबैं करि पांव एक फुनि विस्तरे ॥
दिनवाईस मभार वास षोडश कहे । धरम चक्र व्रत धारिपारणाब्ह गहै ॥ ५६ ॥

बडी सुक्तावली व्रत ॥

एकवास दुय तीन चार पणथापई । च्यार तीन दुय एकधार अघकांपई ॥
सवैं वासपणवीस पारणा नवगही । गुरुमुक्तावली व्रतदिवस चौतीसही ॥ ५७ ॥

अथभावना पचीसी व्रत ॥

दसमी दसउपवास पंचमी पंचहै । आठैवसुउपवास प्रतिपदादुयगहै ॥
सत्र प्रोपथ पच्चीस शील युतकीजिए । एभ, वना पचीसी वरत गहीजिए ॥ ५८ ॥

अथ नवनिधि व्रत

चौदा चौदसि चौदारतन तणी करे । नवविधि की तिथि नवमी नव प्रोपथ धरे ॥
रतनत्रय तिहुं तीज ज्ञान पण पंचमी ॥ नवनिधि प्रोपथ एकतीस करि अघगमी ॥ ५९ ॥

अथश्रुतग्यांन व्रत दोहा ।

प्रोपथ व्रत श्रुतज्ञातके, जिनवर भाये जेस । सकल आठने एकसो, बुधिछांण भविअरपेस ॥ ६० ॥
चौपाई ॥

सकल पापमै व्रतलीजिए । पोंइशु तिथिताकी कोजिए ॥ सोलापडिवा प्रोपथसार । सितभितकरि पखमें निरधार ॥ ६१ ॥
और कहुंतिथि तिज कर तीज । चौथ च्यार पण पांच लीज ॥ ब्रह्मछटिसतिं सात अर्पांशि । आठे आठ नवमीनवजंशि ॥ ६२ ॥
बीसदूने ग्यारा ग्यारसी । प्रोपथकरि वा । वारनो ॥ तेरसि तेरद वास अर्पांण । चीदसि चौदह प्रोपथ टांशि ॥ ६३ ॥
पुन्यो पन्दरह करि उपवास । अण।वस पन्दरह करितास ॥ सीलासहित प्रोपथ सब करे । भव भवके संचित अघहरे ॥ ६४ ॥

अथसिंहनिः श्लोडितव्रत दोहा

सिंहनि क्रीडित तप तणो, कहु विशेष वपाण । विधिसौ कीजे भावजुत, करम निरजरा ठाण ॥ ६५ ॥
बंद बाल ॥

प्रथमदिकरि इक उपवास । फुनिदोय एक तिहुं जास ॥ दोय ज्यारिं तीन पण कीजे । चवपांचथापि करिदीजे ॥ ६६ ॥
चहुं पांचतीन चहुं दोई । तिहुं एक दोय इक होई ॥ सबवास साठि गणलीजे । तसु वीस पारणा कीजे ॥ ६७ ॥
असौ दिन में व्रत एह । करि कछों जिनागम जेह ॥ इह तप शिवछुल के दायक । कनिहों पूरव मुनि नायक ॥ ६८ ॥

अथ लघु चौतीसीव्रत दोह ॥

अतिसय लघु चौतीस व्रत, तास तणो कहु भेद । कथा माहिं छुनियो जिसो, किये होय दुख छेद ॥ ६९ ॥
अडिल्ल छन्द ।

दसदसमी जनमत के अतिसय दसतरणी । फिरिदस केवलज्ञान उपजै दस भणी ।

चोदसि चौदह अतिसय देवाकृत कही । चार चतष्टय चौथ चार इहविधि गही ॥ ७० ॥

पौडश आठै प्रतिहार्य की वग भणी । ज्ञान पांचकी पांचै पांच कही गणी ॥

अरु पष्टी छह लही सबै प्रोपथ सुनो । पांच अधिक भवि सांठ कीए फल बहु सुणो ॥ ७१ ॥

अथ वारोसै चौतिसाको व्रत ।

दोयन पांचै आठें ग्यारस चउदसी । इनके प्रोपथ करै सकल अत्र जैनसी ॥

प्रोपथ सब वारहसो अरु चौतीसही । नाम व्रत वाराने चौतीसो कही ॥ ७२ ॥

अथ पंचपरमेशी का गुणव्रत उक्तंच गाथा

अरहंता क्षियालासिद्ध अठ्ठंच मूर्यं छतीसा । उवभूभायापण वीसा साहुणहुंति अहवीसा ॥ ७३ ॥

दोहा ।

कहूँ पंच परमेष्ठि के, जे जे गुण सगरीस । क्यालीसवसु तीस छह, अरु पचीस अड़वीस ॥ ७४ ॥

अरहत का गुण वर्णन

कहूँ क्यियालीस गुण अरहन्त । दस अतिशय जनमत है सन्त ॥ केवल ज्ञान भये दशथाय । दुहुंकी वीसदसे कात्राय ॥ ७५ ॥
प्रातिहार्य की आठें आठ । चौथि चतुष्टय चहुँए पाठ । सुर कृत अतिसय चत्रदह जास । चौदह चौदसि गनिए तास ॥ ७६ ॥

सिद्धका गुण वर्णन

अब छणिए वनु सिद्धन भेद । करिए वास आठ सुणि लेह ॥ समकित दूजो याण वखाण । दंसण चौथो वीरजजाण ॥ ७७ ॥
सुहमब्बट्टो अवगाहण सही । अगुरु लोचु सपतम गुणगही ॥ अब्बा वाध आठयो धरै । इन आठोंकी आठि करै ॥ ७८ ॥

आचारज के गुण छत्तीस

आचारिज गुण जे ह छतीस । तिनकीविधि सुनिएनिसिदीस ॥ वारसि वारा तप दशद्रोय ॥ पडावात्रसिकी छठिछह होय ७९ ॥
पाँचै पाँच पाँच आचार । दश लक्षण की दशमी धार । तीन तीज तिहुं गुप्तजो तको । प्रोपय ए कह तीस जो भणी ८० ॥

उपाध्याय के गुण

गुणपचीस उक्ताया जानि । चौदह पूरव कह वखान ॥ ग्याराअंग प्रकाशे धीर । एपचीसगुण लखिये वीर ॥ ८१ ॥
चौदा चौदस के उपवास । ग्यारां ग्यारसि प्रोपय तास ॥ उपाध्याय के गुणहैं जिते । वासपचीस वपाणें तिते । ८२ ॥

साधु का गुण २८

साधु अठार्है सगुण जांणिये । तिविप्रोपचरनि विधि ठांणिए ॥ पंचमहाव्रत समिति जु पंच । इन्द्रीविजय पंचगणिकंच ॥ ८३ ॥
इनिकी पन्दरह पञ्चेकरे । पडआवनिकी छठि कहधरे ॥ भूमिसयन मञ्जन को त्याग । वसनत्थजनकचलोंच विराग ॥ ८४ ॥
भोजन करे एकही वार । ठाढो होइ सो लेंइ अहार ॥ करेनही दांतणकी यात । इनि सातों की पडिवासात ॥ ८५ ॥

सप्तमिषि मोषथ ए अठवीस । करिहै भवितरिहे शिवइंस ॥ पञ्चपरमगुरु गुण सत्र जोइ । सोपरतियालीस धरि कोइ ॥ ८६ ॥
 करिए मोषथ तिनके भव्य । छरपदके सुख दायकसध्व ॥ अनुक्रम शिवपावै तहकीक । जनवर भाष्यो है यह ठीक ॥ ८७ ॥

अथ पुष्पांजलीव्रत । अडिह्ल

भादों तें वसु चैत मास पर्यंतही । तिनकेसितपप में ब्रंतपुष्पांजली कही ।
 पञ्चमतेँ उपवास पांच नवमीलने ॥ किये पुन्य उपजाय पाप सिगरे भरी ॥ ८८ ॥
 अथवा पांचैनवमी बास दुयही करै । छठिसातेँ दिन आठे तिहुं कांजी करै ॥
 छठि आठें एकंत वास तिहु कीजिये । दोयवास एकंत यिनहुं लीजिये ॥ ९१ ॥ दोहा ॥
 पांचवरषलीवरतइह, करि त्रिशुद्धताधार । तातेँ फलउतकिष्टहै, यामेँ फेर न सार ॥ ९० ॥

अथ शिवकुमारका बेला लिख्यते ॥ चौपाई ॥

शिवकुमारका बेला जान । सुनीकथाजिनकहं बेखान ॥ चक्रवर्तिका सुत सुखधाम । शिवकुमार है ताको नाम ॥ ९१ ॥
 घरधै तग कीनो तिहसार । बेला चौसठिबर्ग मरुार ॥ त्रिया पांच से कै चर माहि । करे पागणे कांजी आहि ॥ ९२ ॥
 पूरण आनु महेंद्रइथयो । तहतें जंबू स्वामी भयो ॥ दीक्षापर तपकरि शिव गयो । गुणअनंत सुख अंत न पयो ॥ ९३ ॥
 वरपहजार एक मति एक । बेला चौसठि घटि सुविक ॥ करै आयु लघुजानी अघे । शीलसहित धारो भविसवि ॥ ९४ ॥
 लगतै कारण रक्तिको नाहि । आठें चोदस कामकनाहि ॥ इनमें अतरपाइ नहीं । सोउतकिष्ट लहि सुखग्रही ॥ ९५ ॥

अथतीर्थझरोंका बेला । दोहा ।

अगमआदित्तीर्थेशके, बेलावीसरुवार । आठें चोदस कीजिए, अंतरनूरन पार ॥ ९६ ॥ चौपाई ॥
 सातेँ आउ बेला ठंन । नीमी दिवसपारणेंगान ॥ तेरति चोदसि दयउपवास । यावत्पून्यो भोजन तास ॥ ९७ ॥
 आगारणाकी विधि जिसी । सुणीवपाणतहतें भैतिसी ॥ बेला प्रथम पारणेंपइ । तीन आंजलीतंतें नेंद ॥ ९८ ॥

अहं तैस्स पारथा ज्ञान । चीनञ्जाजलौ दूध वपान ॥ इमवेला कीजे चीवीस । तिनतै फल अति लहै गरीस ॥ ९९ ॥

अथ जिन पूजा पुरंदर व्रत लिख्यते ॥ गीताब्जद ॥

वरत जिन पूजा पुरन्दर सुनहु भविचितलायकै ॥ बारासहीनामांक कोई मासइकहित दायकै ॥
ताकी सुकलपढिवायकी ले अष्टमीलौकीजिए । प्रोपथइकंतर आठदिनमै पूजजिन शुभ लीजिए ॥ १९०० ॥

दोहा ॥

वरत यह दिन आठको, वार एक करि लेह ॥ मनवचन तिनकालजिन, पूजे सुरपद देह ॥ ॥

अथ रोहिणीव्रत लिख्यते ॥

व्रत असोक रोहण तनो । करिहै जे भविजीपु ॥ सात बीस प्रोपथ सकल । धरि त्रिशुद्धताकीष ॥ २ ॥
अडिहलब्ध ॥

जिहदिन माखनचत्ररोहिणी आय हे । ताको प्रोपथ करै सकल सुखदायहै ॥
अनुक्रमते उपवास सताईसजानिए । वरप सवा दुय मांहि पूर्यता मानिए ॥ ३ ॥

अथकोकिलापञ्चमी व्रत लिख्यते ॥ दोहा ॥

अवैकोकिला पञ्चमी, वरत कहो विधिसार । शील सहित प्रोपथ क्रिये नुरपतिको दातार ॥ ४ ॥
द्रुतविलंबितब्ध ।

पक्षअंधयारेवास असाढही । करिये प्रोपथकातिग लौं सही ॥ तिथि सुपंचमके उपवासही । प्रतिशुकोकिलपंचमिकौलही
दोहा ।

परयादा या वरसकी, सुनहु भविकपरवीन ॥ पांचवरपलौकीजिये, त्रिविध शुद्धताकीन ॥ ६ ॥

अथकथलचंद्रायणव्रत लिख्यते ॥दोहा॥

वरतकवलचंद्रायणा, वारहमास मकार ॥ एकशहीना जे करे, एखवार चितधार ॥७॥ चीपाई ॥
 कारहि अमावसको उपवास ॥ पाछे तै एक चहतागास ॥ पडिवादिवस आस इकलीन ॥ दोयज दीय तीजदिन तीन ॥ ८ ॥
 चौथचारपणपांचे सही ॥ छठिछहरातै सतलही ॥ आठें आठनवमनो टेक ॥ दशमीदसम्यारहि दस एक ॥ ९ ॥
 वारसि वारह तैरसी जान ॥ तैरसि चौदह ठान ॥ पूरयो दिवस लेई दस पांच ॥ सुकलजकीए विधि सांच ॥ १० ॥
 कृष्ण पक्षकीपडिवा जास ॥ चौदहगास तणी परगास ॥ दोयज तेरह वारह तीज ॥ चौथ म्यार पञ्चमि दसलीज ॥ ११ ॥
 छ नवम्यातै आठ वपांण ॥ आठें सात नवमि छह जांण ॥ दसमी पांचम्यारसीचार ॥ वारसि तिहुं तेरसि दयधार ॥ १२ ॥
 चौदहसदिन गंसइकजाण ॥ यांसदिवस पारणतै ठांण ॥ एकआसको व्रतहैएह ॥ गासलींजये तिम सुंए लंइ ॥ १३ ॥
 गासलींज को ऐसो करै ॥ सुखमें देतनकरतैपरं ॥ बीचापवोपाणीन गहाय ॥ अंतराय गल अटकै थाय ॥ १४ ॥
 जिनबूजा विधि जुतदिस तीस ॥ करे वन्देना गुलनमिसीस ॥ शाखवपांणजुणमनलाय ॥ धरमकथा जेदिवसगमाय ॥ १५ ॥
 प.ले. शीलवचन मत्रकाय ॥ इहविधि महा पुन्य उपजाय ॥ यातै सुरएदहोथै ठीक ॥ अनुकष शिवपावे तहकीक ॥ १६ ॥

अथमेरुपुच्छिव्रतलिख्यते ॥

वरन मेरु पंक्ति जो नाम ॥ तासकल्ल विधि जुनि अधिराम ॥ दीपअठई मध्यजुजाण ॥ पञ्चमेरु जो प्रकटवपांण ॥ १७ ॥
 जंजूदीप सुदगंन सही ॥ विजयवृषप्रबधाज की सही ॥ अपरधातकी अचल ममानं ॥ माची पोहकर अंदरमान ॥ १८ ॥
 पुंकर अपकर सुविदंनमालि ॥ पञ्चमेरु जने बीस सभ्यालि ॥ तिनि असी दैत्यगुहसार ॥ तिकले जत मोपथनिरधार ॥ १९ ॥
 सुणहु अदरशण भूथर बंध ॥ भद्रनालवने चहुं दिरि तेह ॥ जिन अंदिर तिह चार वपांण ॥ मोपथचार इदठठ.श. २० ॥
 पाछे वैलोकीजे एक ॥ वनसोमनस दूसरो टेक ॥ चारजनेश्वरभवन अकार ॥ चारवार हुनि देलो तात ॥ २१ ॥
 नंदन वनजिन मोपथ वार ॥ पीछे ताकेनेलोधार ॥ भांडुक वनचलजिनवरगेह ॥ ताके चहु मोपथ परिपुद् ॥ २२ ॥

फुनि बेलोवागो भविसार । मेरु उदरसन इहविसतार ॥ प्रोपथ सोलहे देखाकार । ब्रतदिन चहुचालीस मंभार ॥ २३ ॥
 चार वीस उपास वषांण । वीसजतास पारणाजांण ॥ ऐसं अजुक्कम करिए भेअव । पंचमेरु ब्रत विधि सो संब ॥ २४ ॥
 दमाव्रत मेरु सुदरशन नांथ । तेईनाम सबनि सुखधाम । वाही विधि सब वरत जतणी । जाणोसही जिनागम भणी ॥ २५ ॥
 इनभे अंर पाडे नहीं । लागते प्रोपथ बंला गही ॥ सब मापथ को ऐसे जौड । देला वीस करे चित कोड ॥ २६ ॥
 दाग सकल एकलौ वीस । करे पारणा सचरतीस ॥ सातमहीना दिन दस मांहे । सकल वरत इम पूरण थाहि ॥ २७ ॥
 सकल वास बेला विच जांण । वीसइकंत जुकहे वचांण ॥ ऐसे वीस दिवस जालिणं । वरत मेरु पकतिसानिए ॥ २८ ॥
 शील सहित शुभ ब्रत पालिये । हीणउदेविधि के टालिये ॥ बुरपदपावै संशयनाहि । अजुक्कमभवलाहि शिवदुरजाहि ॥ २९ ॥

दोहा ॥

वरतमेरु पंक्ति इहै, बल्यो सुख दातार । करहु भविक समकित सहित, ज्यो पावै अंबपार ॥ ३० ॥
 पंचमेरु के वीसुवन, तहां असी जिन गंई । तिन के ब्रतकी विधि सकल, पूरणकीनी एह ॥ ३१ ॥

अथ पल्ली विधान ब्रत लिख्यते । दोहा ॥

सुणहु पल्यविधानब्रत, जिनआगम अनुसार । वरप बहतर कोजिए, वारा मास मभार ॥ ३२ ॥

बंदवाल ॥

आसाजकिसन छठि तेरस । बदिबेलोग्यारस वारस ॥ बीइसि सितमोपथ धरिये । कातिक वदिवारस वरिए ॥ ३३ ॥
 प्रोपथ सुदि तीजहवारसि । भगतिएर बदि वारजुग्यारसि ॥ सुदि तीज अवरकरिवारसि । बदिपोसह दुतिया पंदरसि ॥ ३४ ॥
 सुदि पांचे सातें कीजे । पून्यको वास धरीजे ॥ बदि माघ चोथसातें गनि । चौदस उपवास धरोमनि ॥ ३५ ॥
 सुदि सातें आठि बेलो । दशमी करिवास अकेलो ॥ फागुणपांचे छठिकारी । बेलोभुण तिथि बंजियारी ॥ ३६ ॥
 फुनिपडिवाग्यारसि लीजे । दोनौ दिन भंलौकीजे । बदिपडिवा दोयज बेलो । चैत की करो इकेलो ॥ ३७ ॥

चौथे छठि इकादस अठमी । छुदिसाते को अरदसमी ॥ वैशाख चौथे यदि धारी दशमी वास फुनि करी ॥ इ० ॥
 सितदोयज तीज धरीजे । नौमी तेरसि दुहुलीजे ॥ दशि प्रोपध तेरसि ठोन । चौदसमावस तेलों जान ॥ ३८ ॥
 छुदि आठे दशमी पंदरस । उपवास करो करि मन वस ॥ अवसावण माघ केघाम । कहि हों भव्य छुखियो तास ॥ ४० ॥
 छठि चौथि अष्टमी सावण । फलि चौदनि सित तृतीया भण ॥ बारनि तेरसको वलो । पुन्यु को वास अबेलो ॥ ४१ ॥
 पादों वदि दोयज वास । छठि साते वेलो तास ॥ बारन उपवास धरीजे । जितपाखज एक करीजे ॥ ४२ ॥
 तेले पांचे छठि साते । पुतनीमी वासकी याते ॥ ग्यारस बारन तेरसको । प्रोपध तेलों पंदरसको ॥ ४३ ॥
 उपवास आठ चालीस । तंलाचहु कहे गरीज ॥ वेलाछह जिनवरभाषे । जिनआंगस में इह आपे ॥ ४४ ॥
 ए करी मकरमें वास । सत्तरि दुय आगम भास ॥ आरणे पारणों सन्त । करिये एकन्त महंत ॥ ४५ ॥
 धरि शंख त्रिविधि नरनारी । अत करहु नुढील लगारी ॥ डर है अनक्रम शिव जाई । बिधिपहयतखी इह गाई ॥ ४६ ॥

॥ अथ रुकमणीव्रत लिख्यते ॥

संवया ३१ सा ॥

लक्ष्मी मती का भव वाहिं व्रत कीनो इह श्वंतभाद्र पद आठे प्रोपध आदाय कै । दीय जाय धरखै और चरि
 उपवास दिन पूजा रचै दोय याम पाखे वनायके ॥ ४७ ॥ कीनों आठ वरच लों गद्द भाव देह त्यागि अख्युत
 सुरेश इंद्राणी पद पायके । भई रुकमिणी कृष्ण वासदेव पदतिया रुकमिणी नाम व्रतजाणो चितलायके ॥ ४८ ॥

अथ विमानपंकती व्रत लिख्यते ॥

व्रत विमान पंकती तणे, बिधि सुनिचे भविसार । मन वच क्रम करिए सही, मुर सुरेश पद भार ॥ ४९ ॥
 ॥ अहिल्ल ॥

सो घमरु ईशान मुग दुहुं तें गठी । पंच पिचोर लगे पटल त्रंसठ करी ॥

तिनही चहुदिस पादि वय श्रेणी जहाँ । जैनभवन है अनेक अक्रचम ही तहाँ ॥ ५० ॥

दोहा ।

तिनके नाम विधानको, बरत ईहै लखि सार । जहाँ जहाँ जते पटल, सो सुनिचै विस्तार ॥ ११ ॥
॥ चौपाई ॥

दुय चर गति एकतीस बिल्बात । सनतकुमार माहेंद्रहि सात ॥ चार अक्षर अक्षोत्तर सही लांगव कापिष्टहै द्रयसदीपर
एक छक महाअक्रह धार । एकहिस्तार अरु बहसार ॥ आगत प्राणत आरण तीन । अच्युत लगेखहपटलमवीन ॥५३ ॥
नव नवग्रैवेयक जानिये । नव नवोत्तर इक मानिये ॥ पंच पंचोत्तर पटल जुएक । एजेसठ मुणिया धरि छविबेक ॥ ५४ ॥
अवैवरात प्रोपथ विधि जिसी । कथाप्रमाण कहौ सुणिया तिसी ॥ एकपटल प्रतिप्रोपथ च्यार । करै एकंतर चित अवधार ॥५५॥
प्रोपथ लगतें बेली एक । करि भविजन मन धरि सुविवेक ॥ तापीबैं प्रोपथ चहुं जान । तिनके पीछैं बेलो ठान ॥ ५६ ॥
चहुं प्रोपथ बेलो चहुं वास । छटबहुअनसनफुनिखठतास ॥ इह विधिचिसठ वारविधान । चहुं प्रोपथ छठ अनुक्रमान ॥५७॥
त्रेसठवार जु पूरण थाय । इकलगतां तेलों करवाय ॥ बीच इकंतर असनजु करै । एक शुक्ल अंतर नहि परै ॥ ५८ ॥
इनके बला अरु उपवास । अनशन दिवसर तेलोजास ॥ अरु सब दिन इकठे कर जोड़ । सो सुणह्यौ भविचितधरि कोड़ ॥५९॥
अह सौ दिवस सताखवै जाण । वरत दिवस भैयाद बलाख ॥ वास इकन्तर दुइसे जान । तिन ऊपरवावनपरवान ॥६०॥
त्रेसठ छदते लोइक जान । अब सब वासजोड़ इस मान ॥ वास इक्याली परसचतीन । असन तीनसे सोला जाण ॥६१॥
इह व्रत तीनभवनमें सार । विधिजुत किए देव पदधार ॥ अनुक्रम शिवजैहै तहकीक । अवधारहु भविचितधरि कीक ॥६२ ॥

अथ निरजपंचमी व्रत लिख्यते ॥ सर्वैया ३? सा ॥

प्रथम आसाढ़ श्वेत पंचमी को वास करे कातिकलो मास पांच प्रोपथ नदीनिचं ।

आठ परकार जिनराज पूजा भावसेती उद्यापन निधि करि छकूच लक्ष्मीजिने ॥

क्षीयो नागश्रिय सेठ बुता एकवरपलों अगति पात निधि कयातें पड़ेजिये ।

निजंर पंचमी को व्रत इह भुखकार भाव शुद्धकीए दुःखकोजलांजलि दीजिई ॥ ६३ ॥

॥ अग्नौ चोदसि निजंरणी ब्रत लिख्यते ॥

दरसण के विमति चोदसि अग्नौ छुदि । सावणकी चौदस बृहानकाज कीजिये ।
भादों सुदि चोदस को प्रोषध चारित केरो तपजोग चौदसि असौज सीत लीजिये ॥
एहे चार प्रोषध वरण सांख विधि सेती कर्म निर्जरनी वरत छुन लीजिये
वनश्रीय सेठ जुताकरि घुरपद पाथो अर्जो भवि करिचिको चितदीजिये ॥ ६४ ॥

अथ आदित्य वार व्रत लिख्यते ॥ दोहा ॥

छुणोवरतअदादीतकी, विधि भाबी हे जेम ॥ कथाममाण छ कहत हों, दायक सब विधि जेम । ६५ ॥
चौपाई ।

प्रथमएकगाले आसाढ । आठईधून्युं विचि अठ ॥ सांवण मांहि करे फुनिवार । चारवास कर भादों मभार ॥ ६६ ॥
तजे चकार गभार विचार । वरष एकमाहे नववार ॥ करैवरष नवलों निरधार । उजुमण करोसकत संभार ॥ ६७ ॥
उत्तमप्रोषधकी विधि जाण । आमिलदूजी जगत यवांग ॥ तृतीयमकारकहो इकठान । एकभुक्तिविधि चौथीजान ॥ ६८ ॥
संयम शील सहित निरधार । वरण जु नव को इह विसतार ॥ वरष एक में कीयोचहै । दीत आठ चालीस जुगहै ॥ ६९ ॥
विधि नाही चहुंवारपलाय । पावनाथजिन पूजा ठाय ॥ कीजे उद्यापन चहुंसार । पीळें तजिए व्रत निरधार ॥ ७० ॥
उद्यापन की सक्ति न होय । दूणोव्रत करिये भविलोय ॥ सेठनाम मतिसागर जाण । त्रिया गुणवती जास वखाण ॥ ७१ ॥
तिरहर व्रतको फग पाइयो । विधिते कथामादिगार्यी ॥ इहजाणी कल्पभविजन करी । व्रतफलतै शिवतियकुं वरी ॥ ७२ ॥

अथकर्म चरव्रतलिख्यते ।

कर्म चरव्रतकी विधि एह । आठ भर्तति भावतहों जेह ॥ आठें आठ आठ में करे । चरिठि आठें पूरा परे ॥ ७३ ॥
प्रोषध आठ करे विधिवार । इकठायानसु एकहीवार ॥ एकगाराले इक दिन मांहि । आठदिनडेडकरे सक नाहि ॥ ७४ ॥
करदि इक फल्पो हरित वजेय । सीत दिनस तन्दुल इकलेग ॥ लादू तिथि इकलाइखाय । कांजी आठ करे गुखदाय ७५ ॥

दोहा ।

वर्ष दोय बहु मास नें, व्रत पूते हे एह । शील सहित व्रत कीजिये, दायक नुर शिवगेह ७६ ॥

अथ अन्नस्तमीव्रत लिख्यते ॥ चौपाइ ॥

अवस्तमीव्रत विधि इमपाल । घटिका दुयारवि अथवत टालि ॥ दिवस उदय घटिका दुय चढे । तंजि आहार चहुनिधि व्रतवढे ७७
याकीकथा विशेष विचार । भापो व्रपन क्रिया मकार ॥ याते कहीं नहीं इह ठाम । निसि भोजन तमिये अंभिराम ७८

अथ पंचकल्याण व्रत लिख्यते ॥

दोहा ।

व्रत कल्याणक पंचमी, मोपथ तियि विधि जाण । आचारज गूणभद्रकृत, उत्तर पुराण प्रमाण ॥ ७९ ॥

तीर्थकर चौबीस के, गरभकल्याणक चार । तियि उपवास तणी सुनो, करिये तिम मन धार ॥ ८० ॥

गर्भकल्याणक ॥ पछुड़ीछन्द ॥

दोयज असाढ यदि दृषभधीर । ब्रविवास पूष्य सुदि छठि जुनीर ॥ मुनि व्रतसंवाणदुनीयस्यांम । दसपकरी जिनकुथनामवा
सितदांयजसु मति सुगरभएव । भादोवदिसातिसांतिदव ॥ छटिछठि सुपारस उदरमात । नमिब्रटिकु वरिदांयजविल्यात ८२
कातिक यदिपडिवाजिन अनन्त । सुदिछठि नेमि प्रभु नर महंत ॥ पद्मभुवदि छटिमाघमास । फागुणवदि नौमी सुविधिमास
अरदनाथ ब्रह्मलत्रितया वर्षाण । अहे सभवउरमांतठांणि ॥ ससि प्रभवदिपांचैतएव । आठे सांतलादल गरभभेव ॥ ८४ ॥
सुदि एकैत्रिनवर मल्लिजांनि । वदितेजपारच वैशाखमांनि ॥ षुदिछठिअभिन दन गरभ वास । जिनधर्मनाथतेरसप्रकाश
भयंस जठवदि छठिगरीस । दंशमीदि नउच्छव विपलंइश ॥ जिनअजित अभावसिउदरमात ॥ चौबीसगरभ उरुवविल्यात ॥

दोहा

बीस चार जिनवर गरभ, वासर करे बलान ॥ अवे जनमदिनतियि सकल, मुनिभवि चित हित आंन ॥ ८७ ॥

जन्मकल्याणक ॥ पञ्चदशो छन्दः ॥

आसाद्दसमी वदि नमि जनेश ॥ सामण वदि छटि नैमी श्वेशः ॥ कातिगवदि तेरसपदमभंत । मगसिर सुदि नैमी पुष्पदंत ॥
 ग्यारसि मल्लिनु जन्मवतारः ॥ अरहताथ जनम चौदसिसुसार ॥ पूरणमासीसम्भवसेवः ॥ कश्चिप्रभवदि ग्यारसिपो पएव ॥
 ग्यारसदिनगारशनाथज्ञानः ॥ शीतल जिनवारसिकिसनमानः ॥ सितचौथः ॥ विमलनामजुलब्धः ॥ दसमीसत उखरअजितनाह ॥
 वारसि अभिनन्दनजनमलीय तेरसि जिनथमंपकाशकीयः ॥ ग्यारसि फागुण श्रैयांसः ॥ वार्मि । जिनवासूपूज्य चौदसिः ॥
 वदि चैत नवभिरिसदेसस्वामिः ॥ दसमी सुनिमुत्रतपय नमामिः ॥ सुदि तरसः ॥ न्ये वीरनाथः ॥ छेमतिदसमी देशखः ॥ श्यामः ॥
 वदि पडिवा जनमे कुंभवीरः ॥ वारसि वरिजेठ अनन्त धीरः ॥ चौदसिसिशीशांतिः ॥ कयो प्रकाशः ॥ कित वारसिजनमे श्री बुपाश

॥ तप कल्याणक ॥

नमिनाथ दशमीआपदि श्यामः ॥ मात्रण सुदि छठ तप नमिनाम ॥ कातिग वदि तेरसवीरधीरः ॥ मगसिर वदिदशमीपत्रवीरः ॥
 सुदि एकं दिता पुष्पदन्तः ॥ दशमी दिन अरह जिनैतप महन्त ॥ जिन मल्लित जो ग्यारसिसुनेहः ॥ सुदिपूः ॥ योगंभवतपगनेहः ॥
 चन्द्रम वारसिकिशनपोषः ॥ ग्यारसिपासतप्यो उपधिपोषः ॥ कीतल जिनवदिद्राटसीबमाहडदि चौथः ॥ विमलतपलियहुनारः ॥
 नवमीदिन दिता अजितदेवः ॥ वारस अभिनन्दनसुत पभेवः ॥ तरसः ॥ जिनथम तपो मभमः ॥ फागण वदि ग्यारमि श्री श्रैयांसः ॥
 प्रभु वासुपूज्य चौदस सुज्ञानः ॥ वदि चैतर नवमी रिसहमानः ॥ सुव्रतदशमी वैशाखश्यामः ॥ सुदिपडिवा कुंथ जिनसतामः ॥
 सितननमी लियोतपसुमतवीरः ॥ निनशांतिजेठवदि चौथधीरः ॥ वदि वारसितप जिनवरअनन्तः ॥ वारससुपाश्रं कितजेठसन्तः ॥
 दाहा ।

तप कथ्यानकको कथन, उत्तर पुराणहमाहि । कादि कियो अब ज्ञानको, बुनिहुं चित इक टाहि ॥ १००० ॥

ज्ञानकल्याणक ॥ पञ्चदशो छन्दः ॥

जिन नैमीश्वर पडिवा कुंवारः ॥ मभव जिनचौथरिज्ञानधारिः ॥ कातिगडदि दीयजुहूपदन्तः ॥ लहिकेपल वारस अरमहंतः ॥

माधिरबुद्धिभ्यारभमलिबुधनोषाग्यारसनमिहयियाकर्मजोषाशीतलबुद्धिबौद्धिकिपोषधानसुद्विदमीसुमतिकेवलमहान्द
 बुद्धिग्यारसिअजितबुधोषपाय।चौदसअभिनन्दनज्ञानपाय॥पुन्योच्छिहिकेवलधर्मवीर।श्रेयांसअभावसमाधधीर३
 बुद्धिवासुपूज्यदोयजप्रकाश।छठिविमलनाथकेवलविभास॥फागुणबुद्धिबुद्धीमुपार्श्वेश।सातैचंद्रमभुनन्सीश४
 फागुणवद्विग्यारसहृषभज्ञान।बुद्धिचैतचौथपारशबखान॥अभावश्रीकिनवरअनंत।बुद्धितीजकुंयकेवललहंत५
 बुद्धिग्यारससुमतिजुबोधपाय।पदमभुपुन्योज्ञानथाय॥बुद्धतनीमीवैशाखश्याम।बुद्धिदशैवीरजिनबोधपाम६

दोहा ॥

भ्यानकल्याणकवर्कयो, उत्तरपुराणनेनेम।अत्रनिर्वाणप्रमाणतिचि, सुणहुभविकचरमेम॥७॥

निर्वाणकल्याणक ॥ पछडीबुद्ध ॥

आषाढविमलआठेअसेत।बुद्धिसातेशिवनेमीसहेत॥सावणबुद्धिसातैपारवनाथ।पुन्योश्रेयांसलहिमोक्षसाथ॥८॥
 भादोबुद्धिआठेपुहपदंत।जिनवाडपूज्यचौदसनेनंत॥सीतलजिनआठेसितकुमार।कातिगभावसभ्रवीरपार॥९॥
 बुद्धिमहाचतुर्दशबुधभनाम।पद्मभुफागुनचौथस्याम॥सातैउपार्श्वशिवलहीयधीर।चंद्रमभुसानैत्रजगतीर॥१०॥
 बुद्धिग्यारसिसुमुत्रतवखांण।बुद्धिपांचैमज्जिजिनसजाण।बुद्धिचैतमात्रसीनंतनाथ।अभावसअरजिनमोक्षसाथ॥११॥
 बुद्धिपांचैशिवजिनअजितपाय।बुद्धिछठसभ्रनिर्वाणयाय॥बुद्धिग्यारसिसुमतिबुमोक्षधीर।नभिवद्विचौदसवैशाखतीर
 बुद्धिपूकेशिवदिनकुंधजांण।अभिनन्दनछठनिर्वाणठांण।बुद्धिचौदसिछठशुशान्तिनाथ।सुद्धिचौथधर्मशिवकयोसाथ॥
 दोहा ॥

कल्याणकनिर्वाणकी, तिथचौवीसविवार।कहीजेमभापीतिसी, उत्तरपुराणमकार॥१४॥
 होमसपुराणव्रतजवे, करउद्यापनसार।आगममैजिनभाषियो, सोभचिनणनिरधार।१५॥

उद्यापनकीविधि ॥ चौपाई ॥

पांचकीजिये जिनवरगेह।पांचप्रतिष्ठकरशुभलेह।फालरिफांककंसालरुताल।ब्रह्मचरसिधासनसार॥१६॥

भासंदल पुस्तक भंडार । पंचपंच सच कर निरधार ॥ घंटाकलकंधज पणथाल चंद्रोपक बहु मोलाविशाल ॥ १७ ॥
 पुस्तक पांच चैत गृह धरै । तिन जांचे भविजत भवतरे ॥ चारसंघको देय आशार ॥ जिन आगम भाची विधसार ॥ १८ ॥
 दूननी विधि जो करी न जाय । सकत ममाण करै सो आय ॥ सकत उलघन करनी कर्धी ॥ सकतिवान करपरहे नर्धी ॥
 काह भाति कछ नहि थाय । तो दूणो व्रतकर चितलाय ॥ अर्थे बरते करिहे नरनार ॥ करै दान सुन हीये अबधार ॥ २० ॥
 गरभ कल्याणक कीदलजाण । पैदाका करिखाजा आण ॥ कौठे सबको घर अहलाद ॥ करैइसी वि ध धरपरमाद ॥ २१ ॥
 जनपकन्याणक दत्त विस्तरे । विद्याभिजोय रु विरहा करै ॥ पैदा फल घरवाटे नार ॥ चिंतमाहि अतिहितअवधार ॥ २२ ॥
 तपकन्याणक दत्तअवधार ॥ वाजर पापर सिचही धार ॥ जिनआगमही वखाणी ॥ नहीं ॥ युक्तिवाए मानसु विधिगही २३ ॥
 ज्ञान कल्याणक परगमाय । जेबे दानदे मन चितलाय ॥ पाठानंगाय वाटे तिया ॥ मनभे हरय सफल निजजिया ॥ २४ ॥
 करके कल्याणक निर्वाण । नास दानको करै बखान ॥ मोतीचूररुभगद कसार । लाटू कर वाटे रुच टार ॥ २५ ॥
 वीस चार घटकी मरयाद । दे अति मानहिजे अहलाद ॥ मनकी उकति उपविधणी । जिन शास्त्रनमाहे नहीं भणी ॥ २६ ॥
 याते पुनये परम सुज्ञान । जिन आगम भाष्यो परमान ॥ थोडो कीये अधिक फलदेय ॥ भाव सहित कर सुरपदलेय ॥ २७ ॥

॥ अहिस ॥

जिन जिनआगम कळो दान तिप दीत्रिये । निजमन युक्ति उपाय कचडु नहिं कीजिये ॥
 कनीभास नहि नोग सकतहि पाडये । जास वरावर धर्म तिनहि चितलाइये ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

धीजतनाहि निस सकविज्ञन, दानादिक विधमार । करि उपजावैपुन्य बहु यामे फेर न सार ॥ २८ ॥

पंकाभाणकर पारजे, पचर शांगण जाण । शीलमहित भोषये संकल, करखु भुभवि चिन आण ॥ २९ ॥

॥ परहया अन्द ॥

कथभाणतमार पचरकारं गरपजनम ना गाण । पंचम निमाणं चरनपरमाणं कश्चि यो मश पुराण ॥

तिनकी विधि आयी जिन जिन आची किए लहै सुर गेह । अनुक्तम शिवपति जे मन जावे ते सब जाणीएह ॥३०॥

॥ निर्वाण कल्याणकका बेला ॥ चौपाई ॥

जे जे तीर्थङ्कर निर्वाण । गए सासदिनकी तिथि ठाण ॥ तिह दिनको परिखो उपवास ॥ लगतो दूजो नासप्रकाश ॥३१॥
इह विधि बारहमास मभार । बेला करिये बीसरुवार ॥ बेला कल्याणक निर्वाण । वरत नाम लेखिये बुधभाण ॥३२॥

लघुकल्याणकको व्रत ॥ दोहा ॥

गरभ जनम तपज्ञान शिव, तीर्थकर चोबीस ॥ वरसमाहि तिथि सबनकी, करे एकसो बीस ॥ ३३ ॥

रिपभगरभ वदि दुतिय गर्भ छठिवासु पूज गन । आठे विमल सुग्यान दशमी नमि जनमरु तपभन ॥

वधमान छठि सुकल गरभ माता के आए । छदि साते जिन नेम करम इणि मोक्षसिधाए ।

आपाढ मास माहे दिवस, बरमाहेही जाणियो । बहकल्याणक सातमो, बह जिनवरको ठाणियो ॥ ३४ ॥

मुनि सुव्रत जिन देवगरभ वदि दियज वासर । कुंथुगरभ वदि दसे सुमति सितबीज गरभवर ॥

जेमनाथसित छठी जनम दिन तपफुनि धरियो । सातेपरशनाथ मोक्ष लहि भव दधि तरियो ॥

अयांसनाथ निरवानपद पृथं के दिनसरदही । सावण सुभास छठि दिन विपैकल कल्याणक है सहो ॥ ३५ ॥

वदि भादौजिन शांति गरभ सातेमाता उर । छदि छठि गरभ सुपास अष्टमी मोक्ष सुविधिपर ॥

नासपूज्य निर्वाण चतदसि भादौ जाणो । वदिदोयज आसोज गरभ नमि जिनवर मानो ॥

लहि मोक्ष नेमि एकै सकल, आठे शीतल शिवगण । दुहमास माहि दिन सात मै, कल्याणक सातह भए ॥ ३६ ॥

गरभ अतत जितेश प्रतिपदा कातिक करियो । संभव केवल चौथ त्रयोदसि पब जनम लियो ॥

तपफुनि तेरसि पन्नपोक्षानमति बुभ्रमावच । भुविधियांनसितबीज नेमि छठि मात गरभ वस ॥

अरनाथ चतुष्टय विधिइणव, केवल ग्यान उपानियो । दितसात कल्याणक आठ सद, काती माहि सुजांनियो ॥ ३६ ॥

सर्नयति तपं चेदिदं त्वे सुविधिं सिद्धं तंके तपगर्भं । पृथप दत्तं नय जनम दसम तप अरहनाथ भन ॥
 यद्विलज्जनं तपं ज्ञानं कल्याणकं चिहुं सितधारसं । नमितिसंगारसि ग्यानं जनम आनाथं रुचौदसं ॥
 जंभेवं जं कल्याणकं जनमं तप, दुहं पूरणवासीं धर्म् । दिनंसात कल्याणक एकदत्त मगसिंसाधीं वरणाए ॥ ३७ ॥
 पारशनाथ सुजनम अवर तप ग्यारसिकारीं । जनमं चन्द्रं भंतास दिवस दिक्षाहू धारी ॥
 चौदस शीतल ज्ञानं सति जूदि दशमीं वधि तसु । ग्यारस केवल अजत जिनेश्वर प्रगट भयो जस ॥
 प्रभु अभिचन्दन चोद्विदित्रस, लोका लोक प्रकासियो दिनपांच कल्याणक आठ जत, पौषमहीनो भासियो ॥ ३८ ॥

दोहा ।

फागण दिन तारति विप, कल्याणक जिनराय । पदरह किये त्रिजगत पति, तमै किसन सिरनाय ॥ ३९ ॥
 अष्टादिक धारण सोलह कारण वनदशजत एतनत्रय । शुभलक्षि विधानं अपय निधानं मेघ सुमालोपठरमय ॥
 ज्येष्ठदिक जिनवर रसपाण्यावर ज्ञानपवीसीअपवृद्धे । समवादिक सरण व्रत सुख करणे सुखपंचम आकासरु मे ॥ ४० ॥
 पंडेजीवातं वंभविंसात नाग त्यातं दसधियं । रामादुरवाचं देवनिवास धर्म प्रकाशं प्रकट कियं ॥
 साशरी कल्याणं सकभुणं जाणं गोत्र पाटणीं सुजसलियं । पूजां जिनरायं अत गुरुपायं नमै सकति जिनदान दियं ॥ ४१ ॥
 तसु मा दोरगुं गुरु सुख देवं लहू पाआणं दसिध नुणो । सुख देवं सुनंदन जिनपद बंदन ध्यानमान किसनेस मुणो ।
 क्रिस्तभिश्रहीनी कथा नवीनी निजहित चीनीं सुरपंदकीं । सुखादायं क्रिया भनि इह मनवचतन गुब्द पले दुरगतिरदकीं ॥ ४२ ॥

दोहा ।

मधुर राय वसंतको ज्ञाने सकल जहान । तस मंधानमंतकीनज्, किसन मिश मनमान ॥ ४३ ॥
 अद्वित्त ।
 नेत्रविपाही कर्ण उदे त्र आडयो । निजपुरतजि के सांगाने वसाडयो ॥
 तइ जिन धर्म प्रसाद गनेदिन ए सुखही । साधुमी जन सजन मान देहित गही ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

इहविचार मन आनियो, क्रिया कथन विधसार ॥ होय चौपई बंधतो, सबजन कुलपगार ॥ ४५ ॥
सबही जनबांची पंढी, सुणो सकल नर नार ॥ खलदाई मन आनिय, चली क्रिया अनुसार ॥ ४६ ॥

बंदचाले ॥

बयाकारण न कबहीं देख्यो । बन्दि न नजर अचलेख्यो ॥ लघदीरघ वरण न जःण । पदमात्राहन पिळाणू ॥ ४७ ॥
मतिहीच तहां अधिकार । पटुताकबहु नहि पाई ॥ मनमोहां बोहिकाई । जेपन क्रिया मुख दाई ॥ ४८ ॥
इह कथा स स्मृत केरी । भाषा रचिहीं शुभ बरी ॥ कळु अंबर यंत्र ते जानी । नानाविध क्रियाआनी ॥ ४९ ॥
धर क्रिया कांस तिस नाम । पूरण करिहो अभिगम ॥ जिम मूढ समुद्रअवगाह । निजभुजतउतरो चाहे ॥ ५० ॥
गिरिपरितरु को फल जानी । कुबजक मनि तोरण ठानी ॥ शाशु नीरकुण्डके माहीं । करत शशिविच गहाही ५१ ॥
तिम सज्जन मुक्कको भारी । हसिहै संसे नहिकारी । बुधजन मो निमा करीके । सरो कळु देप न लीज ॥ ५२ ॥
को अशुद्ध होय पद याही । शुधकरि पढियो भवि ताही ॥ अधिको नहि बहनां जोग । बुधजनकोयही नियोग ५३ ॥

॥ अहिल्ल ॥

किसनसिंह इहअरज करे सबजन सुनो । कर मिध्यात को नाश निजातम पदमुनो ॥ ५४ ॥
ह्यासहित त्रतपाल करण इस कीजिए ॥ अनुक्रम लहि शिवथान साश्वताजीजिए ॥ ५५ ॥

॥ सबिया इंकतीसो ३१ ॥

सबइसौ सम्बत चौरासी यासु भादों मास वर्षारित् स्वंत तिथि पूंयो रविवार है ॥ सतिबिस्वा रवि धृतनाम
जोग कृम्भ सति सिधको दिनेस मरुत आतसार है । दुदारा दसजन वसे सागानेर थान जसिहसवाई महाराज
नीति धार है ॥ जाके राजसमय परिपूरण की इह कथा भव्यन केहरदय हुलास देन हार है ॥ ५४-॥ हेसे चौवन

पंतीस इकतीसा मरहटा पचास पांचसे बीस ठानेहैं ॥ सातसे छायने सु चौपई ब्रवीम छपे पढ़ही पेंतीम तेरा सोरठा बखाने हैं ॥ अडिबल बहत्तर नाराच आठ गीता दस कुण्डलिया तीन बह तईसा प्रमान है ॥ द्रुत विलंबित चार आठ हे भुजगी तीन त्रोटक त्रिभंगी नव बन्द एते आने है ॥ ५५ ॥

॥ त्रैया तईसा २३ ॥

बन्द कटे इमग्रन्थ मभार लीएगनि जे अकृतच भराई ॥ दोयहजार मही लखि घाट चसीय एह प्रमान कराई ॥ जो न मिले तुक अन्तर मात तदा पुनरुक्त न दोपठराही ॥ तो मभक्तो लखि दीन प्रवीन इसो एतिसे तमपाय पराही ॥ ग्रन्थभिले इहलेखक को इकहै मरयादसिलोकफिकती है ॥ बन्दनिके सब अन्तर जोरिगुरुध्वनिष्टक ज राई तिडी है ॥ ते सन वखं वतीस प्रमाण श्लोकनि की गणती जुइती है ॥ दं यहजार परी नवस लखिले ॥ जिके भनि पुद्धयतीहै ५७

• ॥ छप्पयबन्द ॥

मंगल श्री अरिहंत सिद्धमंगल सिवदायक ॥ आचारज अवभाय सायु गुरु मंगल ज्ञायक ॥

मंगल जिनमूल खिरी दिव्य धुनिमयजिनवाणी ॥ मङ्गल आवकनित्य समक्री मङ्गलजान ॥

मंगल नु ग्रन्थ इहजानिगे, वकतामूलमंगलसदा ॥ श्रोतजुसुनो निज गुणगुणे मंगलकर तिनकोसदा ॥ ५८ ॥
॥ दोहा ॥

रिसनसिद्ध कवि कीनती जिनश्रुत गुरुसो एह ॥ मंगल निज तन सपदलख मुक्कहि मोक्षपददंष्ट ॥ ५९ ॥

॥ चौपाई ॥

मनलीं भतं जिनश्रर सार ॥ जग मरिहि वरते सुखकार ॥ तबलौं निस्तारां यह ग्रन्थ ॥ भविजनशरशिवदायक पंथ ६०

इतिश्री कृपाकांग भाग मूल अपनकयाने भादि दे श्री म. भांकी साखक। मूल कथन उपब्रतम्पूखम् ॥

Printed at the "Jambhaji Printing Press" Deewar

हमारे छापे खाने से सर्वजगहके छपे जैनग्रंथ मिलसक्ते हैं खासहमारे छपे जैनग्रंथ पांच के मल्यमें छः मिलेंगे श्री पद्मपुराण महानग्रन्थ ६) श्री पार्थपुराण महानग्रंथ १) श्री पाण्डवपुराण ग्रन्थ २॥॥) तेरहवीं पूजन पाठ वि० २॥॥) श्री आराधनासार कथाकोप १२६ कथाओं का संग्रह ३॥॥) यशोधरचरित्र भा० टी० २) क्रियाकौष कृष्णसिंहकृत १) भाषापूजनसंग्रह भादापाठ ॥) सप्तऋषी पू०) ॥ शत्रुञ्जयगिरि पू० गुटका =) ॥ गिरनारऔरपावागिरि पू० -) नित्यनियमपूजनसं० =) शीलकथाभारामल कृत ॥ दर्शनकथाभारामल कृत ॥) सेठसुदर्शन कथा ॥॥

होली की कथा -) राजा श्रेयस्क रानीचलनाचरित्र २) चारदान कथा बड़ी ३) क. कण्डस्वामी की कथा २) निश भोजन कथा बड़ी -) निशभोजनकथा छोटी ॥ चण्डिसपरिपह संग्रह बड़ी २) प्रभु विलास नईरगतसं भजन २) ज्योतीप्रसाद भजनमाला -) उपदेश पचीसी पुकार पचीसी ॥ १॥ सङ्कटहरण दुःखहरण वीनती) न्यामतसिंहभजनमाला -) पद्मनाराय भजनमाला -) लावनी कर्ता खण्डन ॥ चौबीसीअखाड़ा लावनी संग्रह -) बारहखड़ी सूत लावनी ॥ नन्देलाल भजन संग्रह ॥ वालरुभजन संग्रह उत्तमपुस्तक -) दर्शनपाठ उत्तम पुस्तक -) शिखर माहात्म्यसार ॥ नयाकार मन्त्र बेल वृद्धार -) पत्रमङ्गल रूपचन्दनी कुन ॥॥ मांसपक्ष्यनिषेध ॥ ४० के दाम १) नागरीप्रकाश ॥ १००के दाम १) छठालादोलनरामस्तति सहित २) प्रलपरमेष्टी वन्दना ॥) जैनसंस्कार पदती ३३ क्रिया भाषा विवाहपद्धतीसहित १-१) भूय जैनग्रन्थक २) बारहखण्डना संग्रह बड़ी ॥॥) प्रातस्मरण मङ्गलपाठ भाषा ॥ समाधिमरणपाठ बड़ा भाषा -) भक्तार पाठ भाषा -) विद्यापदार भाषा ॥॥) जोगीरसा बैराव भावना ॥ आलोचनापाठ भाषा ॥) नवीनकाण्ड भाषा ॥ बारहमाला सीतासती -) बारह राजल ॥ बारह वक्रवदन चक्री ॥ बारह अभिनाथ ॥ रूपण पनीनी ॥ दुर्दानिषेध ॥ सामायकपाठ ॥

पता-लाला जैनीलाल जैन मालिक जैनग्रंथप्रचारक कार्यालय व जैनीलाल प्रिंटिंगप्रेस देवबन्द

